You Tube kanwhizztimes
@kanwhizztimes lucknow
@kanwhizztimes
www.kanwhizztimes.com

कैनविज टाइम्स

सिर्फ सच

❐ वर्ष-11 ❐ अंक-276 ❐ रविवार, 20 नवम्बर 2022 ❐ नगर संस्करण ❐ लखनऊ से प्रकाशित ❐ मूल्य- ₹ 3.00 ❐ पृष्ठ-12

अब समय आ गया है, सरकार को लव जिहाद के खिलाफ सख्त कदम उठाने चाहिए। उन्होंने हिंदू लड़कियों को पूर्वाभ्यास कराते हुए कहा जिसके खून में ही दगा है, वह किसी का नहीं हो सकता लेकिन जो मां-बाप का नहीं हो सकता, वह भी किसी का नहीं हो सकता।

साक्षी महाराज

आलोचकों को करारा जवाब है 'डोनी पोलो' हवाई अड्डे का उद्घाटन : मोदी 11

भारत फिर से विश्व गुरु बनने की राह पर अग्रसरः उपराष्ट्रपति 11

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने किया काशी तमिल संगमम का उद्घाटन

हमें हजारों वर्षों की विरासत को करना है मजबूत : मोदी

एजेंसी

वाराणसी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शनिवार को काशी तमिल संगमम का विधिवत उद्घाटन किया। इस दौरान उन्होंने तमिल भाषा में रचित ग्रंथ तिरुक्कुरल का कई अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवादित पुस्तकों का विमोचन और तमिलनाडु से काशी आये छात्र-छात्राओं से संवाद किया। प्रधानमंत्री ने तमिलनाडु के विभिन्न धर्मस्थलों व मठों के आधिनम (धर्मगुरुओं) को सम्मानित किया। उनके साथ उत्तर प्रदेश की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान भी मौजूद रहे। अपने संबोधन में प्रधानमंत्री ने हर हर महादेव, वणक्कम काशी, वणक्कम तमिलनाडु कहकर सभी अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि हमारे देश में संगमों की बड़ी महिमा है। नदियों-धाराओं के संगम से लेकर विचारों और विचाधाराओं, ज्ञान-विज्ञान और समाज एवं संस्कृतियों के हर संगम को हमने सेलिब्रेट किया है। ये सेलीब्रेशन वास्तव में भारत की विविधताओं और विशेषताओं का सेलीबेशन है। आज हमारे सामने एक ओर पूरे भारत को अपने आप में समेटे हुए हमारी सांस्कृतिक राजधानी काशी है तो दूसरी ओर भारत की प्राचीनता और गौरव का केंद्र हमारा तमिलनाडु और तमिल संस्कृति है। ये संगम भी गंगा यमुना की तरह ही पवित्र है। ये गंगा यमुना जैसी अनंत संभावनाओं और सामर्थ्य को अपने में समेटे हुए है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि हमारे यहां ऋषियों ने कहा है एकोहं बहुस्याम, यानी एक ही चेतना ● शेष पेज 11 पर

उपलब्धि

- ❐ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने महीनेभर चलने वाले काशी तमिल संगमम का किया उद्घाटन
- ❐ तमिल दिलों में काशी के लिए अविनाशी प्रेम न अतीत में कभी मिटा न भविष्य में कभी मिटेगा
- ❐ तमिल ग्रंथ तिरुक्कुरल का अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवादित पुस्तकों का किया लोकार्पण
- ❐ मेरी काशी आपके सत्कार में कोई कमी नहीं छोड़ेगी
- ❐ दक्षिण के विद्वानों के भारतीय दर्शन को समझे बिना हम भारत को नहीं जान सकते
- ❐ काशी तमिल संगमम राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने के लिए ऊर्जा देगा
- ❐ तमिल विरासत को बचाना 130 करोड़ देशवासियों की जिम्मेदारी

एक भारत श्रेष्ठ भारत की परिकल्पना को जीवंत करता है काशी तमिल संगमम योगी

वाराणसी। देश की सांस्कृतिक राजधानी के तौर पर विख्यात वाराणसी में काशी तमिल संगमम के आयोजन से अभिभूत उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि देश की प्राचीनतम संस्कृतियों के मिलन का यह आयोजन एक भारत श्रेष्ठ भारत की परिकल्पना को जीवंत कर रहा है। बीएचयू के एम्फीथियेटर ग्राउंड में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की मौजूदगी में काशी तमिल संगमम को संबोधित करते हुये श्री योगी ने कहा कि आज दक्षिण का उत्तर से अद्भुत संगम हो रहा है। सहस्त्राब्दियों पुराना संबंध फिर से नव जीवन प्राप्त कर रहा है। यह आयोजन आजादी के अमृत काल में प्रधानमंत्री के एक भारत श्रेष्ठ भारत की परिकल्पना को जीवंत कर रहा है। काशी और तमिलनाडु में भारतीय संस्कृति के सभी तत्व समान रूप से संरक्षित हैं। मुख्यमंत्री ने तमिल में अपना उद्बोधन शुरू करते हुए श्उनगलाई काशीइल वारावेरी किरोम काशी में आपका स्वागत है। कहकर सभी अतिथियों का स्वागत किया। उन्होने कहा कि भगवान श्रीराम द्वारा श्रीरामेश्वरम में स्थापित पवित्र ● शेष पेज 11 पर

बैग के साथ सीसीटीवी फुटेज में दिखा आफताब, एक रात में लगाए थे तीन चक्कर

एजेंसी

नई दिल्ली। श्रद्धा वालकर हत्याकांड में आरोपित आफताब का एक सनसनीखेज वीडियो सामने आया है। सीसीटीवी कैद हुआ आफताब एक बैग लेकर कहीं जा रहा है। आरोपित नीले बैग को बगल में दबाए हुए है। पुलिस वीडियो की सत्यता की जांच कर रही है। यह वीडियो 18 अक्टूबर का है। पुलिस सूत्रों ने बताया कि उस रात आफताब न बैग के साथ बाहर के तीन चक्कर लगाए। पुलिस का मानना है कि आफताब ने श्रद्धा की हत्या के पांच महीने बाद उसके शरीर के टुकड़ों को ठिकाने लगाने के लिए बैग लेकर बाहर गया था। आरोपित ने दिल्ली और उसके आसपास के ठिकानों पर शव के टुकड़ों को ठिकाने लगाने से पहले फ्रिज खरीद लिया था। जिसमें शव के टुकड़ों को रखा और फिर उन्हें बारी-बारी से बैग में रखकर फ़ेक आता था। हालांकि पुलिस वीडियो की सत्यता की जांच कर रही है। पुलिस ने

❐ सीसीटीवी कैद हुआ आफताब एक बैग लेकर कहीं जा रहा है

बताया कि 18 अक्टूबर को आफताब ने शव का सिर, धड़ और हाथ को ठिकाने लगाया था। दिल्ली पुलिस की टीमें सबूतों की तलाश में महरौली के जंगल के चक्कर लगा रही हैं। आधिकारिक सूत्रों के मुताबिक, दिल्ली पुलिस की एक टीम दिल्ली के छतरपुर इलाके में आफताब के फ्लैट पर पहुंची और श्रद्धा हत्याकांड की जांच के तहत आरोपी और मृतक दोनों के कपड़े जब्त किए। इनमें ज्यादातर कपड़े आफताब के हैं, जिन्हें फॉरेंसिक जांच के लिए भेजा जाएगा। हालांकि पुलिस श्रद्धा और आफताब के वो कपड़े नहीं बरामद कर पाई है, जिस दिन दोनों ने हत्याकांड के दिन पहने थे। दिल्ली पुलिस की एक टीम महाराष्ट्र के पालघर पहुंची है, जहां श्रद्धा के दो दोस्तों राहुल रॉय और गोदविन के बयान दर्ज किए। पुलिस की टीम आफताब के परिवार से भी संपर्क करने की कोशिश कर रही है। लेकिन परिवार का कोई भी सदस्य नहीं मिल पा रहा है। श्रद्धा वालकर महाराष्ट्र के पालघर के रहने वाली थी, जो दिल्ली के महरौली इलाके में अपने पार्टनर आफताब आमीन पूनावाल के साथ लिव-इन में रह रही थी। आरोपित ने 18 जुलाई को श्रद्धा की हत्या कर उसके शव के 35 टुकड़े कर दिए थे। करीब छह महीने बाद आरोपित को गिरफ्तार किया गया। पूछताछ में उसने अपने लिव-इन-पार्टनर की हत्या की बात ● शेष पेज 11 पर

भारत जोड़ो यात्रा में जुट रही भीड़ वोट में परिवर्तित नहीं होगी: आठवले

एजेंसी

मुंबई। केंद्रीय राज्यमंत्री रामदास आठवले ने कहा कि कांग्रेस नेता राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा में जमा हो रही भीड़ वोट में परिवर्तित नहीं होगी। राहुल गांधी को भारत जोड़ो की बजाय कांग्रेस जोड़ो मुहिम शुरू करनी चाहिए। रामदास आठवले ने शनिवार को पुणे के पिंपरी में पत्रकारों से बातचीत में कहा कि राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा में भीड़ सिर्फ

उन्हें (राहुल गांधी) देखने के लिए उमड़ रही है। इसका कोई भी लाभ कांग्रेस पार्टी को नहीं होने वाला है। आठवले ने कहा कि इस समय ● शेष पेज 11 पर

जम्मू-कश्मीर पुलिस की पत्रकारों को धमकाने वालों की तलाश में 10 स्थानों पर दबिश

श्रीनगर। आतंकी संगठन द रेजिस्टेंस फ्रंट (टीआरएफ) के 12 नवंबर को कश्मीर घाटी के पत्रकारों को धमकी भरे पत्र भेजने के मामले में जम्मू-कश्मीर पुलिस ने शनिवार को 10 स्थानों पर दबिश दी है। पुलिस के एक अधिकारी ने बताया कि घाटी के श्रीनगर, अनंतनाग और कुलगाम जिलों में तलाशी अभियान चल रहा है। जम्मू-कश्मीर पुलिस ने इस मामले में टीआरएफ से जुड़े आतंकियों और इसके संचालकों के खिलाफ मामला दर्ज किया है। टीआरएफ ने घाटी के कुछ मीडिया घरानों ● शेष पेज 11 पर

संक्षेप

सोनिया गांधी और खड़गे ने इंदिरा गांधी को किया याद

नई दिल्ली। कांग्रेस की वरिष्ठ नेता सोनिया गांधी और पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी को उनकी जयंती पर शनिवार को याद किया। दोनों ने शक्ति स्थल पर पहुंचकर इंदिरा गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित की। खड़गे ने कहा कि आजीवन संघर्ष, साहस व कुशल नेतृत्व की मिसाल, भारत की ''लौह महिला'', इंदिरा गांधी की जयंती पर वह उन्हें नमन करते हैं। भारत की एकता व अखंडता को संजोए रखने के लिए इंदिरा गांधी ने अपना जीवन बलिदान कर दिया। राष्ट्र को समर्पित उनकी राजनीतिक दृढ़ता को भारतवासी हर पल याद करते हैं। राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत भी शक्ति स्थल पहुंचकर इंदिरा गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित की। कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने भी भारत जोड़ो यात्रा के दौरान पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित की।

पूर्व सीजेआई यूयू ललित एनयूजेएस कोलकाता में विजिटिंग प्रोफ़ेसर होंगे

कोलकाता। कोलकाता के प्रसिद्ध लॉ संस्थान नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ ज्यूरिडिकल साइंसेज (एनयूजेएस) में भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश यूयू ललित विजिटिंग प्रोफ़ेसर होंगे। संस्थान ने इसके लिए उनके पास अनुरोध पत्र भेजा था, जिसे उन्होंने स्वीकार कर लिया है। भारत के 49वें मुख्य न्यायाधीश के रूप में पद छोड़ने के कुछ दिनों बाद उनकी यह स्वीकारोक्ति सुर्खियां बन गई हैं। पूर्व सीजेआई ललित के करीबी सूत्रों ने बताया कि उन्होंने हाल ही में एक साक्षात्कार में सेवानिवृत्ति के बाद कानूनी शिक्षण में रुचि व्यक्त की थी। इसके बाद ही संस्थान ने उन्हें विजिटिंग प्रोफ़ेसर के तौर पर संस्थान में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया था। उल्लेखनीय है कि जून 1983 में अपना कानूनी करियर शुरू करने वाले न्यायमूर्ति ललित को 13 अगस्त, 2014 को भारत के सर्वोच्च न्यायालय में नियुक्त किया गया था। वह 27 अगस्त, 2022 से आठ नवंबर, 2018 तक भारत के मुख्य न्यायाधीश रहे।

सांसदों ने पूर्व प्रधानमंत्री स्व. इंदिरा गाँधी को पुष्पांजलि अर्पित की

नई दिल्ली। लोक सभा अध्यक्ष ओम बिरला ने शनिवार को पूर्व प्रधानमंत्री स्व. इंदिरा गाँधी की जयंती के अवसर पर संसद भवन के केन्द्रीय कक्ष में उनके चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की।

सावरकर के पत्र असली, लेकिन उन्हें माफीनामा नहीं कहा जा सकता

एजेंसी

मुंबई। स्वतंत्रता सेनानी वीर सावरकर के दूसरे पोते सात्यकी सावरकर ने शनिवार को कहा कि कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने जो पत्र दिखाए हैं, वह असली हैं लेकिन उन्हें माफीनामा नहीं कहा जा सकता। राहुल जो कहते हैं कि वीर सावरकर ने अंग्रेजों से पेंशन ली थी, यह पूरी तरह गलत है। उन्होंने कहा कि वीर सावरकर अंग्रेजों के कोई कर्मचारी नहीं थे कि सेवा से रिटायर होने के बाद उनको पेंशन मिलेगी। मूल समस्या यह है कि राहुल गांधी पेंशन और निर्वाह भत्ता में अंतर ही नहीं समझ सके। मीडियाकर्मियों से रूबरू सात्यकी सावरकर ने राहुल गांधी की ओर से वीर सावरकर पर लगाए गए आरोपों का तथ्यात्मक जवाब दिया। उन्होंने कहा कि जो पत्र राहुल गांधी ने मीडिया को दिखाएं हैं, वे सही हैं और वे सभी आवेदन पत्र हैं। जब वीर सावरकर अंडमान गए तब उन्हें कोई सुविधा नहीं दी गई थी। उन्हें एक कोठरी में बंद कर दिया गया था। वीर सावरकर ने उस समय अंग्रेज

❐ कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने जो पत्र दिखाए हैं, वह असली हैं

सरकार को आवेदन दिया कि उन्हें एक राजनीतिक कैदी के समान सुविधाएं मिलनी चाहिए। उन्होंने समय-समय पर आवेदन किया। बाद में उन्होंने रिहाई के लिए आवेदन किया। वीर सावरकर ने यह सब सभी कैदियों के लिए किया था, चाहे वो गदर आंदोलन के हों या बंगाल आंदोलन से। वीर सावरकर को अंग्रेजों से पेंशन मिलने के राहुल गांधी के आरोप पर सात्यकी सावरकर ने कहा कि राहुल गांधी को पता होना चाहिए कि वीर सावरकर अंग्रेजों के ● शेष पेज 11 पर

जम्मू-कश्मीरः कलाल सेक्टर में घुसपैठ की कोशिश नाकाम एक आतंकी ढेर

राजौरी। राजौरी जिले के नौशहरा की नियंत्रण रेखा के साथ सटे कलाल सेक्टर में सेना ने घुसपैठ की कोशिश नाकाम करते हुए एक आतंकी को मार गिराया है। नियंत्रण रेखा के साथ सटे इलाकों में सेना का तलाशी अभियान जारी है। जानकारी के अनुसार शुक्रवार देर रात कलाल सेक्टर में पाकिस्तानी सीमा की ओर से आतंकियों का एक समूह भारतीय सीमा में घुसपैठ की फिराक में था। इस दौरान भारतीय सीमा पर तैनात सेना के जवानों ने जब अंधेरे में हलचल देखी तो वे सतर्क हो गए। आतंकियों ने जैसे ही भारतीय सीमा में प्रवेश करने की कोशिश की तो सेना के जवानों ने आतंकियों को आत्मसमर्पण करने की चेतावनी दी। आतंकियों ने सेना के जवानों की चेतावनी अनसुनी कर पाकिस्तान सीमा की ओर वापस भागने का प्रयास किया। इसी बीच अचानक एक बम धमाका हुआ और एक आतंकी जमीन पर गिर गया जबकि अन्य आतंकी इधर-उधर भाग गए। सेना ने इसके बाद से नियंत्रण रेखा के आसपास तलाशी अभियान शुरू कर ● शेष पेज 11 पर

ज्ञानवापी परिसर से बैरिकेडिंग हटाने की मांग याचिका पर अब दो दिसंबर को होगी सुनवाई

एजेंसी

वाराणसी। सिविल जज सीनियर डिवीजन फास्ट ट्रैक कोर्ट महेंद्र कुमार पांडेय की अदालत में शनिवार को ज्ञानवापी से जुड़े एक और वाद में सुनवाई हुई। इस मामले में पक्षकार बनाए गए अंजुमन इंतजामिया और काशी विश्वनाथ बोर्ड जरिये वकालतनामा कोर्ट में हाजिर हुए। यूपी स्टेट और भारत सरकार, डीएम, पुलिस आयुक्त की तरफ से किसी के हाजिर नहीं होने पर अदालत की ऑफिस से आख्या मांगी गई है। साथ ही कोर्ट ने अगली सुनवाई के लिए दो दिसंबर की तिथि तय की। यह वाद ज्योतिर्लिंग आदि विश्वेश्वर विराजमान की तरफ से बड़ी पियरी निवासी अधिवक्ता अनुष्का तिवारी व इंदु तिवारी ने दाखिल की है। इसमें ज्ञानवापी स्थित आराजी पर भगवान का मालिकाना हक घोषित करने, केंद्र व राज्य सरकार से भव्य मंदिर निर्माण में सहयोग और ज्ञानवापी की बैरिकेडिंग हटाने की मांग की गई है। अधिवक्ता शिवपूजन सिंह गौतम, शरद

श्रीवास्तव व हिमांशु तिवारी के जरिये बीते 13 अक्तूबर को दाखिल वाद में डीएम, पुलिस आयुक्त, केंद्र व यूपी के सचिव, अंजुमन इंतजामिया मसाजिद कमेटी और काशी विश्वनाथ मंदिर बोर्ड को पक्षकार बनाया गया है। पिछली तिथि पर कोर्ट ने सभी पक्षकारों को हाजिर होने का आदेश दिया था। ज्ञानवापी प्रकरण में दिल्ली निवासी पर्यावरण विद प्रभुनारायण की तरफ से दाखिल वाद पर भी शनिवार को सुनवाई टल गई। सिविल जज सीनियर डिवीजन फास्ट ट्रैक कोर्ट महेंद्र कुमार पांडेय की अदालत में अब इस मामले में दो दिसंबर को सुनवाई होगी। अधिवक्ता मानबहादुर सिंह और अनुपम द्विवेदी ने दाखिल वाद में कहा है कि ज्ञानवापी में दृश्य व अदृश्य देवताओं के राग, भोग, दर्शन-पूजन के साथ गैर हिंदुओं का प्रवेश वर्जित करने और सांस्कृतिक विरासत को पुनर्स्थापित करने की मांग की गई है। साथ ही आस्था के साथ वैज्ञानिक पद्धति के आधार पर अनुतोष दिए जाने का अनुरोध किया गया है। प्रकरण में अंजुमन की तरफ से 30 दिन का समय मांगा गया लेकिन अदालत ने दो दिसंबर की तिथि नियत कर दी।

अमित शाह ने कहा कि आतंकवाद आज एक ऐसा विकराल रूप धारण किया है जिसका प्रभाव हर स्तर पर दिखता है

आतंकवाद के खिलाफ सभी देशों को कंधे से कंधा मिलाकर चलना होगा : शाह

एजेंसी

नई दिल्ली। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने शनिवार को कहा कि आतंकवाद (टेररिज्म) आज एक ऐसा विकराल रूप धारण किया है जिसका प्रभाव हर स्तर पर दिखता है। उन्होंने कहा आतंकवाद लोकतंत्र, मानवाधिकार, आर्थिक प्रगति तथा विश्व शांति के खिलाफ सबसे बड़ा नासूर है, जिसे हमें जीतने नहीं देना है।ङ्क शाह ने आतंकवाद के खिलाफ सभी देशों को एकजुट होने का आह्वान करते हुए कहा कि कोई भी एक देश या कोई भी एक संगठन, चाहे वह कितना भी शक्तिशाली क्यों न हो, आतंकवाद को अकेला हरा नहीं सकता। अंतरराष्ट्रीय समुदाय को लगातार इस जटिल और बॉर्डर-लेस खतरे के खिलाफ कंधे से कंधा मिलाकर चलना

❐ आतंकवाद लोकतंत्र, मानवाधिकार, आर्थिक प्रगति तथा विश्व शांति के खिलाफ सबसे बड़ा नासूर है

होगा। शाह यहां आतंकवाद के वित्तपोषण का मुक़ाबला विषय पर तीसरे 'नो मनी फॉर टेरर' मंत्रीस्तरीय सम्मेलन के 'आतंकवाद और आतंकवादियों को वित्त उपलब्ध कराने की वैश्विक प्रवृत्ति' विषय पर आयोजित दो दिवसीय सम्मेलन के समापन सत्र को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि पिछले कुछ दशकों में भारत ने टेररिज्म के सभी रूपों सहित कई चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना किया है। टेररिज्म के खिलाफ 'जीरो टॉलरेंस' की नीति, काउंटर-टेरर कानूनों के मजबूत फ्रेमवर्क तथा एजेंसियों के सशक्तिकरण के कारण भारत में टेररिज्म से होने वाली घटनाओं में उल्लेखनीय कमी आई है तथा टेररिज्म के मामलों में सख्त सजा दिलाने में सफलता हासिल की गई है। शाह ने कहा कि इन्वेस्टीगेशन को विज्ञान और तकनिक से लैस करने के उद्देश्य से फॉरेंसिक साइंस को बढ़ावा दिया जा रहा है। इस दिशा में प्रधानमंत्री मोदी जी की परिकल्पना से दुनिया के पहले राष्ट्रीय फोरेंसिक विज्ञान विश्वविद्यालय की स्थापना की गई है।

केंद्रीय गृहमंत्री ने कहा कि भारत सरकार ने यह भी तय किया है कि टेररिज्म, नारकोटिक्स और आर्थिक अपराध जैसे अपराधों पर राष्ट्री य और अंतर्राष्ट्रीय डेटाबेस विकसित किया जाए। साइबर अपराध का व्यापक तरीके से मुकाबला करने के लिए भारत सरकार ने भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र की स्थापना की है। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के संकल्प को दोहराते हुए कहा कि भारत काउंटर-टेररिज्म) तथा कॉम्बैटिंग दी फाइनेंसिंग ऑफ़ टेररिज्म (के लिए अंतरराष्ट्रीय सहयोग का केंद्र बिंदु होगा। हम टेररिज्म के सभी रूपों के खिलाफ एक प्रभावी, दीर्घकालिक और ठोस लड़ाई के बिना भय-मुक्त समाज, भय-मुक्त दुनिया नहीं सोच ● शेष पेज 11 पर

सत्येंद्र जैन की बीमारी का मजाक बनाकर घटिया राजनीति कर रही है भाजपा: सिसोदिया

एजेंसी

नई दिल्ली। तिहाड़ जेल में बंद दिल्ली सरकार के मंत्री सत्येंद्र जैन की मसाज का वीडियो वायरल होने के बाद उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने शनिवार को कहा कि भाजपा घटिया राजनीति पर उतर आई है। किसी की बीमारी का मजाक बना रही है। सिसोदिया ने कहा कि भाजपा के इस तरह से मनोहर कहानियां बनाने से सत्येंद्र जैन को मंत्री पद से नहीं हटाने वाले हैं। उन्होंने कहा कि देश में कोई भी बीमार हो सकता है। देश के प्रधानमंत्री भी बीमार हो सकते हैं। इस तरह की घटिया हरकत करना, इलाज के वीडियो जारी करने की घटिया हरकत भाजपा ही कर सकती है। प्रधानमंत्री से लेकर जेल में बंद कोई भी व्यक्ति बीमार हो सकता है। सत्येंद्र जैन छह महीने से जेल में बंद हैं। सत्येंद्र जैन जेल में बंद हैं, उन्हें गिरने से चोट लगी है। उनकी रीढ़ की हड्डी एल-5 एस-1 डिस्क में चोट है। यह रिकॉर्ड में है कि उनकी रीढ़ की हड्डी में चोट है। उनकी नर्व पिंच हो गई है। अस्पताल में दो सर्जरी भी हुई है। नर्व ब्लॉक डाले गए हैं। साथ में डॉक्टर ने

फिजियोथेरेपी के लिए कहा है। रेग्यूलर फिजियोथेरेपी की जरूरत है।

सिसोदिया ने कहा कि किसी आदमी को चोट लगी है, डॉक्टर इलाज करते हैं, तो रेग्यूलर फिजियोथेरेपी करते हैं, तो उसका मजाक बनाने में भाजपा को शर्म नहीं आती है। एक तो जेल में डाल रखा है। इलाज के वीडियो जारी कर मजाक बना रहे हो। मनीष सिसोदिया ने कहा, ''इससे बुरी सोच नहीं हो सकती। भाजपा गुजरात में और दिल्ली नगर निगम चुनाव में बुरी तरह हार रही है। इसलिए इस तरह की घटियापन पर उतर आई है। यह कोई और नहीं कर सकता। सारी ताकत और सारे पदों का दुरुपयोग कर जेल में डालते हैं। ये कोई लग्जरी है क्या? किसी भी ● शेष पेज 11 पर

संस्कारित व अनुशासित छात्र ही समाज में अच्छे वातावरण का करते हैं निर्माण: मंत्री गुलाब देवी

कैनविज टाइम्स संवाददाता

कानपुर। शिक्षा का उद्देश्य आंतरिक क्षमताओं का विकास कर छात्र का सर्वांगींण विकास करना है। संस्कारित और अनुशासित छात्र ही समाज में अच्छे वातावरण का निर्माण करते हैं। उक्त बातें शनिवार को बी.एन.एस.डी. शिक्षा निकेतन इण्टर कालेज बेनाझाबर के वार्षिक समारोह को सम्बोधित करते हुए राज्य शिक्षामंत्री माध्यमिक शिक्षा गुलाब देवी ने कही।

उन्होंने कहा कि वास्तविक जीवन जिए और दिखावट में बनावट बहुत अधिक दिनों तक नहीं टिकती। छात्र सदैव जीवन के चुनौतियों से न भागे और संकल्प के साथ कार्य करें। आप अपने अन्तःकरण के निर्णय को कभी दरकिनार न करें। कर्म का सम्बन्ध सदैव रोजगार से जुड़ा है। उन्होंने कहा कि श्रद्धेय बैरिस्टर नरेन्द्रजीत सिंह के जीवन को पढ़ने से यह पता चला है कि वह कभी समाज में छोटा या बड़ा नहीं मानते थे। वह सदैव अमीर व गरीब को सदैव एक दूसरे का सहयोगी माना, उनका मानना था कि मानव का धर्म है कि आर्थिक एवं बौधिक रूप से कमजोर व्यक्ति का सदैव सहयोग करके आगे बढ़ाया जाये। धर्म यह नहीं सिखाता की एक दूसरे में कोई भेदभाव करें। उन्होंने आगे कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के बेटी बचाओ और बेटी पढ़ाओ अभियान का सफलता परिदृश्य इस विद्यालय में छोटी-छोटी बेटियों द्वारा प्रस्तुत कार्यक्रम को देखने के बाद दिखाई दिया। इस मौके पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विद्यालय के अध्यक्ष एवं उप्र बार काउन्सिल के पूर्व चेयरमैन रमाकान्त मिश्र ने कहा कि श्रद्धेय बैरिस्टर साहब बखूबी जानते थे कि राष्ट्र को मजबूत करने के लिए शिक्षा ही एकमात्र आधा है। बैरिस्टर नरेन्द्रजीत सिंह मानव धर्म, शिक्षा, न्याय, समाज व राष्ट्र निर्माण के प्रति सदैव समर्पित रहे। कार्यक्रम को विद्यालय के प्रबन्धक आदित्य शंकर बाजपेयी, सह प्रबन्धक श्याम अरोड़ा समेत अन्य प्रमुख लोगों ने सम्बोधित किया। मंजूबाला श्रीवास्तव ने परिचय कराया। बहन आकृति त्रिपाठी ने गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन बालिका अद्विका व दिव्यांशी ने किया। सांस्कृतिक कार्यक्रम का शुभारभ गणेश एवं सरस्वती बंदना से हुआ। नन्हें-मुन्ने बच्चों ने मनमोहक बालनृत्य प्रस्तुत किया। इस मौके पर 28 प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।

मनुष्यता की पहचान ही कौमी एकता का मुख्य आधार : योगानन्द गिरी

मीरजापुर। शासन के निर्देश एवं जिलाधिकारी दिव्या मित्तल के मार्ग निर्देशन में 19 से 25 नवम्बर तक जनपद में हर्षोल्लास के साथ कौमी एकता सप्ताह मनाया जा रहा है। प्रथम दिन शनिवार को जुबली इंटर कालेज के अभ्युदय कोचिंग सभागार में जिला राष्ट्रीय अखण्डता दिवस विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी में विभिन्न समुदायों के गणमान्य वक्ताओं ने राष्ट्र की अखण्डता को अक्षुण्ण रखने पर प्रकाश डाला। मुख्य अतिथि योगानन्द गिरी ने कहा कि सभी धर्म समुदाय से ऊपर उठकर मनुष्यता की पहचान ही कौमी एकता एवं राष्ट्र की अखण्डता का मुख्य आधार है। उन्होंने कहा कि हमारा देश भारत विविधता वाला एक अनूठा देश है। लोगों के अन्दर प्रेम, एकता, शान्ति व भाईचारे को बढ़ावा देना अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि सभी स्थितियां केवल विचार धाराओं से ग्रसित है परन्तु भारत की अखण्डता को बनाये रखने के लिए बड़े-बड़े महारथी गुरू गोविन्द सिंह, मोहम्मद साहब, शंकराचार्य, स्वामी विवेकानन्द आदि ने पूरे विश्व का भ्रमण कर राष्ट्र की अखण्डता को बनाए रखने का संदेश दिया है। साहित्यकार बृजदेव पांडेय ने पूर्व प्रधानमंत्री स्व. इंदिरा गांधी के राष्ट्र के प्रति दिए गए बलिदानों की चर्चा करते हुए कहा कि उन्हीं के जन्मदिवस पर कौमी एकता सप्ताह मनाया जाता है।

डीएपी की किल्लत से किसान परेशान: रालोद

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। राष्ट्रीय लोकदल के प्रदेश अध्यक्ष रामाशीष राय प्रदेश के किसानों के दर्द को साझा करते हुए कहा कि आज प्रदेश के कोने कोने में डी ए पी खाद की किल्लत और कालाबाजारी से किसान परेशान हैं और खाद की तलाश में भटक रहे हैं। फसलों की आवश्यकता के समय खाद की अव्यवस्था के प्रति प्रदेश सरकार और प्रशासनिक मशीनरी सीधे तौर पर उत्तरदायी है क्योंकि उसने प्रदेशीय कोटे की खाद की व्यवस्था केन्द्र सरकार के साथ तालमेल करके क्यों नहीं की। उन्होंने कहा कि केन्द्र और प्रदेश सरकार केवल किसानों के लिए घड़ियाली आंसू दिखाकर वोट लेना ही अपना उद्देश्य मानती है। किसानों की समस्याओं से सरकार का कोई लेना देना नहीं है।

श्री राय ने कहा कि सरकार ने पहले ही खाद की बोरी में 5 किलो खाद कम कर दिया है और कीमत बढ़ा रखी है। अव्यवस्था एवं कालाबाजारी ने किसानों के दर्द को बढ़ा दिया है क्योंकि अभी खरीफ की फसल में सम्पूर्ण प्रदेश के किसान सूखा एवं बाढ़ का प्रकोप झेल चुके हैं और अब रबी की फसल ही उनका सहारा है।

आज से शुरू होंगे आप के कार्यकर्ता सम्मेलन

लखनऊ। गंदगी हटाओ झाड़ू चलाओ अभियान के बाद, अब आम आदमी पार्टी प्रदेश के सभी नगर निगम /नगर पंचायत /नगर पालिका के क्षेत्रों में कार्यकर्ता सम्मेलन करेगी, जिसके माध्यम से पार्टी के पदाधिकारी नगर निगमों में व्यापत भ्रष्टाचार से जनता को अवगत कराएंगे। यह सम्मेलन 30 नवंबर तक चलेगा। आप चुनाव समिति के प्रदेश अध्यक्ष सभाजीत सिंह ने बताया कि रविवार से प्रदेश के सभी नगर निगम, नगर पालिका और नगर पंचायतों की विधानसभाओं में कल 20 नवंबर से 30 नवंबर तक 11 दिवसीय जनसंपर्क कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा जिसके लिए आप के 77 पदाधिकारियों को जिम्मेदारी दी गई है। इस 11 दिवसीय कार्यक्रम में 800 जनसभाएं की जाएंगी। उन्होंने बताया आम आदमी पार्टी निकाय चुनाव की सभी सीटों पर मजबूती से चुनाव लड़ेगी। कार्यकर्ता सम्मेलन के दौरान नए लोगों को पार्टी के सदस्यता दिलाई जाएगी, आवेदन फार्मो का वितरण किया जाएगा और संभावित प्रत्याशियों का क्षेत्रीय सर्वे कराकर नामों पर चर्चा की जाएगी।

क्लैट परीक्षा हेतु रेस टू एनएलयू कार्यशाला का हुआ आयोजन, 250 प्रतियोगी छात्रों ने किया प्रतिभाग

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। कैरियर लांचर के द्वारा शनिवार को क्लैट परीक्षा हेतु रेस टू एनएलयू कार्यशाला का हजरतगंज स्थित एक निजी होटल में आयोजन किया गया। क्लैट, आईपीएमएटी, सीयूईटी एवं कैट जैसी अन्य अग्रणी परीक्षाओं की तैयारी कराने के लिए प्रतियोगी छात्रों के बीच जाने जानेवाली देश की अग्रणी संस्था कैरियर लांचर के द्वारा 30 दिनों में क्लैट परीक्षा में कैसे 30 अंक अतिरिक्त बढ़ाएं पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला को कैरियर लांचर के निदेशक अभिषेक सिंघानिया एवं उनकी टीम के नेतृत्व में आयोजित किया गया। जिसमें आईआईएम कलकत्ता से आक्र्स श्रीनिवासन द्वारा समस्त प्रतियोगी छात्रों को क्लैट परीक्षा संबंधी समस्त महत्वपूर्ण विषयों पर समय प्रबंधन कैसे किया जाए, विभिन्न तकनीकों द्वारा कैसे परीक्षा में अंकों को बढ़ाया जाए एवं छात्रों के विषय संबंधी प्रश्नों पर विस्तृत चर्चा की। कार्यशाला में 250 प्रतियोगी छात्र उपस्थित रहे। कार्यशाला में डॉक्टर राहुल मिश्र हैदराबाद से ने भी व्याख्यान प्रस्तुत किया। कार्यशाला में कैरियर लांचर के अनुभवी शिक्षक शिवम नारायण एनएलयू के द्वारा प्रश्नोत्तरी का भी आयोजन किया गया। जिसमें सभी छात्रों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया और पुरस्कृत भी किए गए। कार्यक्रम को सफल बनाने में संस्था के अंग्रेजी विषय के अध्यापक अभिषेक चतुर्वेदी, संस्था के छात्र आचमन दीक्षित, संस्था से अनूप, आशीष, वंश एवं समस्त छात्रों का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

दो कुलों की शान होती है बेटियां : डॉ धर्मेन्द्र सिंह

कैनविज टाइम्स संवाददाता

गोरखपुर / कुशीनगर। आज का दिन बेटियों के सम्मान का दिन है क्योंकि आज पूरा देश रानी लक्ष्मीबाई का जन्मदिन मना रहा है । इस अवसर पर कराटे की अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी जो अब इस दुनिया में नही है के पुण्यतिथि पर आयोजित पूर्वांचल खेलरत्न स्मारिका का विमोचन व सम्मान समारोह का आयोजन बहादुर बिटिया को समर्पित है । गीता में वर्णित है कि भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन को उपदेश देते हुए कह रहे है कि किसी भी कार्य को पूर्ण करने के लिए पांच चीजों की आवश्यकता पड़ती है और सभी वस्तुओं को जुटने के बाद भी यदि ईश्वर का आदेश नही होगा तो कार्य पूरा नही होगा । जिससे स्पष्ट होता है कि शायद ईश्वर को असमय अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी दीपमाला को अपने पास बुलाना ही मंजूर था । देश के बर्तमान यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी व मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ बेटियों के उत्थान के लिए अनेकों कार्य किये है और कर रहे है । आज बेटियां पायलट से लगायत वह सभी कार्य कर रही है जिसे कभी केवल पुरुष ही करता था । इस विद्यालय की बेटियां भी बहुत अच्छा प्रस्तुतिकरण पेश की है । आसमान की ओस होती है बेटियां , दो कुलों की शान होती है बेटियां ।

उक्त बातें शनिवार को विकास खण्ड हाटा के सोहसा चौराहा स्थित जेपी आदर्श विद्यालय में कराटे की अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी दीपमाला के पुण्यतिथि पर आयोजित खेलरत्न स्मारिका विमोचन व सम्मान सभा को सम्बोधित करते हुए भाजपा के क्षेत्रीय अध्यक्ष व विधान परिषद सदस्य डॉ धर्मेन्द्र सिंह ने कहा । कार्यक्रम में सम्मानित पत्रकारों को पत्रकारिता रत्न सम्मान , गुरुजनों को द्रोणाचार्य सम्मान व प्रत्येक कक्षाओं में उत्कृष्ट स्थान प्राप्त बच्चों को सम्मानित किया गया । कार्यक्रम को पडरौना के सांसद विजय कुमार दुबे , हाटा के विधायक मोहन वर्मा व भाजपा के जिलाध्यक्ष प्रेमचन्द मिश्र ने भी संबोधित किया । कार्यक्रम के आयोजन भाजपा के पूर्व क्षेत्रीय उपाध्यक्ष व मंत्री तथा उत्तर प्रदेश अनुसूचित जाति आयोग के पूर्व सदस्य हरिनाथ भाई ने अतिथियों का स्वागत व विद्यालय के प्रबंधक दीनानाथ प्रसाद आभार व्यक्त किया । अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ता व भाजपा नेता सिद्धार्थ कुमार व नेत्री प्रांजल सिंह ने आगन्तुकों को वैज लगाकर स्वागत किया । कार्यक्रम में सैकड़ो भाजपा कार्यकर्ता व सम्भ्रांत व्यक्ति उपस्थित रहे ।

पैसा निकालने गए व्यक्ति से स्टेट बैंक के अंदर हुई टप्पेबाजी

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। कैंट थानाक्षेत्र के अर्जुनगंज में स्थित स्टेट बैंक ऑफ इंडिया में 18 नवंबर 2022 को पैसा निकालने गए युवक से 24,500 रुपए की टप्पेबाजी हो गई। पीड़ित ने जब घटना की शिकायत बैंक कर्मचारियों से की तो उन्होंने पीड़ित की सहायता करने के बजाए उसे फटकारकर वहां से भगा दिया। इसके बाद पीड़ित ने पुलिस से मामले की शिकायत की है।

जानकारी के मुताबिक सुशांत गोल्फ सिटी थानाक्षेत्र के निजामपुर मझिंगवां गांव निवासी सत्यनाम शुक्रवार को पीएम आवास योजना की किश्त के पैसे निकालने हेतु बैंक गया था। जहां उसने काउंटर से 1 लाख रुपए लिए और वापस आने लगा इतनी देर में बैंक में पहले से मौजूद युवक पीड़ित के पास आया और नोट में रंग लगा होने की बात कहकर उसने नोट जांचने की बात कही और फुसलाकर पीड़ित से पैसे ले लिए। थोड़ी दर बाद आरोपी ने कुल रकम से 24,500 रुपए अपने पास छिपे लिए और बाकी रकम पीड़ित से काउंटर पर जमा करने की बात कहते हुए वापस कर दी। जब पीड़ित काउंटर पर पैसे जमा करने पहुंचा तो वहां उसकी रकम कम निकली। वहीं जब पीड़ित ने आरोपी युवक को ढूंढना शुरू किया तब तक आरोपी वहां से भाग गया था। इसके बाद पीड़ित ने उक्त मामले की शिकायत जब बैंक कर्मचारियों से की तो उन्होंने मदद की जगह पीड़ित युवक को फटकारकर वहां से भगा दिया। इसके बाद पीड़ित सत्यनाम ने कैंट पुलिस से मामले की लिखित शिकायत की है। साथ ही पीड़ित ने घटना के बाद मदद न करने के कारण बैंक स्टाफ पर भी कार्रवाई की मांग की है। शुक्रवार को बैंक के अंदर हुई टप्पेबाजी की घटना परिसर में लगे कैमरे में कैद हो गई। जिसमें युवक बैंक के अंदर आता दिखा और घटना के बाद वापस जाता हुआ नजर आ रहा है। वहीं दूसरा युवक बैंक से कुछ मीटर की दूरी पर साथी आरोपी का इंतजार करता दिख रहा है।

पराली न जलाए किसान, जागरूक करने को निकाली मोटरसाइकिल रैली

मीरजापुर। खेत में फसल अवशेष, पराली न जलाने के लिए अब मोटरसाइकिल रैली किसानों को जागरूक करेगी। साथ ही पराली सड़ाकर खाद बनाने अथवा पराली दान करने के लिए प्रेरित किया जाएगा। पराली न जलाने को लेकर व्यापक प्रचार-प्रसार के लिए शनिवार को तहसील स्तर पर मोटरसाइकिल रैली रवाना की गई। तहसील दिवस पर शनिवार को लालगंज तहसील से जिलाधिकारी दिव्या मित्तल, पुलिस अधीक्षक संतोष मिश्र, एसडीएम लालगंज नवनीत सेहरा व उप कृषि निदेशक डॉ अशोक कुमार उपाध्याय ने मोटरसाइकिल रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। मोटरसाइकिल रैली गांव-गांव भ्रमण कर पराली न जलाने के लिए प्रचार-प्रसार करेगी। जिलाधिकारी दिव्या मित्तल ने बताया कि पराली जलाने की घटना प्रकाश में न आएं। इसके लिए सभी ग्राम स्तरीय कर्मचारी व अधिकारी सतत निगरानी रखें। सेटेलाइट के माध्यम से भी इसकी निगरानी की जा रही है। यदि किसी क्षेत्र में पराली जलाने की घटना होती है तो संबंधित कर्मचारी को उत्तरदायी ठहराया जाएगा और दोषी किसान के खिलाफ अर्थदंड के साथ कार्रवाई की जाएगी।

मोटरसाइकिल चोर को नगराम पुलिस ने गिरफ्तार कर भेजा जेल

कैनविज टाइम्स संवाददाता

नगराम, लखनऊ। स्थानीय पुलिस ने मोटरसाइकिल चोरी के एक आरोपित को गिरफ्तार कर शनिवार को जेल भेज दिया। लगभग 3 वर्ष पूर्व अज्ञात चोर के विरुद्ध मुकदमा पंजीकृत हुआ था। नगराम थाना प्रभारी हेमन्त कुमार राघव ने बताया कि थाना क्षेत्र अंतर्गत हर्ई गांव निवासी अरविंद कुमार बीते 24 सितंबर 2019 को राजनारायण जायसवाल इंटर कॉलेज में किसी काम से अंदर गया था , जहां उसने स्कूल गेट के बाहर अपनी सीडी डीलक्स मोटरसाइकिल रखा था , कुछ देर बाद जब स्कूल से बाहर निकला तो उसकी मोटरसाइकिल गायब थी ,तभी अरविंद कुमार ने नगराम थाने में मोटरसाइकिल चोरी का मामला अज्ञात चोर पर दर्ज कराया था , जिस पर त्वरित कार्रवाई करते हुए पुलिस टीम ने मोटरसाइकिल को बरामद कर लिया था। मामले में थाना प्रभारी हेमन्त राघव सहित एसएसआई अवधेश सिंह ने अज्ञात चोर को प्रकाशित करते हुए अभियुक्त जाकिर अली उर्फ राजा निवासी किला कस्बा नगराम को गिरफ्तार कर जेल भेजा है ।

तहसील समाधान दिवस एडीएम वित्त एवं राजस्व की अध्यक्षता में संपन्न हुआ

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ मोहनलालगंज । संपूर्ण समाधान दिवस में कुल 130 शिकायतें प्राप्त हुई जिनमें से राजस्व संबंधी 15 शिकायतों का मौके पर निस्तारण किया गया शेष शिकायतों के निस्तारण के लिए संबंधित विभाग के अधिकारियों को भेज दिया गया तहसील दिवस के अध्यक्षता कर रहे एडीएम हिमांशु गुप्ता को दयालपुर गांव के पुश्तैनी मंदिर के पुजारी ने प्रार्थना पत्र देते हुए आरोप लगाया है कि गांव के ही प्रॉपर्टी डीलर ने मंदिर की पुश्तैनी जमीन को हड़पने के लिए फर्जी ट्रस्ट बनाया और हल्का लेखपाल से सांठगांठ कर पुजारी का नाम हटवा कर फर्जी रिपोर्ट लगवा ली। शिकायत की जांच एसडीएम ने तहसीलदार को सौंपी है। वही गोसाईगंज के कपेरा मदारपुर की एक दिव्यांग पिंकी जायसवाल अपने दो मासूम बच्चों को लेकर संपूर्ण समाधान दिवस में पहुंची जिसकी शिकायत पर एडीएम एफआर व एसडीएम मोहनलालगंज हनुमान प्रसाद मौर्य तथा एसीपी मोहनलालगंज धर्मेंद्र सिंह रघुवंशी ने संयुक्त रूप से गोसाईगंज पुलिस को फोन पर निर्देशित किया कि दिव्यांग पिंकी जयसवाल के पति की तालाब में 1 वर्ष पूर्व डूब कर आसमयिक मौत हो गई थी। जिसके दो बच्चे हैं जिसके पास जीवकोपार्जन का कोई साधन नहीं है। इस मौके पर समस्त अधिकारी व कर्मचारी मौजूद रहे।

सरकार को लव जिहाद के खिलाफ सख्त कदम उठाने चाहिए : साक्षी महाराज

एजेंसी

मथुरा। उन्नाव से भाजपा सांसद डॉ. सच्चिदानंद हरि साक्षी ने दिल्ली में श्रद्धा के साथ हुई घटना पर आक्रोश जताते हुए कहा कि अब समय आ गया है, सरकार को लव जिहाद के खिलाफ सख्त कदम उठाने चाहिए। उन्होंने हिंदू लड़कियों को पूर्वाभ्यास कराते हुए कहा जिसके खून में ही दगा है, वह किसी का नहीं हो सकता लेकिन जो मां-बाप का नहीं हो सकता, वह भी किसी का नहीं हो सकता। शुक्रवार की शाम वृंदावन संत कॉलोनी स्थित अपने आश्रम में पहुंचे डॉ. साक्षी महाराज ने कहा कि बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है कि श्रद्धा के 35 टुकड़े किए गए। उसके बाद लखनऊ में निधि को चौथी मंजिल से फेंक देना, ऐसी दुर्भाग्यपूर्ण घटनाएं रोज सुनने को मिल रही हैं जबकि केंद्र में मोदी की सरकार है। लोगों को व्याक्रांत होना चाहिए उसके बाद भी लोग हिमाकत कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि सरकार को बहुत सख्त कदम उठाने की आवश्यकता है। दोषियों को ऐसा दंड देना चाहिए ताकि फिर कोई मनचला इस प्रकार की हिमाकत न कर सके। साक्षी महाराज ने विपक्ष पर निशाना साधते हुए कहा कि तथाकथित सेकुलर वादी जितने लोग हैं, सबको सांप सूंघ गया है। श्रद्धा के 35 टुकड़े हो गए, अगर अन्य जाति की किसी महिला के साथ यह हुआ होता तो विश्व के सैकड़ों देश हिंदुस्तान के खिलाफ खड़े हो गए होते, परंतु श्रद्धा के 35 टुकड़े हुए तो सबको सांप सूंघ गया है। इस मामले राहुल गांधी, सोनिया गांधी और अखिलेश यादव, ममता बनर्जी और केजरीवाल कुछ भी नहीं बोल रहे हैं। यह तथाकथित सेकुलर वादी लोग हैं, जो केवल फूट डालो राजनीति करो। वोटों की राजनीति करने वाले लोग हैं, इनका देश से धर्म से कोई रिश्ता नहीं है। महाराज ने कहा कि मैं हिंदू बहनों को सावधान करता ही रहता हूं, एक बार फिर मैं सावधान करना चाहूंगा वह यह कतई नहीं सोचें हमारा वाला तो अब्दुल है, वह आफताब हो ही नहीं सकता। सावधान रहने की जरूरत है। साक्षी महाराज ने कहा कि कांग्रेस ने इस देश को तोड़ने का काम किया है, मोदी के भय से आक्रांत होकर के राहुल जी जोड़ने की बात कर रहे हैं, लेकिन वह अपने गिरेबान पर तो झांककर देख लेते और मुझे लगता है उसी संदर्भ में वीर सावरकर पर उनका बयान है। जिस प्रकार की उनकी छोटी सोच है, हम उसकी निंदा करते हैं. योगी जी हो या मोदी जी हो या भारतीय जनता पार्टी यह राष्ट्र की राजनीति करते हैं, परिवार की राजनीति नहीं करते हैं। मोदी और योगी के शासन की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि ये कर्मयोगी राष्ट्र की राजनीति करते हैं, परिवार की नहीं। उन्होंने कहा कि जिस तरह रामपुर और आजमगढ़ में जनता ने भाजपा पर भरोसा जताया। उसी तरह इस बार मैनपुरी का चुनाव भी भाजपा ही जीतेगी।

सरोजनी नगर को प्रदेश की सर्वोत्तम विधानसभा बनाने का संकल्प : राजेश्वर

कैनविज टाइम्स संवाददाता

सरोजनीनगर-लखनऊ । सरोजिनी नगर विधायक डॉ. राजेश्वर सिंह ने दावा किया कि उनके द्वारा गोद लिया गया प्राथमिक विद्यालय पहाड़पुर प्रदेश का नंबर एक प्राइमरी विद्यालय होगा जो एक मॉडल के रूप में जाना जाएगा। उन्होंने कहा कि उनके द्वारा गोद लिए गए दो अन्य प्राथमिक विद्यालय लतीफ नगर व अमौसी में भी सीएसआर फंड से 50-50 लाख रुपये की सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएंगी। इसके अलावा विधानसभा के सभी 195 प्राथमिक विद्यालयों में सीएसआर फंड से एक ?1लाख के झूले लगवाए जाएंगे। विधायक डॉ. सिंह ने शनिवार को इंजीनियरिंग कॉलेज से स्कूटर इंडिया तक चलने वाली 8 सिटी बसों का बनी गांव तक हुए विस्तार का शुभारंभ करने के बाद आयोजित जनसभा मे यह बात कही।भाजपा के वरिष्ठ नेता शिव शंकर सिंह शंकरी द्वारा आयोजित इस सभा में विधायक राजेश्वर सिंह ने कहा की विधानसभा क्षेत्र के सभी बुजुर्गों को राम रथ श्रवण यात्रा के माध्यम से बस द्वारा निःशुल्क अयोध्या में रामलला के दर्शन कराया जाएगा जिसकी शुरुआत ग्राम पंचायत जैती खेड़ा के बुजुर्गों से हो चुकी है। रविवार को सरोजिनी नगर स्थित वृद्धा आश्रम के बुजुर्ग राम लक्ष्मण यात्रा पर जाएंगे।उन्होंने कहा कि पर्यटन विभाग से हरौनी के प्राचीन झड़ेश्वर मंदिर का 75 लाख रुपए व बनी के सईं नदी के तट पर स्थित प्राचीन रितेश्वर महादेव मंदिर का 1 करोड़ रुपए से सौंदर्यीकरण कराया जाएगा। विधायक ने कहा पीडब्ल्यूडी जिला पंचायत व मंडी परिषद से विधानसभा में अब तक 80 सड़कें स्वीकृत कराई जा चुकी है । 10 गांव में सिंचाई के लिए नए नलकूप व 5 ग्राम पंचायतों में बारातघर स्थापित किए जाएंगे। सद्भावना स्थित राजकीय हाई स्कूल इंटर कॉलेज के रूप में स्वीकृत हो चुका है और हरौनी में बालिका डिग्री कॉलेज स्थापित करने के लिए कार्रवाई अंतिम चरण में है। उन्होंने कहा कि 5 ग्राम पंचायतों में मंडी परिषद द्वारा 50-50 लाख रुपए की लागत से हॉट पैट बनेंगे।शुद्ध पेयजल के लिए विधानसभा के शहरी इलाके में शासन द्वारा 266 करो रुपए की धनराशि स्वीकृत हो चुकी है। सीएसआर फंड से स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए 5000 सिलाई मशीन निशुल्क दी जाएंगी जिनकी शुरुआत हो चुकी है।उन्होंने कहा लोक बंधु अस्पताल में ब्लड बैंक के लिए सवा करोड़ रुपए स्वीकृत हो चुके हैं ।विधायक ने कहा

इंजीनियरिंग कॉलेज से बनी तक बसों के विस्तार को विधायक ने दिखाई हरी झंडी

सरोजिनी नगर को प्रदेश की सर्वोत्तम विधानसभा बनाने का उनका संकल्प है जिसे वह हर कीमत पर पूरा करेंगे। सभा के बाद विधायक गोद लिए गए प्राथमिक विद्यालय पहाड़पुर पहुंचे और उसके हो रहे कायाकल्प कामना करते हैं करने के बाद निर्माण में लगे ठेकेदार को सभी काम हर हाल में 15 दिसंबर तक पूरे किए जाने का निर्देश दिया।विधायक ने बताया कि प्रदेश में मॉडल के रूप में विकसित किए जा रहे इस प्राथमिक विद्यालय का उद्घाटन मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा कराया जाएगा इस मौके पर भाजपा के वरिष्ठ नेता शिवशंकर सिंह शंकरी,पूर्व ग्राम प्रधान सुजीत,अवनीश सिंह , विनय दीक्षित, अंचल गौतम, विकास सिंह, ग्राम प्रधान रमेश गुप्ता पूर्व ग्राम प्रधान राकेश सिंह पूर्व जिला पंचायत सदस्य प्रमोद गौतम सहित बड़ी संख्या में भाजपा कार्यकर्ता व क्षेत्रीय जनता मौजूद रही।

भारतीय मुद्रा परिषद के 104वां वार्षिक सम्मेलन का समापन

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। भारतीय मुद्रा परिषद के 104वें वार्षिक सम्मेलन के तृतीय दिवस में प्रस्तुत शोध पत्र एवं समापन समारोह का विवरण हुआ। सत्र का प्रथम शोध पत्र वंदना सिंह द्वारा पढ़ा गया, जिसका शीर्षक आंध्र प्रदेश से प्राप्त रोमन मुद्रायें एवं मृदा निधिया था। इसके पश्चात डॉ प्रीति सिंह करिश्मा गुप्ता, राजेश, लाहा एवं सुप्रतिम राय द्वारा शोध पत्र पढ़ा पढ़ा गया। इसके अतिरिक्त डॉ अमित कुमार उपाध्याय द्वारा गांगेयदेव आदि राजाओं द्वारा निर्गमित स्वर्ण सिक्कों के विषय में चर्चा की। इसके पश्चात डॉ देवेन्द्र बहादुर सिंह द्वारा रजत सिक्कों के विषय में चर्चा की और इसी के साथ आज का प्रथम शोध पत्र वाचन सत्र सम्पन्न हुआ। मध्यान भोजन के उपरान्त इस वर्ष के वार्षिक सम्मेलन का समापन सत्र प्रारंभ हुआ। समापन समारोह के अन्तर्गत मंच पर प्रो अमर सिंह भूतपूर्व प्रोफ़ेसर लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ उपस्थित रहे। जो इस समारोह के मुख्य अतिथि थे। इसके अतिरिक्त प्रो पीएन सिंह मंचासीन रहे। राज्य संग्रहालय लखनऊ के निदेशक डॉ आनन्द कुमार सिंह द्वारा राज्य संग्रहालय लखनऊ द्वारा भारतीय मुद्रा परिषद को स्मृति चिन्ह भेट किया। भारतीय मुद्रा परिषद् की ओर से निदेशक राज्य संग्रहालय लखनऊ को कलकत्ता मिन्ट का चांदी का सिक्का भेंट स्वरूप प्रदान किया। विश्व धरोहर सप्ताह दिनांक 19 से 25 नवम्बर के अन्तर्गत विभिन्न विद्यालयों के लगभग 1000 से अधिक बच्चों द्वारा संग्रहालय की वीथिकाओं का भ्रमण कराकर विभिन्न पक्षों की जानकारी दी गयी। भारतीय मुद्रा परिषद के सम्मेलन में सम्मिलित विभिन्न विद्वानों, शिक्षकों, संग्रहालयविदों एवं विद्यार्थियों द्वारा भी संस्कृति के विभिन्न पहलुओं को जानने के उद्देश्य से राज्य संग्रहालय लखनऊ की वीथिकाओं का भ्रमण कराया गया। इसी

निदेशक राज्य संग्रहालय को भेट किया कलकत्ता मिन्ट का चांदी का सिक्का

महासचिव भारतीय मुद्रा परिषद डॉ आनन्द कुमार सिंह निदेशक राज्य संग्रहालय लखनऊ, अश्विनी कुमार सिंह रजिस्ट्रार, डॉ भीमराव अम्बेड़कर विश्वविद्यालय एवं डॉ अमित कुमार सिंह, भारतीय मुद्रा परिषद भी

नाबालिग लड़की को बहला-फुसलाकर भगाने का आरोप, मुकदमा दर्ज

नगराम, लखनऊ। थाना क्षेत्र के एक गांव निवासी एक व्यक्ति ने गोसाईगंज थाना क्षेत्र के एक युवक पर नाबालिग लड़की को भगाने का आरोप लगाया है। पुलिस ने पीड़ित पिता की तहरीर पर मामला दर्ज कर कार्रवाई शुरू कर दी है । पुलिस को दी शिकायत में नगराम के एक गांव के रहने वाले युवक ने बताया कि बीते बृहस्पतिवार की रात उसकी बेटी घर पर सो रही थी , शुक्रवार तड़के सुबह उसकी बेटी गोसाईगंज थाना क्षेत्र के सलेमपुर गांव निवासी राजेश के बहकावे में आ गई । आरोप है कि उसकी 14 वर्षीय नाबालिग लड़की को बहला-फुसलाकर कहीं भगा ले गया।

मोटरसाइकिल चोर को पुलिस ने गिरफ्तार कर भेजा जेल

नगराम , लखनऊ। स्थानीय पुलिस ने मोटरसाइकिल चोरी के एक आरोपित को गिरफ्तार कर शनिवार को जेल भेज दिया। लगभग 3 वर्ष पूर्व अज्ञात चोर के विरुद्ध मुकदमा पंजीकृत हुआ था। नगराम थाना प्रभारी हेमन्त कुमार राघव ने बताया कि थाना क्षेत्र अंतर्गत हर्रई गांव निवासी अरविंद कुमार बीते 24 सितंबर 2019 को राजनारायण जायसवाल इंटर कॉलेज में किसी काम से अंदर गया था , जहां उसने स्कूल गेट के बाहर अपनी सीडी डीलक्स मोटरसाइकिल रखा था , कुछ देर बाद जब स्कूल से बाहर निकला तो उसकी मोटरसाइकिल गायब थी ,तभी अरविंद कुमार ने नगराम थाने में मोटरसाइकिल चोरी का मामला अज्ञात चोर पर दर्ज कराया था , जिस पर त्वरित कार्रवाई करते हुए पुलिस टीम ने मोटरसाइकिल को बरामद कर लिया था।

राष्ट्रीय नाई महासभा की बैठक संपन्न

लखनऊ । राष्ट्रीय नाई महासभा के तत्वावधान में प्रदेश स्तरीय पदाधिकारी कार्यकर्ता बैठक लखनऊ दारुल सफा में संपन्न हुआ । बैठक के मुख्य अतिथि पूर्व विधान परिषद सदस्य एवं राष्ट्रीय महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय आजाद गांधी जी ने कहा कि नाई समाज की दशा एवं दिशा किसी राजनीतिक पार्टी ने नहीं बदला आज नाई समाज का सामाजिक राजनीतिक आर्थिक भागीदारी कहीं भी नहीं है सभी दलों ने सिर्फ वोट लेकर ठगने का काम किया अब नाई समाज जाग चुका है अब जो भी दल ने समाज को उसका हक देगा उसी के साथ हमारा समाज होगा वरना हम खुद अपनी पार्टी बनाएंगे समाज की हर विधानसभा में इतनी वोट है कि किसी भी पार्टी को जिताने एवं हराने की ताकत रखती हैविशिष्ट अतिथि पूर्व कैबिनेट मंत्री एवं विधायक माननीय रामअचल राजभर जी ने कहा कि नाई समाज सर्व समाज के साथ चलने का काम किया और करता है इनका इतिहास भी बहुत बड़ा है महान सम्राट महापदम नंद एकछत्र राज करने वाले महाराजा थे आरक्षण के जनक जननायक करपुरी ठाकुर को जाता है लेकिन शाम अवंती जातिवादी मानसिकता के लोग इतिहास मिटाने का काम किया लेकिन अब ऐसा नहीं होगा नाई समाज सभी के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलता है नाइस समाज को राजनीतिक हिस्सेदारी मिलनी चाहिए क्योंकि नाइस समाज की संख्या केवल उत्तर प्रदेश में ही लगभग 4 परसेंट है और इस समाज का नेतृत्व भी नाइस समाज के नेता कर रहे हैं अभी तक सभी दलों के लोग इन को भुनाने का काम किया अब ऐसा नहीं होगा हम लोग नाइस समाज के साथ हैं और राजनीतिक हिस्सेदारी दिला कर रहेंगे। कार्यक्रम आयोजित राष्ट्रीय नाई महासभा के प्रदेश अध्यक्ष माननीय राम भवन शर्मा जी ने कहा कि अब हमारी आर-पार की लड़ाई होगी नाइस समाज किसी भी दल का गुलाम नहीं है वोट हमारा राज तुम्हारा ऐसा नहीं होगा मुझे मेरे समाज को जनसंख्या के आधार पर जितना हक बनता है उतना चाहिए नहीं तो हमारा नाई समाज वोट का बहिष्कार करेगा ।

सफ़ेदपोश दबंगों से परेशान व्यापारी अकील पहुंचा योगी दरबार

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। जो मोहम्मद अकील पच्चीस साल पहले गोरखनाथ मठ के बाहर लगने वाले मेले में प्लास्टिक का सामान बेचते थे,वे आज मुख्यमंत्री आवास के बाहर राजधानी के सफ़ेदपोश दबंगों की शिकायत लेकर पहुंचे थे।मो.अकील ने पत्रकारों को बताया कि कैसे उनकी जिंदगी भर की कमाई हुई व्यापारिक साख से खिलवाड़ करने के साथ ही नदीम बिल्डर ने अपने साले शेखू से मिलकर उसकी प्लास्टिक मोल्डिंग मशीनें,तमाम कटिंग डाई और सामान की ढुलाई करने करने वाला मिनी ट्रक अपने कब्जे में कर रखा है और कुछ कहने पर यह बिल्डर खुद को अखिलेश यादव के करीबी किसी गजेंद्र सिंह का खासमखास बताता है। 2014 से इंडिया प्लास्टिक के नाम से व्यापारिक फर्म चला रहे मोहम्मद अकील अपनी रोजीरोटी के सवाल से ज्यादा अपनी फर्म की व्यापारिक

प्रतिष्ठा को लेकर चिंतित हैं।अकील ने बताया कि 4लाख 75 हजार रुपये की

खुद को अखिलेश का करीबी बताने वाले बिल्डर ने हड़पी प्लास्टिक व्यापारी की मशीनें

प्लास्टिक इंजेक्शन मशीन की रसीद से लेकर 30 मोल्डिंग डाईयों और मिनी ट्रक की सभी रसीदें और कानूनी कागजात उनके पास आज भी मौजूद हैं जिन्हें नदीम बिल्डर ने जबरन हड़प रखा है। मामला पुलिस कमिश्नरेट और बाजार खाला थाने के संज्ञान में बताया जा रहा है।

धोखाधड़ी कर बैंक से निकाले 84450 रूपए, मामला दर्ज

नगराम , लखनऊ। बैंक उपभोक्ता के खाते से अलग-अलग तारीखों में अज्ञात व्यक्ति धोखाधड़ी कर लगभग आठ किस्तों में कुल 84450 रूपए निकाल लिया। उपभोक्ता ने पुलिस में शिकायत देकर अज्ञात आरोपी के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है। गोसाईगंज थाना क्षेत्र अस्ती गांव निवासी राम लखन ने बताया कि यूनियन बैंक ऑफ इंडिया शाखा केवली में उसका अकाउंट है। राम लखन ने बताया कि उसे पता नहीं चला कि उसका बीते माह अगस्त व सितंबर में अलग-अलग तारीखों में लगभग 8 किस्तों में 84450 रुपए फर्जी तरीके से निकाले गए हैं। नगराम थाना प्रभारी हेमन्त कुमार राघव ने बताया कि मामले में राम लखन की तहरीर के आधार पर मुकदमा दर्ज किया गया है मामले की जांच की जा रही है।

पार्षद रानी कन्नौजिया ने वार्ड नंबर 90 में चलवाया सफाई अभियान

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। गंदगी के कारण हो रही बीमारियों को जड़ से मिटाने के लिए जहां एक तरफ लखनऊ की महापौर ने सख्त रुख अपनाया है तो वहीं पार्षद भी इस मुहिम में कंधे से कंधा मिला कर खड़े दिखाई दे रहे हैं।इसी कड़ी में दौलतगंज क्षेत्र के वार्ड नंबर 90 में जनता की शिकायत सुनने के बाद वर्तमान पार्षद रानी कन्नौजिया द्वारा भी साफ सफाई की व्यवथा दुरुस्त करने के आदेश दिए गए जिसके क्रम में दौलतगंज वार्ड नंबर 90 में सड़क किनारे की चोक नालियों और सीवरों की सफाई करवाई गई इस सफाई अभियान से जनता काफी खुश नजर आई क्योंकि डेंगू की मार की वजह से आज हर जगह इसके रोगी दिखाई दे रहे हैं इस लिए साफ सफाई को दुरुस्त करना बहुत जरूरी है ये बात पार्षद रानी कन्नौजिया ने तो समझी और क्षेत्र में साफ सफाई का बीड़ा उठाया बाकी पार्षद भी अपने क्षेत्रों की सुध ले लें तो गंदगी से होने वाली बीमारियों पर ब्रेक जरूर लगेगा।वार्ड नंबर 90 में हुई साफ सफाई के दौरान भाजपा के महामंत्री राम अवतार कन्नौजिया भी वहां मौजूद रहे जिन्होंने काम का जायजा लिया।

निधि गुप्ता के परिजनों से मिले मंत्री कपिल देव अग्रवाल

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। लव जिहाद में अपनी जान गंवाने वाली निधि के परिजन से मिले कपिल देव अग्रवाल शनिवार को उसके परिजनों से मिलने पहुंचे।आपको बता दें कि सूफियान नामक युवक द्वारा निधि गुप्ता को प्रेम जाल में फंसा कर उसका जबरन धर्मांतरण कराने की विफल कोशिश के बाद हत्या करने के मामले में मंत्री कपिल देव अग्रवाल आज दुबग्गा की डूडा कालोनी में पहुंचकर निधि गुप्ता के शोकाकुल परिवार से मिले व शोक संवेदना प्रकट की।मंत्री कपिल देव ने कहा कि आरोपी को सख्त से सख्त सजा दिलाई जाएगी व सरकार द्वारा पीड़ित परिजनों को हर संभव मदद दिलाई जाएगी मंत्री कपिल देव अग्रवाल ने मौके पर ही जिलाधिकारी लखनऊ से दूरभाष के माध्यम से वार्तालाप कर पीड़ित परिवार की सहायता के दिशा निर्देश दिए।साथ में आईवीएफ के प्रदेश महामंत्री डॉ. अजय गुप्ता, डॉ. अनिल गुप्ता, महानगर अध्यक्ष हेमंत दयाल अग्रवाल, आनन्द गुप्ता, रमेश गुप्ता, पूर्व पार्षद भारत राजपूत, बबलू, रामबाबू कश्यप, विशाल गुप्ता, चन्दन गुप्ता, सूरज राजपूत, राजेश लोधी समेत अन्य मौजूद रहे।

खेलकूद प्रतियोगिता का शुभारंभ

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन के साथ चिनहट के राष्ट्रीय उद्योग आश्रम इंटर कॉलेज, मटियारी में खंड शिक्षा अधिकारी दिनेश चंद्र के मार्गदर्शन में ब्लॉक स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता का शुभारंभ हुआ। कार्यक्रम का उद्घाटन कॉलेज के प्रधानाचार्य डा कौशलेंद्र कुमार श्रीवास्तव द्वारा किया गया। इस अवसर पर प्रधानाचार्य ने सभी बच्चों को शुभकामनाएं दी तथा खंड शिक्षा अधिकारी दिनेश चंद्र ने व्यवस्थित व न्याय पूर्ण तरीके से खेलकूद कराने के निर्देश दिए। प्रतियोगिता के आरम्भ मे मलहौर दो ,लोनापुर एक तथा उत्तरधोना एक के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। चिनहट के ए आर पी डॉ आशीष कुमार सिंह ने खेलकूद प्रतियोगिता के परिणामों के विषय में बताया,जिसके अनुसार उच्च प्राथमिक स्तर पर बालक वर्ग में 100 मीटर में विशेष, 200 मीटर में शिवा,तथा 400 मीटर में सोनू प्रथम स्थान पर रहे, जबकि इसी श्रेणी मे बालिका वर्ग मे आराध्या ,साधना तथा साधना साहू प्रथम स्थान पर रहे । बालक वर्ग में खो खो में सरायसेख तथा बालिका वर्ग में मलेसेमउ के बच्चे प्रथम स्थान पर रहे। बालक वर्ग में लंबी कूद में नितिन जबकि बालिका में कुसुम प्रथम स्थान पर रहीं। प्राथमिक स्तर पर 50 मीटर में पुष्कर, 100 मीटर में अशोक 200 मीटर में पवन तथा इसी श्रेणी मे बालिका वर्ग में रोली, रीना तथा सुहानी प्रथम स्थान पर रहे। प्राथमिक स्तर पर कबड्डी में रायपुर की टीम जबकि खोखो में लोनापुर एक के बच्चे प्रथम स्थान पर रहे। प्रतियोगिता में सफल बच्चों को मेडल प्रदान किए गए। चिनहट के व्यायाम/ खेल शिक्षक सुधीर सहगल के दिशा निर्देशन में सभी प्रतियोगिताएं हुई। इस अवसर पर फजील अहमद खाँ,प्रेम तिवारी, विजय कुमार, लल्ली सिंह,बृजेश कुमार सिंह, मनीष खरे, ऐश्वर्य शुक्ला,बालमुकुंद यादव, जय देवी वर्मा, स्वाति एल्हेंस,रंजना मिश्रा सहित ब्लॉक के शिक्षक, शिक्षामित्र एवं अनुदेशक उपस्थित रहे।

उत्तराखंड महोत्सव में पूनम बिष्ट की गायन और नृत्य से झूम उठे श्रोता

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। गोमती नदी के तट पर उत्तराखंड महोत्सव कार्यक्रम में लखनऊ के कलाकारों की धूम रही है। सांस्कृतिक कार्यक्रम में अभिनेत्री पूनम बिष्ट के नेतृत्व में उनकी टीम की विशेष प्रस्तुति नृत्य, गायन का सफल प्रस्तुति रहा। अभिनेत्री पूनम बिष्ट ने भजन पग घुंघरू बांध मीरा नाची रे नृत्य और गायन से श्रोताओं को झूमने पर मजबूर कर दिया। पूनम बिष्ट से वार्ता के दौरान बताया कि कई फिल्म, रामलीला और रंगमंच में विशेष प्रदर्शन रहा है। कार्यक्रम में राजस्थानी की युवा कलाकार प्रीति सिंह बोरा ने बेटे का क्यों मान है जग में गीत प्रस्तुत किया। हारमोनियम पर ललित भट्ट तथा तबले पर अनिल गोयल, ऐश्वर्या सज्जू ने भरतनाट्यम नृत्य प्रस्तुत किया व आदित्य संजू ने हर घर तिरंगा गायन से श्रोताओं में वीररस का संचार कर दिया।

खेलकूद खेलकूद का आयोजन

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। मलिहाबाद में वेलफ़ेयर फाउंडेशन की ओर से मलिहाबाद के महात्मा गांधी इंटर कॉलेज अमानीगंज में जनपद स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में मलिहाबाद के उप जिला अधिकारी प्रज्ञा, रही जिन्होंने कार्यक्रम का शुभारंभ किया और साथ ही अपना उद्बोधन भी दिया जिसमें उन्होंने खेल के महत्व को सभी खिलाड़ियों को प्रेरित किया इसके अतिरिक्त कार्यक्रम में अन्य मुख्य अतिथि के रुप में माननीय हरदोई के विधायक माधवेंद्र सिंह उपस्थित रहे जिन्होंने सभी खिलाड़ियों को संबोधित कर उन्हें खेल के लिए प्रेरित किया तथा सरकार के द्वारा चलाए जा रहे खेलकूद के लिए विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों को बताया कार्यक्रम में अन्य अतिथि नवीन शर्मा आकर कार्यक्रम में खिलाड़ियों को संबोधित कर उन्हें खेल के महत्व को बताया इसके साथ ही साथ खेल हमारे जीवन में किस प्रकार उपयोगी है ये भी बताया युवाओं में जोश भरा कार्यक्रम के आयोजक गोपाल चंद्र, ने संयोजक के रुप में उपस्थित दिशा गौतम ,अनुज कुमार, नीलकमल, राजकुमार, सिद्धार्थ गौतम शैलेश गौतम, राजा सिंह, अजय विश्वकर्मा, विपिन कुमार, हरेंद्र, कबड्डी में फौजी टीम उप विजेता मलिहाबाद और वॉलीबॉल की विजेता टीम मलिहाबाद की रही बालिका वर्ग में 800 मीटर की रेस में कांति कांति प्रथम , निराली यादव द्वितीय, तथा तृतीय स्थान पर मेहनाज बनो 200 मीटर दौड़ बालक वर्ग में सीनियर विकास प्रथम बबलू तृतीय सौरव यादव तृतीय स्थान पर, तो मीटर बालिका वर्ग विभा कनौजिया, प्रथम सृष्टि रावत, द्वितीय ,मनीषा तृतीय, 200 मीटर जूनियर बालक वर्ग साजन प्रथम, अरुण द्वितीय , भैयालाल तृतीय स्थान पर, 100 मीटर में जूनियर बालक वर्ग में, आशुतोष पाल प्रथम ,अनवर द्वितीय , मयंक यादव तृतीय स्थान पर 100 मीटर सीनियर बालक वर्ग प्रथम स्थान आदित्य सिंह, प्रतिष्ठान सूरज, तृतीय स्थान रिशु 400 मीटर जूनियर बालक वर्ग में प्रथम स्थान प्रदीप कुमार,विकास द्वितीय सुशील तृतीय स्थान पर रहे 400 मीटर बालिका वर्ग निशा प्रथम , शालू द्वितीय, तृतीय स्थान पर 800 बालक वर्ग सीनियर प्रथम स्थान विजय द्वितीय स्थान दीपक तृतीय स्थान हरीश, 800 जूनियर बालक विजय कुमार प्रथम आकाश ,शरीफ बालिका वर्ग सीनियर सपना मौर्या प्रथम शालू रावत द्वितीय, खुशी तृतीय, 100 मीटर जूनियर बालक वर्ग अब्दुल्ल अहमद प्रथम , कैफ द्वितीय, समर तृतीय कार्यक्रम में लंबी कूद का आयोजन भी कहा किया गया जिसमें प्रथम द्वितीय तृतीय विजेता रहे कार्यक्रम का आयोजन प्रबंधक पुष्पा गौतम की अध्यक्षता में आयोजित किया गया।

200 मीटर दौड़ में बालक वर्ग में नवनीत एवं बालिका वर्ग में सुहानी ने मारी बाजी

कैनविज टाइम्स संवाददाता

काकोरी लखनऊ। काकोरी के बेसिक विद्यालय भरोसा में आयोजित ब्लॉक स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता का शुभारंभ ब्लाक प्रमुख काकोरी नीतू यादव एवं खंड शिक्षा अधिकारी काकोरी राममूर्ति सिंह ने सरस्वती प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्जलन कर किया। काकोरी ब्लाक के सभी न्याय पंचायत के बच्चों ने मार्च पास्ट कर ब्लॉक प्रमुख एवं खंड शिक्षा अधिकारी को सलामी दी तत्पश्चात कक्षा 1 से 5 वर्ग के छात्रों की 200 मीटर की दौड़ कराई गई जिसमें बेसिक विद्यालय भरोसा के नवनीत एवं बालिका में सुहानी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। 400 मीटर दौड़ में बालक वर्ग में शिवम एवं बालिका वर्ग में खुशी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया 100 मीटर दौड़ में शिवम एवं मानसी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया कबड्डी प्रतियोगिता में बालिका वर्ग में खुशहाल गंज न्याय पंचायत के बच्चों ने प्रथम व बड़ागांव न्याय पंचायत के बच्चों ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कबड्डी बालक वर्ग में प्रथम स्थान बड़ागांव न्याय पंचायत द्वितीय स्थान सकरा न्याय पंचायत के बच्चों को प्राप्त हुआ। खो-खो प्रतियोगिता बालक वर्ग में प्रथम स्थान भरोसा व द्वितीय स्थान ग्वालपुर के बच्चों को मिला 50 मीटर की दौड़ में ग्वालपुर के वंश राज ने प्रथम व अंश ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। वहीं बालिका वर्ग में 50 मीटर की दौड़ में अपराजिता ने प्रथम वस्त्र सृष्टि ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।जूनियर हाई स्कूल स्तर की कबड्डी में न्याय पंचायत खुशहाल गंज के बच्चों ने प्रथम स्थान व न्याय पंचायत सकरा के बच्चों ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। खो-खो प्रतियोगिता में बालिका वर्ग में खुशहाल गंज न्याय पंचायत ने बाजी मारी चक्र क्षेपण में बालक वर्ग में आर्यन यादव बालिका वर्ग में विभा ने प्रथम स्थान हासिल किया गोला फेंक में बालक वर्ग में आर्यन यादव बालिका में प्रियांशी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया 600 मीटर दौड़ में बालक वर्ग में नवनीत ने प्रथम व बालिका वर्ग में सानिया ने प्रथम स्थान हासिल किया लंबी कूद बालक वर्ग में नवनीत ने प्रथम स्थान का बालिका वर्ग में नैना ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। प्रतियोगिता में विजई प्रतियोगियों को संबोधित करते हुए ब्लाक प्रमुख काकोरी नीतू यादव ने जिला एवं प्रदेश स्तर पर काकोरी ब्लाक का नाम रोशन करने और प्रतियोगिताओं में अधिक से अधिक मिडिल लाने के लिए प्रेरित किया खंड शिक्षा अधिकारी काकोरी राममूर्ति सिंह यादव ने सभी बच्चों को संबोधित करते हुए कहा कि खेल हमारे जीवन के मुख्य अंग है खेल खेलने से शरीर स्वस्थ रहता है। और दिमागी रूप से व्यक्ति स्वस्थ रहता है। स्वस्थ शरीर में स्वस्थ आत्मा का वास होता है उन्होंने उन्होंने आए हुए। सभी अतिथियों को धन्यवाद ज्ञापित किया और सभी बच्चों को जिला व प्रदेश स्तर पर सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित किया वही कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय की छात्राओं ने एकांकी व सर्व शिक्षा अभियान से संबंधित अपनी प्रस्तुति दी हरदोइया लाल नगर खुशहाल गंज थावर के बच्चों ने बालिका शिक्षा योगासन व पीटी पर अपनी प्रस्तुति देकर सबका मन मोह लिया काकोरी ब्लाक स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता को संपन्न कराने में जिला व्यायाम शिक्षक संजय पांडेय की अहम भूमिका रही दो दिन पहले से ही उन्होंने मैदान को तैयार करा कर शांतिपूर्वक न्याय प्रिय निर्णय कराएं ।

दौलत की आरजू ने किया बदचलन उन्हें...

भ्रष्टाचारियों पर मेहरबान अधिशासी अधिकारी

कैनविज टाइम्स संवाददाता

- उच्चाधिकारियों के हस्तक्षेप के बाद दर्ज हुआ मुकदमा

पलियाकलां-खीरी।भ्रष्टाचार में प्रतिवर्ष नये नये कीर्तिमान गढ़ने वाली नगर पालिका परिषद पलियाकलां के अधिशासी अधिकारी महेंद्र चौधरी इन दिनों घोटालेबाजों पर खासे मेहरबान हैं वहीं दूसरी तरफ शासकीय धन के बंदरबांट में लगे लोग मानक विहीन निर्माण, अधोमानक आपूर्ति इत्यादि कार्यों में भारी गोलमाल करते करते अब पूर्व निर्मित सड़कों, नालों एवं सौंदर्यीकरण जैसे कार्यों के नाम पर फर्जी भुगतान निकालने की कूट रचना में लगे हैं। घोटालेबाजों को संरक्षण देने के सम्बंध में जब अधिशासी अधिकारी से वार्ता की गई तो उन्होंने बताया कि टेंडर आमंत्रित कर पूर्वनिर्मित कार्यों के भुगतान की साजिश को निराधार बताते हुये जाँच करवाने की बात कहीं। वहीं बरबंडा मोहल्ले में अपने करीबी ठेकेदार द्वारा मानक विहीन कार्य को लेकर उच्चाधिकारियों के निर्देश पर प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज होने के मामले में गोलमोल जवाब देने लगे। उल्लेखनीय है कि मानक विहीन मोहल्ला बरबंडा की इंटरलाकिंग रोड को ठेकेदार द्वारा बगैर ईंट रोड़ी, सीमेंट व बालू के मिश्रण के बिना ही बना दिया गया था, जिसकी एम बी इत्यादि अवर अभियंता द्वारा की गई थी उसका भौतिक सत्यापनकर अधिशासी अधिकारी द्वारा करते हुये लाखों का भुगतान भी कर दिया गया। किन्तु फर्जी भुगतान की जानकारी उच्चाधिकारियों के संज्ञान में आई तो जांच के आदेश दिये गये। घोटाले की परतें खुलने के डर से घोटालेबाजों ने रात में ही इंटरलाकिंग उखाड़कर दिखावे के तौर पर ईंट रोड़ी डालना शुरू कर दिया तो मौके की नजाकत भाँप स्थानीय लोगों ने अधिशासी अधिकारी को सूचना दी गयी लेकिन पालिका प्रशासन की चुप्पी देख लोगों ने उपजिलाधिकारी को सूचना दी गयी। भ्रस्टाचार के मामलों में जीरो टॉलरेंस की नीति अपनाने वाले एसडीएम कार्तिकेय सिंह ने तत्काल मौके पर पहुँचकर निरीक्षण किया तो उधड़ी पड़ी इंटरलाकिंग रोड अपने दुर्दशा की कहानी बयां करने लगी। उपजिलाधिकारी के आदेशों के बाद हरकत में आये पालिका प्रशासन ने समझौते से लेकर एफआईआर तक का सफर तय किया। गौरतलब है कि भ्रष्टाचार के इस गंभीर प्रकरण में भले ही ठेकेदार के विरुद मुकदमा लिखवाकर पालिका व उच्चाधिकारियों ने अपने कर्तव्यों की इतिश्री कर ली है लेकिन ठेकेदार को संरक्षण व सहायता देने वाले अवर अभियंता, अधिशासी अधिकारी सहित अन्य जिम्मेदार अभी भी कानूनी प्रक्रिया से परे हैं जो नये नये घोटालों की रूपरेखा बना रहे हैं।

अवैध खनन जारी, योगी सरकार की धज्जियां उड़ाता आ रहा है नजर स्थानीय प्रशासन

कैनविज टाइम्स संवाददाता

- रॉयल्टी के नाम पर होता है बड़ा खेल
- शहर में मौरंग व अन्य वाहनों की एंट्री के नाम पर होता है लाखो रुपयों का खेल-सूत्र
- ठेकेदारों को बालू की रॉयलिटी में 20 रुपये प्रति घन देना पड़ता है सुविधा शुल्क-सूत्र
- 2500 रुपये बालू की बुकलेट पर सुविधा शुल्क- सूत्र
- जिला खनन अधिकारी से जब बात की गई तो बताया सोमवार से मंगलवार में आफिस आकर मिल ले

सीतापुर। उत्तर प्रदेश सरकार के मुखिया योगी आदित्यनाथ जी के आदेशों का जिला खनन अधिकारी पर कोई असर नहीं है जबकि भू और खनन माफिया पर नकेल कसने की प्राथमिकता को अपने एजेंडे में शामिल किया था। लेकिन सीतापुर में मुख्यमंत्री के ये दोनों ही मिशन पूरी तरह फ़ेल होते नजर आते हैं। अवैध खनन की बात करें तो मिट्टी का अवैध खनन लगातार बढ़ता जा रहा है। सरकारी नियमों के विपरीत सांठगांठ के खेल से खनन माफिया पूरी रात मिट्टी का खनन करते हैं और इसमें थाना पुलिस की मिलीभगत जहां प्रमुख रूप से होती है। जिले में अवैध खनन अपने चरम पर है। जंहा जिला खनन अधिकारी व स्थानीय पुलिस प्रशासन की मिली भगत से शाम होते ही जेसीबी मशीने चालू हो जाती है। जिले में खुले आम अवैध खनन होता चला आ रहा है पर स्थानीय प्रशासन योगी सरकार की धज्जियां उड़ाता नजर आ रहा है। पिछले दिनों प्रदेश की योगी सरकार ने अवैध खनन पर सख्त चेतावनी दी है. मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा है कि अवैध खनन हुआ तो अफसरों की खैर नहीं है. मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि अवैध खनन की शिकायत मिलने पर माफियाओं के खिलाफ कठोरतम कार्रवाई की जाए. उन्होंने उच्चस्तरीय बैठक में अधिकारियों से कहा कि अवैध खनन की शिकायतों पर तत्काल कार्रवाई की जाए। पर सीतापुर जिले में उल्टी गंगा बहती नजर आ रही है। जिले में खैराबाद, लहरपुर, बिसवां, मिश्रिख, तंबौर, सकरन आदि जगहों पर खनन माफिया सक्रिय रहते है।कही बालू तो कही मिट्टी का खनन जोरो पर है।

कैनविज टाइम्स टीम ने जगह जगह जाकर जानकारी किया तो अभी थोड़े दिन पहले की बात है मौके पर खनन अधिकारी ने मिट्टी भरी ट्राली और जेसीबी बिसवां में पकड़ा पर कार्यवाही के नाम पर सिर्फ लीपापोती ही हुई है शाम होते ही जेसीबी मशीन धरती का सीना चीर कर अवैध खनन करते हुए सकैडो बीघा जमीन को बंजर बनाने का काम किया जा रहा है। उत्तर प्रदेश में अवैध खनन हमेशा से बड़ा मुद्दा रहा है। पिछली सरकारों में जमकर अवैध खनन हो रहा था और उसको राजनीतिक संरक्षण भी प्राप्त था। योगी सरकार सत्ता में आने के बाद से ही अवैध खनन के खिलाफ सख्त रही है। समय-समय पर प्रदेश में अवैध खनन को रोकने के लिए अभियान चलाया जाता रहा है। जिला खनन अधिकारी का अपना अलग ही स्वेग है। सीतापुर सूत्रों से जिले में स्थित भट्ठा मालिको अन्य बिल्डरों के नाम पर जो रॉयल्टी जारी होती है उसका गाटा संख्या कही का व खनन कही करवाया जाता है

इस सम्बंध में जिला खनन अधिकारी से जानकारी करने के लिए काल किया गया तो बताया की सोमवार से मंगलवार में आफिस में आकर हमसे मिल लें जिससे यह प्रतीत होता है की जिला खनन अधिकारी की ही सरपरस्ती में खनन माफियाओं के हौसले बुलंद हैं।

ब्लॉक सभागार में बीसी सखियों को वितरित की गई साड़ियां

गोला-खीरी।जनपद खीरी की ब्लॉक सभागार के कुम्भी (गोला) मे अमन अरविंद गिरी विधायक के द्वारा बीसी सखियों को साड़ी वितरण किया गया।उत्तर प्रदेश सरकार की मंशा के अनुरूप उत्कृष्ट कार्यों से सम्मानित बीसी सखियों को क्षेत्रीय नवनिर्वाचित विधायक अमन अरविंद गिरी के द्वारा गोला ब्लॉक सभागार में बीसी सखियों को साड़ियां प्रदान की गई। इस अवसर पर ब्लाक सभागार में समस्त अधिकारी उपस्थित रहे। मंच का संचालन कर रहे विजय शर्मा (ऐडीओ-आई एस बी) ने किया।

इस कार्यक्रम में ब्लॉक प्रमुख, वमल वर्मा जिला पंचायत सदस्य व आनंद कुमार मौर्या,ओम प्रकाश,शिवाली गंगवार,सर्वेश व बीसी सखियां उपस्थित रही।

दो दिवसीय भ्रमण पर खीरी आएंगी गवर्नर डीएम व एसपी ने परखी तैयारियां

लखीमपुर-खीरी।उत्तर प्रदेश की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल रविवार को दो दिवसीय भ्रमण के लिए खीरी आ रही हैं। उनके कार्यक्रम को लेकर प्रशासन ने सभी तैयारियां पूरी कर ली हैं। शनिवार को डीएम महेंद्र बहादुर सिंह ने एसपी संजीव सुमन के साथ उनके भ्रमण के संबंध में तैयारियां परखी। डीएम-एसपी ने पुलिस लाइन्स परिसर में बने हेलीपैड, कलेक्ट्रेट सभागार सहित पूरे कार्यक्रम के लिए नियत रूट का स्वयं भ्रमण कर विभिन्न पहलुओं पर समीक्षा की। यही नहीं गवर्नर के भ्रमण के मद्देनजर सभी संबंधित अधिकारियों को न केवल उत्तरदायित्व बताएं। उन्होंने कहा कि सभी अवसर सोंपे गए दायित्वों का पूरे मनोयोग से निर्वहन करें वही अधिकारी पलिया तहसील के गांवों में तैयारियों में जुटे रहे। गवर्नर की फ्लीट का रिहर्सल! यूपी की राज्यपाल आनंदी बेन पटेल का दो दिवसीय जनपद भ्रमण कार्यक्रम 20-21 नवंबर को है। राजभवन से उनके कार्यक्रम का विस्तृत ब्यौरा जारी किया गया है।जिला प्रशासन राज्यपाल के भ्रमण संबंधी तैयारियों में जुटा है। राज्यपाल की सुरक्षा को लेकर भी गहन मंथन जारी है। प्रस्तावित भ्रमण कार्यक्रम के मद्देनजर शनिवार को आला अधिकारियों ने राज्यपाल की सुरक्षा में तैनात अधिकारियों संग भ्रमण का रिहर्सल किया। पुलिस लाइन से बाकायदा राज्यपाल की फ्लीट गंतव्य स्थलों के लिए पहुंची।

करोड़ों रूपये की सड़क योजना के अंतर्गत प्रोजेक्ट आज भी अपनी दुर्दशा पर बहा रहा है आंसू

कैनविज टाइम्स संवाददाता

विकास खंड हरगांव का मामला

हरगांव-सीतापुर । हरगांव विकास खंड के अंतर्गत ग्राम कैथाभारी से परसेहरानाथ जाने वाला मार्ग आज भी अपनी दुर्दशा पर आंसू बहाने को मजबूर है ।जबकि वर्ष 2021-22 में इस मार्ग को मुख्यमंत्री त्वरित आर्थिक विकास योजना के अंतर्गत एक करोड़ ग्यारह लाख अरसठ हजार रूपये मे स्वीकृत भी किया जा चुका है और इसके बनने की समय सीमा भी जुलाई 22 में समाप्त हो चुकी है ।जो कि मार्ग पर लगे कार्य योजना के बोर्ड से प्रदर्शित भी हो रही है ।प्राप्त जानकारी के अनुसार हरगांव विकास खंड के अंतर्गत ग्राम कैथाभारी मजरा मदनापुर से ग्राम परसेहरानाथ तक लगभग दो किमी सड़क को शासन ने मुख्यमंत्री त्वरित आर्थिक विकास योजना के अंतर्गत वर्ष 2021-22 में एक करोड़ ग्यारह लाख अरसठ हजार रूपये में स्वीकृत की थी ।जिसे बनाने की जिम्मेदारी ग्रामीण अभियन्त्रण विभाग सीतापुर को दी गई थी।जिसे मार्ग पर लगे प्रदर्शन बोर्ड के अनुसार 19जुलाई 22 तक बन कर तैयार होना था ।मगर आज नवम्बर माह के आधा माह समाप्त हो जाने के बावजूद भी यह मार्ग अपनी दुर्दशा पर आंसू बहाने को मजबूर है ।इस मार्ग पर अभी तक एक पुलिया का ही निर्माण किया गया है।इससे इस कार्य योजना में भृष्टाचार की बू परिलक्षित हो रही है।इसमें सूत्रों के अनुसार अब लीपा-पोती की तैयारी की जा रही है।यह मार्ग परसेहरानाथ से होकर रिक्खीपुरवा ,पिपराघूरी, कजियापुर, गौरापट्टी आदि स्थानीय लोगों के लिए अति महत्वपूर्ण सड़क है। भृष्टाचार को जड़ से समाप्त करने का बीड़ा उठाने वाले उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री मा0 योगी आदित्य नाथ के लिए एक बडी चुनौती है।

बाज़ारों को गुलज़ार कर रखा प्रबंधित पॉलीथिन ने मुख्यमंत्री के आदेशो की धज्जिया उडाता स्थानीय प्रशासन

कैनविज टाइम्स संवाददाता

सीतापुर । कस्बा खैराबाद की बाज़ारो मे प्रबंधित पॉलीथिन की बिक्री बराबर जारी है,जबकि सूबे के मुख्यमंत्री ने पॉलीथिन को पूर्ण रूप से प्रतिबंधित कर रखा,लगभग सम्पूर्ण दुकानों पर पॉलीथिन देखने को मिलेगी।जबकि इस पॉलीथिन को पता नही कितने जानवर खा जाते है और उनकी जिंदगी काल के गाल मे समा जाती है। इस बाबत मे न0पा0 परिषद ने सघन चेकिंग अभियान चलाया था और जुर्माना भी वसूला गया था । इसके बाद भी पॉलीथिन ने बाज़ारो को गुलजार कर रखा है।जबकि पॉलीथिन पर्यावरण ,सामाजिक और प्रकति की सुरक्षा के प्रति हर व्यक्ति को अपने दायित्वों को समझना चाहिए और पॉलीथिन का प्रयोग बिल्कुल नही करना चाहिये । अब चिंतन का विषय यह है कि आखिर पॉलीथिन आ कहा से रही है आखिर स्थानीय प्रशासन क्यो बौना साबित हो रहा,कठोर कदम क्यो नही उठा रहा।

यातायात नियमों का पालन कर बचाएं खुद एवं दूसरों की जान : अंकित शुक्ला

कैनविज टाइम्स संवाददाता

फत्तेपुर-खीरी। राष्ट्रीय सैनिक छात्र सेवा परिषद के संचालक अंकित शुक्ला ने यातायात माह के अंतर्गत यातायात जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया कार्यक्रम किया साथ ही में रैली निकालकर लोगों को यातायात नियमों के प्रति जागरूक किया अंकित शुक्ला ने कहा कि यातायात के नियम इसलिए बनाए गए हैं ताकि कोई हादसे न हों अगर इन नियमों पर हम वाहन चलाते हैं तो कभी भी सड़क हादसे नहीं होंगे जहां हम नियमों का उलघंन करते हैं वहीं हादसा होने की संभावना प्रबल हो जाती है और हम खुद तो शिकार होते ही हैं, दूसरे की जिंदगी भी खतरे में डाल देते हैं इसलिए हमें नियमों का पालन करना चाहिए। इस दौरान यातायात नियमों पर आधारित कालेज के छात्र-छात्राओं ने कार्यक्रम प्रस्तुत किए इसके उपरांत एनसीसी के छात्र छात्राओं द्वारा यातायात जागरूकता रैली निकाली गई रैली कॉलेज प्रांगण से प्रारंभ हुई जो कई जगह-जगह तक गई इस अवसर पर मनोज शुक्ला, देवेंद्र तिवारी, संजय सिंह, फौजी चेतन मिश्रा, राज सिंह, अभिषेक शुक्ला, पंकज अंकुश राम जी अश्वनी शुक्ला, शिवा सिंह पप्पू सत्येंद्र कुमार, सत्यम सिंह, मोहित राज श्रीवास्तव, अनीश गौतम, रंजीत सचिन, जसवंत गुड्डी आरती रेखा बेबी, अलका, शिवानी, सोनम छात्र-छात्राएं मौजूद रहे।

लक्ष्मी बाई की जयंती के उपलक्ष में सम्मेलन व शोभा यात्रा का आयोजन

कैनविज टाइम्स संवाददाता

हरगांव-सीतापुर । अभाविप हरगांव नगर इकाई के द्वारा महारानी लक्ष्मी बाई की जयंती पर हरगांव ब्लॉक सभागार में छात्रा सम्मेलन व नगर में भव्य छात्रा शोभायात्रा का आयोजन किया गया जिसका शुभारंभ हरगांव ब्लॉक से प्रारंभ हुआ । छात्रा शोभायात्रा में विभिन्न कॉलेजों की छात्राएं मौजूद रही जिसमें महारानी लक्ष्मीबाई प्रतिबिंब में अचल अवस्थी व पूर्वा जोशी भारत माता की भारत माता के रूप में व अन्य कॉलेज केंपस की छात्राएं डॉक्टर मास्टर, वकील, पुलिस के रूप में छात्राओं ने शोभायात्रा को भव्य बनाया । मुख्य अतिथि के रूप में फैमिली वेलफ़ेयर काउंसलर सीएससी हरगांव नुसरत जहां व प्रवासी कार्यकर्ता के रूप में प्रांत छात्रा कार्य सह संयोजक पुष्पा गौतम व ममता मोर्या मंचासीन रही । नुसरत जहां ने बताया की छात्राएं हर एक नेतृत्व में आगे हैं । और उनके स्वास्थ्य और पोषण के बारे में संबोधित किया । पुष्पा गौतम ने बताया कि अभाविप अपने स्थापना काल से ही छात्राओं को अग्रिम भूमिका में रखते हुए कार्य कर रही है तथा छात्राओं को विश्व के सबसे बड़े छात्र संगठन अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद में जोड़कर एक अग्रिम भूमिका मेनिभानेकाकार्यकरतीहै। 1857 की क्रांति में महारानी लक्ष्मीबाई की अग्रिम भूमिका रही । शोभा यात्रा का स्वागत नगर में प्रमुख स्थानों पर हुआ । इस शोभायात्रा में 400 छात्राएं प्रतिभाग किया ।

गुरु नानक विद्या मंदिर इंटर कॉलेज, अशरफ अली दी बेस्ट इंटर कालेज , सरस्वती शिशु मंदिर ,आचार्य नरेंद्र देव कॉलेज विभिन्न कॉलेज केंपस कोचिंग की छात्राएं मौजूद रहे । इस शोभायात्रा में विभाग संयोजक आकाश अवस्थी, प्रज्ञा, पूर्णिमा, अजय वर्मा अंशुल वर्मा मनोज यादव अंशु वर्मा , अंकुर सोनी, प्रकाशा, तनु, शशिकांत, अंशिका,गरिमा सिंह, मिश्रा, गोपाल, करण ,प्रियंका , सत्य प्रकाश, पंकज, मृदुल, दिशा, खुशनुमा, मानवी ,आदि विभिन्न कॉलेज की अध्यापिका व शिक्षक व छात्राएं मौजूद रही ।

किसान कैसे चलाएंगे अपना परिवार, सबसे बड़ा सवाल?

कैनविज टाइम्स संवाददाता

- नहीं चली बेलरायां चीनी मिल
- चीनी मिल चलाने को लेकर चेयरमैन अमनदीप को बताया माफिया!
- गेंहू की बुवाई ना होने,चीनी मिल ना चल पाने के कारण किसान आत्महत्या पर मजबूर!
- किसान कैसे चलाएंगे अपना परिवार की जीविका!

सिंगाही खीरी। जनपद खीरी की तहसील निघासन क्षेत्र के बेलरायां चीनी मिल अभी तक शुरू नही हो पाई है जिससे किसान बहुत ही आहत है, किसानों की गन्ने की फसल खड़ी है और वहीं दूसरी तरफ नवंबर माह की बुवाई में भी देरी हो रही है जिसको लेकर किसान परेशान है। किसानों का सोचना है कि यदि चीनी मिल चल जाती तो हम लोगो को बहुत ही सहूलियत मिल जाती वहीं किसानों का कहना है कि चीनी मिल भुगतान देर से करती है,लेकिन आगे पीछे भुगतान मिल जाता है लेकिन उससे हम लोगो इतनी चिंता नही होती है,कम से कम हम लोगो को परेशानी तो नही झेलनी पड़ती। आपको बताते चले कि चीनी मिल हर वर्ष नवंबर में प्रारम्भ हो जाती थी लेकिन इस बार चीनी मिल के चलने के आसार नही दिखाई पड़ रहे हैं, जिससे चीनी मिल के ना चल पाने के कारण किसानों के खेतों में खड़े गन्ने की फसल कोल्हू व क्रेशर संचालक कौड़ी के भाव खरीद रहे है। जिससे किसानो की बुवाई-धुवाई तक नही निकल पा रही हैं और गन्ने की फसल खड़ी होने के साथ ही गेहूं की फसल की भी बुवाई भी नही कर सकते। जिससे किसानों को चौतरफा समस्याओं से झूझना ही पड़ता हैं।। कंही बाढ़ तो कहीं गायों से। किसान करें तो आखिर करे भी क्या? सबसे बड़ा सवाल किसानों के लिए यही बना है। निघासन क्षेत्र के किसानों पर आत्महत्या जैसा संकट पैदा हो रहा है क्योंकि किसान खून-पसीना बहाकर खेती करता है लेकिन उसका मेहनताना तो दूर की बात है उसकी लागत भी नही मिल पा रही है। किसान खेती के सहारे ही अपना जीवन यापन करता है अपने बच्चों को पढ़ाना, बेटो और बेटियों की शादी करना लेकिन जब किसान अपनी फसल को औने पौने दामो में बेचकर कैसे अपने परिवार का जीवन यापन करेगा? किसान को अन्नदाता कहा जाता है लेकिन जब कोल्हू व क्रेशर वाले भी किसानों का खून चूसने लगे तो क्या होगा? आपको याद दिला दें कि योगी आदित्यनाथ सरकार ने चीनी मिल संचालको पर तंज कसकर कहा था कि किसानों का पिछला भुगतान जल्द ही कर दे वरना चीनी मिल संचालको व अधिकारियों पर गाज गिरनी तय है लेकिन गाज गिरना तो दूर ना भुगतान और चीनी मिल पायी अभी तक। सात महीने बीत जाने के बाद भी भुगतान नही हो पाया है। अगर पिछला भुगतान समयानुसार हो जाता तो किसानो को कुछ राहत मिल जाती। गेंहू की बुवाई को लेकर किसान औने पौने दाम लेकर मजबूरी में बेच रहे हैं।

चीनी मिल को चलाने को लेकर चेयरमैन और जीएम में हुई नोक झोंक!

आपको बता दे कि जब चीनी मिल चेयरमैन अमनदीप सिंह ने जीएम से चीनी मिल को चलाने को लेकर बात- चीत की तो जीएम वैभव मिश्रा ने तेवर के साथ चेयरमैन अमनदीप को माफिया तक कह डाला जब कि केवल चेयरमैन साहब ने केवल यही कहा कि आप चीनी मिल चलाइये किसान परेशान है जिसको लेकर एक दूसरे से कहा सुनी हो गयी बात एक दूसरे को देख लेने तक पहुच गयी। जिसका ऑडियो खूब वायरल हो रहा है।

जनता की दर्द भरी आवाज जनप्रतिनिधियों के कानों तक नहीं पहुंच पा रही : श्यामू शुक्ला

कैनविज टाइम्स संवाददाता

निष्पक्ष आवाज उठाने वालों पर शासन प्रशासन कर रहा कार्रवाई!

लखीमपुर-खीरी। प्रेस वार्ता के दौरान किसान नेता श्यामू शुक्ला ने जनपद के कुछ जन प्रतिनिधियों पर जनता के उत्पीड़न का आरोप लगाते हुए यह कहा कि विकास खण्ड पसगवां के खण्ड विकास अधिकारी को कार्यवाही से बचाने के लिए अपनी जनता के विश्वास को जिस तरह से तोड़ने का काम किया है कि उनके द्वारा की जा रही कमीशन खोरी व भ्रष्टाचार के विरुद्ध संज्ञान के बजाए जिला प्रसासन पर इतना दबाव बना रखा है कि जनपद के आला अधिकारी बीडीओ पर कार्यवाही से कतरा रहे है लेकिन अब जनता को ही जवाब मांगना होगा कि उनके द्वारा ही जवाब लेना होगा जैसे कि उन फर्मो की जांच जिनके बिल बाउचर पाइप ईंट वाल पेंटिंग स्ट्रीट लाइट तालाबों में किए गए धन के घोटाले आदि की निष्पक्ष जांच करवा लें तो करोड़ों का घोटाला मिलेगा उन्ही के विरुद्ध यह हमारा धरना प्रदर्शन चल रहा है कई बार जिले के अधिकारियों ने कार्यवाही का आश्वासन दिया पर बड़े नेता के दबाव में वह कार्यवाही न करके वादा खिलाफी कर गए लेकिन कार्यवाही न होने तक आंदोलन जारी रहेगा वहीं प्रभारी निरीक्षक के साथ जनता हित भूल एक दूसरे जनप्रतिनिधि खुल कर सामने आ गए और आंदोलन को कुचलने को प्रयासरत है।अधिकारियों को अपने प्रभाव से बरगला कर किसान नेताओं को फंसाने के प्रयास में है जबसे इन प्रभारी की नियुक्ति हुई है तब से थाना क्षेत्र में चोरियां छिनैती खनन डीजल चोरी जुवां मादक पदार्थ की बिक्री महिला उत्पीड़न का ग्राफ खूब बढ़ा है जिनकी लिखित शिकायतों के बाद भी कोई सुनवाही न किसी का खुलासा कर पाए है यहां तक कि फरिया पिपरिया में हुई वृद्ध महिला की हत्या में दर्जनों लोगों को उठाकर उगाही तो कर ली लेकिन आज तक खुलासा नही कर पाएं है उनके विरुद्ध हमारा धरना चल रहा है।

लेकिन जनप्रतिनिधियों के दबाव में जिला प्रशासन कोई कार्यवाही नही कर पा रहा है वहीं मितौली एसओ व पीआरओ एसपी जो महिला सिपाही के मामले में बिल्कुल निर्दोष थे उन पर तत्काल निलंबन की कार्यवाही हो जाती है लेकिन जिन अधिकारियों की साक्ष्य सहित दर्जनों शिकायत की गईं है उन पर कोई कार्यवाही नही यह सिर्फ बड़े नेताओं का प्रभाव दबाव है वहीं किसान पंचायत के दौरान आला अधिकारियों ने जांच कर कार्यवाही की बात की थी लेकिन नेताओं के दबाव में वह अधिकारी गणों पर कार्यवाही तो नही कर पाए बल्कि आवाज उठाने वाले किसान नेताओं प्रधानों व पत्रकारों के विरुद्ध जरूर मुकदमा दर्ज करवा दिया गया अब यह जनता को देखना होगा कि उनके हितों की आवाज उठाने वालों पर वह लोग दबाव बना कर कार्यवाही करवा रहें है जिनको उसी जनता ने चुना है ।

जनता का शोषण करने वाले सरकार की लाभकारी योजनाओं को कमीशन की भेंट चढ़ाकर अपने पेट भरने वाले अधिकारी जनता की सुरक्षा में लापरवाह प्रभारी को बचाने में बड़े वही जिनको जनता ने चुना है वही मैदान में उतर गए है इसमें और भी सबसे बड़ी हकीकत यह भी है कि अधिकतर किसान नेता प्रधान पत्रकार ब्राह्मण है इसी लिए उनके आंदोलन को कुचलने का कुत्सित प्रयास है ताकि कोई ब्राह्मण नेता उनके क्षेत्र में भ्रष्ट सिस्टम के विरुद्ध आवाज न उठा सके इस बात का जवाब आने वाले समय जनता ऐसे नेताओं से जवाब जरूर मांगे साथ ही धान खरीद खाद की किल्लत जनपद के बजाज चीनी मिलों के बकाया गन्ना भुगतान आवारा गौवंश ट्राली पर लगाये गए जुर्माना कम्पाइन पर रोक पराली पर जुर्माना आदि समस्याओं पर प्रमुखता से अपनी बात रखते हुए किसान नेता श्यामू शुक्ला ने कहा इन सभी समस्याओं से किसानों को निजात दिलाने के नाम पर सत्तासीन वह नेता चुप है और जो किसान समस्याओं पर बोल रहे है उनकी आवाज को दबाने का काम कर रहें इसी क्रम में अब 25 नवम्बर को किसान पैदल कूच कर अपने प्रदेश के ईमानदार मुखिया के दरबार मे अपनी समस्या कहने जाएंगे समस्या हल होने तक हमारा आंदोलन मैगलगंज सिधौली में तब तक जारी रहेगा अगर हमको प्रसाशन व नेता मिलकर किसी फर्जी मामले में जेल भी भेज देंगे तब संगठन यह लड़ाई अंतिम सांस तक लड़ेगा।

डीएम ने फरियादियों की सुनी समस्याएं अधिकारियों को दिए निस्तारण कराने के निर्देश

कैनविज टाइम्स संवाददाता

सम्पूर्ण समाधान दिवस में प्राप्त 74 शिकायतों में 10 शिकायतों का मौके पर हुआ निस्तारण

रायबरेली। सलोन तहसील परिसर में जिलाधिकारी श्रीमती माला श्रीवास्तव की अध्यक्षता में सम्पूर्ण समाधान दिवस आयोजित किया गया। डीएम ने सम्पूर्ण समाधान दिवस में शिकायतकर्ताओं की समस्याओं को सुना और अधिकारियों को शिकायतें लंबित न रखे जाने के निर्देश दिए। इस अवसर पर पुलिस से संबंधित प्रकरणों को पुलिस अधीक्षक आलोक प्रियदर्शी ने सुना एवं संबंधित अधिकारियों को निस्तारण के निर्देश दिए। डीएम ने कहा कि जन समस्याओं के निस्तारण में लापरवाही किए जाने पर संबंधित अधिकारी के विरुद्ध कड़ी कार्यवाही की जाएगी। संपूर्ण समाधान दिवस के दौरान राजस्व विभाग, पुलिस विभाग तथा विकास विभाग सहित अन्य विभागों से संबंधित प्राप्त हुई। जिनके निस्तारण के लिए जिलाधिकारी ने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए। जिलाधिकारी ने अधिकारियों को निर्देश दिये कि ग्रामीणों के शिकायती पत्र प्राप्त होते ही तुरन्त कार्यवाही अमल में लाई जाए ताकि तत्समय मौके पर ही निस्तारण किया जा सके। उन्होंने कहा कि जन सामान्य के कल्याणार्थ संचालित विभिन्न सरकारी योजनाओं का लाभ पात्र लोगों को दिया जाना सुनिश्चित किया जाए। शासन द्वारा संचालित योजनाएं पात्र व्यक्ति तक अवश्य पहुंचनी चाहिए। तहसील सलोन के सम्पूर्ण समाधान दिवस में राजस्व विभाग की 24, पुलिस विभाग 11, विकास नौ, समाज कल्याण तीन, जिला पूर्ति कार्यालय तीन, सिंचाई विभाग एक, चकबंदी चार, नगर पंचायत व जल निगम में दो-दो, जिला पंचायत एक, वित्त आठ, कृषि विभाग तीन, लोक निर्माण विभाग एक सहित अन्य विभाग, कुल 74 शिकायत प्राप्त हुई। जिनमें से 10 शिकायतों का मौके पर निस्तारण किया गया। जिलाधिकारी ने कहा जिन विभागों की अन्य शिकायतों का मौके पर निस्तारण नहीं हो सका है संबंधित अधिकारी स्थलीय निरीक्षण कर शिकायतों का गुणवत्ता के साथ निस्तारण करना सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा जो भी निस्तारण किया जाए वह ससमय व गुणवत्तापूर्ण किया जाए, इसमें किसी भी प्रकार की शिथिलता व लापरवाही न बरती जाए। सम्पूर्ण समाधान दिवस के मौके पर मुख्य विकास अधिकारी श्रीमती पूजा यादव, मुख्य चिकित्साधिकारी डा वीरेन्द्र सिंह, एसडीएम व तहसीलदार आदि विभागीय अधिकारी मौजूद रहे। ऊंचाहार तहसील सभागार में शनिवार को एडीएम की अध्यक्षता में समाधान दिवस सम्पन्न हुआ। इस दौरान कुल 26 शिकायती पत्र आये जिसमें 2 शिकायती पत्रों का मौके पर निस्तारण किया गया। बाकी शिकायती पत्रों के निस्तारण के लिए टीम गठित कर मौके पर भेजी गई है। एडीएम एफआर पूजा मिश्रा ने आयोजित समाधान दिवस में फरियादियों की समस्याएं सुनी। कलेह निवासी जगदीश ने हकबरारी कराने हेतु प्रार्थना पत्र दिया तो धोबहा निवासी हनुमत ने दबंगों द्वारा सरकारी खड़ंजा उखाड़े जाने की शिकायत की, बैरी गोवर्धनपुर निवासी विवेक तिवारी ने बैनामा का पैसा न आने को लेकर प्रार्थना पत्र दिया, तो डिहवा गांव निवासिनी भगवन्ता देवी ने दरवाजे से घूरा हटवाने व जानमाल की सुरक्षा के सम्बंध में शिकायत की। इस मौके पर अपर पुलिस अधीक्षक विश्वजीत श्रीवास्तव, उपजिलाधिकारी आशीष कुमार मिश्र, कोतवाल सजंय कुमार त्यागी समेत अन्य लोग मौजूद रहे।

आरेडिका की खेल अधिकारी पदमश्री सुधा सिंह बनी 37वीं इन्दिरा मैराथन की विजेता

लालगंज (रायबरेली)। आधुनिक रेल डिब्बा कारखाने की खेल अधिकारी पद्मश्री सुधा सिंह ने 19 नवम्बर को प्रयागराज में आयोजित 37वीं इन्दिरा मैराथन में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। इस मैराथन का आयोजन पूर्व प्रधान मंत्री इन्दिरा गाँधी जयंती पर प्रत्येक वर्ष 19 नवम्बर को किया जाता है, इसमें पूरे देश भर के धावक अपनी प्रतिभा दिखाते हैं। इस 42.195 किमी लम्बी दौड़ में महिला वर्ग में सुश्री सुधा सिंह ने प्रथम स्थान प्राप्त किया है। आरेडिका के महाप्रबंधक शबृज मोहन अग्रवाल ने इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने के लिए सुधा सिंह को बधाई दी और कहा कि सुधा सिंह ने आरेडिका का ही नहीं अपितु भारतीय रेलवे एवं पूरे प्रदेश का नाम गौरवान्वित किया है। आरेडिका खेल-कूद संघ के अध्यक्ष एसके कटियार ने बताया कि इससे पूर्व भी सुधा सिंह कई मैराथनों में विजेता रह चुकी हैं। राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा दिखा चुकी हैं, इन की प्रतिभा का सम्मान करते हुए वर्ष 2021 में इन्हें पद्मश्री की उपाधि प्रदान की गयी। पदमश्री सुधा सिंह की उपलब्धि पर आधुनिक रेलकोच कारखाने के अधिकारियों कर्मचारियों ने प्रसन्नता जताई है।

समापन के बाद कन्या भोज का आयोजन

लालगंज (रायबरेली)। लालगंज ब्लाक के धनाभाद ग्राम में अनवरत रूप से चल रही सात दिवसीय भागवत कथा का शनिवार को समापन हो गया। हवन पूजन के बाद कन्या भोज का आयोजन हुआ। मथुरा से पधारे भागवत कथाचार्य धर्मदास ने बहुत ही सुन्दर तरीके से अपने मुखारविंद से भागवत कथा की अम्रत वर्षा की। समापन अवसर पर कथावाचक धर्मदास ने भक्तों को ईश्वर से जुड़ने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि कलयुग में भागवत कथा व रामकथा से ही मोक्ष मिल सकता है। प्राणी मात्र को भागवत कथा और राम कथा के माध्यम से परमपिता परमात्मा से जुड़ना चाहिए। आज भी जहां भागवत कथा और राम कथा होती है वहां भगवान के परमभक्त बजरंगबली हनुमान कथा सुनने के लिए किसी ना किसी रुप में जरूर पहुंचते हैं। भागवत कथा सुनने से ही पांडवों के वंशज राजा परीक्षित को मोक्ष मिला था तभी से पृथ्वी पर भागवत कथा आयोजित होती आ रही है। ग्राम प्रधान राजेश सिंह, रमाकांत शुक्ला, सुनील प्रताप सिंह, सोनेलाल ने कथाकार को अंगवस्त्र पहनाकर विदाई किया। सभी के सहयोग से कथा सम्पन्न हुई। इस मौके पर अशोक चंचल, राजेश मिश्रा, जनार्दन सिंह, अशोक शुक्ला आदि सैकड़ों भक्त गण मौजूद रहे।

कृषि विज्ञान केन्द्र में गोष्ठी व मेला 22 को

रायबरेली। कृषि विज्ञान केन्द्र दरियापुर में 22 नवंबर को जनपद स्तरीय गोष्ठी व मेला को आयोजन किया जाएगा। यह जानकारी देते हुए जिलाधिकारी श्रीमती माला श्रीवास्तव ने बताया कि मेला में कृषकों को जैविक खेती से संबंधित अत्याधुनिक कृषि तकनीकी ज्ञान कराये जाने के लिए कृषि के विभिन्न पहलुओं पर मौसमी फसलों की उत्पादकता बढ़ाने के उपाय पर विचार-विमर्श तथा उन्नत कृषि तकनीकी से अवगत कराया जाएगा। साथ ही कृषकों की समस्याओं के निराकरण का प्रयास किया जाएगा। उन्होंने उप कृषि निदेशक, समस्त उप संभागीय कृषि प्रसार अधिकारी से कहा है कि गोष्ठी में जनपद की आवश्यकतानुसार रणनीति बनाकर उत्पादन बढ़ाने के लिए कृषकों को प्रेरित किया जाए, ताकि शासन द्वारा निर्धारित मौसमी फसलों की उत्पादकता प्राप्त की जा सके।

यातायात जागरूकता माह पर निकाली गई बाइक रैली

रायबरेली। यातायात जागरूकता नवंबर माह को लेकर आज व्यापार मंडल डीह बग्गा गुट, अध्यक्ष पवन अग्रहरि की अध्यक्षता में व्यापारियों ने सैकड़ों मोटर साइकिल से रैली से निकाली। रैली को यातायात आशुतोष त्रिपाठी उपनिरीक्षक पुनीत मलिक ने हरी झंडी देकर रवाना किया।

चोरों ने घर से नगदी और जेवरात किया पार

महराजगंज (रायबरेली)। कोतवाली पुलिस गत माह हुई चोरियों का सुराग नहीं लगा पाई कि कस्बे से सटे गांव में बीती रात आंगन के रास्ते घर में घुसे चोरों ने नगदी सहित मोबाइल व जेवरात पार कर पुलिस को खुली चुनौती दी है। भुक्तभोगी ने इसकी तहरीर कोतवाली पुलिस को दी है। घटना कोतवाली क्षेत्र के कस्बे से लगे पूरे रानी मजरे अतरेहटा गांव की है। गांव निवासी विनय कुमार मौर्य पुत्र राजकुमार ने कोतवाली पुलिस को तहरीर देकर बताया है कि बीती रात आंगन के रास्ते घर में घुसे अज्ञात चोरों ने चार्जिंग में लगा एक स्मार्टफोन, चांदी के पायल व बिछिया तथा घर में रखे लगभग 9 हजार रुपए की नगदी पार कर दी। गौरतलब है कि कोतवाली पुलिस सितंबर में हुई चोरी की घटनाओं की पड़ताल कर ही रही थी कि अज्ञात चोरों ने कस्बे से सटे बीच गांव के एक घर में चोरी की घटना को अंजाम देकर कोतवाली पुलिस को खुली चुनौती दी है। भुक्तभोगी ने कोतवाली पुलिस को तहरीर देकर चोरी की घटना के खुलासे की मांग की है।

अज्ञात वाहन की टक्कर से बाइक सवार पति-पत्नी घायल

महराजगंज (रायबरेली)। नगर पंचायत में तैनात बाइक सवार सफाई कर्मी पति-पत्नी को सुबह-सुबह ड्यूटी पर आते समय अनियंत्रित कार सवार ने ठोकर मार दी। जिससे बाइक सवार पति-पत्नी गंभीर रूप से घायल हो गए। सूचना पर मौके पर पहुंचे नगर पंचायत अध्यक्ष प्रतिनिधि ने नगर पंचायत कर्मियों की मदद से घायल पति-पत्नी को सीएचसी पहुंचाया, जहां चिकित्सकों ने प्राथमिक उपचार के बाद गंभीर हालत को देखते हुए दोनों घायलों को जिला अस्पताल रेफर कर दिया। घटना कोतवाली क्षेत्र के महराजगंज-रायबरेली मार्ग पर सड़कहा गांव के पास की है। थुलवांसा गांव निवासी पति धर्मेन्द्र (35) व पत्नी प्रीति (32) महराजगंज नगर पंचायत में सफाई कर्मचारी हैं। वह वार्ड 10 जाकिर हुसैन नगर में शनिवार की सुबह साफ-सफाई के लिए पति-पत्नी सुबह बाइक पर सवार हो नगर पंचायत के लिए निकले थे। महराजगंज-रायबरेली मार्ग पर सड़कहा के पास अज्ञात चारपहिया वाहन ने बाइक में जोरदार टक्कर मार दी जिससे पति-पत्नी दोनों गंभीर रूप से घायल हो गए। मौके पर मौजूद राहगीरों ने दुर्घटना की सूचना नगर पंचायत अध्यक्ष प्रतिनिधि प्रभात साहू को दी। सूचना पर पहुंचे चेयरमैन प्रतिनिधि ने नगर पंचायत के लिपिक रामचंद्र व जमुना की मदद से दोनों घायलों को सीएचसी पहुंचाया, जहां चिकित्सकों ने हालत में सुधार न होने पर दोनों को जिला चिकित्सालय रेफर कर दिया।

मछली पकड़ रहे युवक की नइया में डूबकर मौत

महराजगंज (रायबरेली)। मछली पकड़ रहे युवक का पैर फिसलने से से नइया में जा गिरा जिससे डूबकर उसकी दर्दनाक मौत हो गयी। घटना की जानकारी मिलते ही परिजनों में कोहराम मच गया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा है। घटना कोतवाली क्षेत्र के कोटवा मदनिया गांव की है। गांव के हंसराज (35) पुत्र राम हरिद्वार गांव के पास की नैय्या में सुबह मछली पकड़ने गया था अचानक उसका पैर फिसल गया और वह नैय्या में जा गिरा जिससे उसकी डूबकर मौत हो गयी। पास से गुजर रहे गांव के ही एक युवक ने परिजनों को सूचना दी। मौके पर पहुँचे परिजनों ने शव को बाहर निकाला। ग्रामीणों की सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा है, मृतक के तीन पुत्र धीरेन्द्र (12), देवेंद्र (8) व मयंक (5) के सिर से पिता का साया उठ गया। गांव में सारा दिन सन्नाटा पसरा रहा।

शिक्षक संकुल की मासिक बैठक आयोजित

डलमऊ (रायबरेली)। शनिवार को न्याय पंचायत बरारा बुजुर्ग के प्राथमिक विद्यालय पूरे जबर विकास क्षेत्र डलमऊ में शिक्षक संकुल की मासिक बैठक आयोजित की गई। मासिक बैठक की अध्यक्षता एआरपी मोहम्मद इरफान खां ने की। शिक्षक संकुल सर्वेश कुमार शुक्ल, भूपेंद्र प्रताप, दुर्गेश मिश्र, प्रियंका यादव और न्याय पंचायत के समस्त प्रधानाधयपक और इंचार्ज प्रधानाध्यापक उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन शिक्षक संकुल सर्वेश कुमार शुक्ल द्वारा किया गया। सर्वप्रथम विद्या की देवी मां सरस्वती की पूजा अर्चन किया गया। बहन रेखा यादव द्वारा प्रार्थना की गई। एआरपी मोहम्मद इरफान खां द्वारा अभियान गीत प्रस्तुत किया गया। निपुण लक्ष्य के बारे में बताया गया। सभी शिक्षको से कहा गया की शारदा ऐप डाउन लोड कर ले, विद्यालय संबंधी समस्यायों को जल्द से जल्द हल किया जाय। कार्यक्रम का समापन शिक्षक संकुल दुर्गेश मिश्र द्वारा प्रेरक प्रसंग के माध्यम से सब का उत्साह वर्धन किया। टीएलएम पर भी जोर दिया गया। विद्यालय के इंचार्ज प्रधानाध्यापक संदीप यादव मौजूद रहे।

नाराज व्यापारियों ने एसडीएम को सौंपा ज्ञापन

ऊंचाहार (रायबरेली)। रेलवे प्रशासन के नगर स्थित रेलवे क्रासिंग को स्थाई रूप से बंद करने की कोशिश को लेकर नगर व्यापार मंडल ने विरोध जताते हुए एसडीएम व डीएम को ज्ञापन दिया है। व्यापार मंडल ने प्रशासनिक अधिकारियों को अवगत कराया है कि हाईवे की क्रासिंग बंद होने से लोगों को आवागमन में भारी दिक्कतें आएंगी। इससे स्कूली बच्चों को विशेष परेशानी होगी तथा व्यापार प्रभावित होगा। शिकायत को गंभीरता से लेते हुए डीएम ने 21 नवंबर को रेलवे अधिकारियों समेत व्यापार मंडल को मामले को लेकर बैठक बुलाई है। नगर व्यापार मंडल के अध्यक्ष धर्मेंद्र मौर्य ने जिलाधिकारी को बताया कि रेलवे प्रशासन ने मरम्मत के नाम पर नगर स्थित हाईवे की क्रासिंग को अस्थायी रूप से बंद कर दिया है। इससे लोगों को आवागमन बाधित हो गया है। रेलवे की मंशा इसे स्थाई रूप से बंद करने की है। जबकि इस गेट से संपूर्ण नगर समेत कई छोटे बड़े विद्यालयों के बच्चों का आवागमन होता रहा है। बैंक व पोस्ट ऑफिस आने जाने व मार्केटिंग के लोगों को परेशानी हो गई है। वहीं नगर के कुछ मुस्लिम समुदाय के लोगों का कब्रिस्तान भी रेलवे लाइन के उस पार स्थित है। जिन्हें वहां तक पहुंचने में चक्कर लगाने पड़ेंगे। हाईवे पर बना ओवरब्रिज संकरा है। इससे क्रासिंग ही एक मात्र लोगों के सुरक्षित आवागमन का रास्ता है। जिसे बंद करने से लोगों को आने जाने में कठिनाई का सामना करना पड़ेगा और दुर्घटना की आशंका बनी रहेगी। अध्यक्ष ने बताया कि इस समस्या को डीएम ने गंभीरता से लेते हुए समस्या के सर्वमान्य हल के लिए 21 नवंबर को रेलवे के साथ प्रशासन के अधिकारियों की बैठक बुलाई है। इस संबंध में व्यापार मंडल के प्रतिनिधि मंडल ने एक ज्ञापन समाधान दिवस में एसडीएम को सौंपा है। इस अवसर पर मंडल के संरक्षक श्रीनेवाज गुप्ता, महामंत्री राजू सोनी, एजाज अहमद, हरिशंकर साहू मौजूद रहे। जिसमें व्यापार मंडल के सदस्यों को भी बुलाया है।

सहकारी समितियों में डीएपी ने मिलने से किसान परेशान

ऊंचाहार (रायबरेली)। रवी फसल की बुआई जोरों से चल रही है। लेकिन किसानों को डीएपी उर्वरक के लिए लाले पड़ रहे हैं। क्षेत्र की सहकारी समितियों में डीएपी, यूरिया व पोटाश नहीं है। जिससे किसान निजी विक्रेताओं से मंहगे दामों पर खाद खरीदने के लिए विवश हैं। इसमें भी डीएपी व पोटाश में मिलावट होने की संभावना बनी रहती है। किसानों ने प्रशासनिक अधिकारियों से समितियों में उर्वरक उपलब्ध कराने की गुहार लगाई है। ऊंचाहार ब्लाक क्षेत्र में मतरौली, किशुनदासपुर, राम सांडा, खरौली, अरखा, सवैया हसन समिति के अलावा ऊंचाहार स्थित सहकारी संघ से किसानों को उर्वरक उपलब्ध कराने की व्यवस्था है लेकिन किसी भी समिति व संघ में रासायनिक खाद उपलब्ध नहीं है।

कांग्रेसियों ने इंदिरा गांधी को किया याद

कैनविज टाइम्स संवाददाता

रायबरेली। जिला एवं शहर कांग्रेस कमेटी की ओर से भारतरत्न पूर्व प्रधानमंत्री, लौह महिला श्रीमती इन्दिरा गांधी की जयंती पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए। शनिवार को इन्दिरा गांधी वानस्पतिक उद्यान व जिला पंचायत परिसर में स्थित इन्दिरा की प्रतिमा पर माल्यार्पण, जिला अस्पताल में पीसीसी सदस्य रवीन्द्र सिंह के सयोजकत्व में मरीजो को फल वितरण, वीरेन्द्र यादव पीसीसी सदस्य द्वारा इन्दिरा गांधी सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता एवं कांग्रेस कार्यालय तिलक भवन में इन्दिरा गांधी के चित्र पर माल्यार्पण एवं विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। जिलाध्यक्ष पंकज तिवारी ने विचार गोष्ठी को सम्बोधित करते हुए कहा कि श्रीमती इन्दिरा गांधी के बलिदान को देश हमेशा याद रखेगा। श्री तिवारी ने कहा कि इन्दिरा गांधी बचपन में ही ''बाल सेना'' बनाकर स्वतंत्रता आन्दोलनों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेती थी। इसके अलावां शहर अध्यक्ष धीरज श्रीवास्तव, प्रवक्ता महताब आलम, पूर्व जिलाध्यक्ष वीके शुक्ल, विजयशंकर अग्निहोत्री, निर्मल शुक्ल, सईदुल हसन, महताब आलम, अजीत सिंह, घनश्याम शुक्ला, आलोक विक्रम यादव, सुमित्रा रावत, राहुल बाजपेई, रूपेश कुमार, अभय सिंह, हाफिज रियाज, मोहित सिंह, सूर्य कुमार बाजपेई, पंकज सोनकर, मुन्ना घोसी उर्फ शकील अहमद, प्रमोद पाण्डेय, उस्मान घोसी, राकेश कुमार सहित अन्य कार्यकर्ता मौजूद रहे।

राही और अमावां ब्लॉक के बच्चों ने की साइंस एक्सपोजर विजिट

कैनविज टाइम्स संवाददाता

रायबरेली। जिले के अमावां और राही ब्लॉक के बच्चों ने लखनऊ पहुंच कर आंचलिक विज्ञान केंद्र की विजिट की। विज्ञान केंद्र बच्चों ने जहां विज्ञान के गुण सीखें तो वहीं कुछ नई चीजों को देखकर अपनी जिज्ञासा शांत की। यह सभी बच्चे राष्ट्रीय अविष्कार अभियान के तहत कराई गई क्विज प्रतियोगिता में प्रथम 50 स्थान प्राप्त करने वाले थे। जिन्हें एक्सपोजर विजिट के लिए शनिवार को लखनऊ ले जाया गया। बीईओ राही बृजलाल और रत्नामणि मिश्रा ने बताया कि यहां पर बच्चों को वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने के लिए पेपर गतिविधि अवतल, उत्तल लैंस, परावर्तन, प्रिज्म, वायुदाब से संबंधित दैनिक जीवन के प्रयोग के बारे में जानकारियां मिली। बता दें साइंस सिटी की सबसे बड़ी खासियत यह है कि यहां पर विज्ञान की संपूर्ण जानकारी मौजूद है। यहां पर फिजिक्स, केमिस्ट्री और बायोलॉजी इन तीनों ही विषयों की जानकारी बच्चे खेल-खेल में बड़ी ही आसानी से सीखते हैं। परिषदीय स्कूलों के छात्र पहुंच कर विज्ञान के हर पहलू से रूबरू हुए। यहां 50 बच्चों की टीम राही और अमावां ब्लॉक से पहुंची। राष्ट्रीय आविष्कार अभियान के अंतर्गत विकासखंड राही के 50 बच्चों ने आंचलिक विज्ञान केंद्र लखनऊ विजिट कराने की हरी झंडी खंड शिक्षा अधिकारी मुख्यालय वीरेंद्र कनौजिया ने दिखाई। इस मौके पर दिलीप, रविंद्र, अजय, विनीत, आशीष कुमार साहू, राजेश कुमार श्रीवास्तव, मनोज कुमार श्रीवास्तव, विनीता देवी, गीता देवी, सरोजिनी मौर्य, प्रीति वर्मा, अजीता सिंह सहित सहायक अध्यापक भी उपस्थित रहे। वहीं, अमावां ब्लॉक से एआरपी सलाउद्दीन अंसारी, रितेश कुमार, एसएस श्रीवास्तव, अब्दुल मन्नान, राजेश सिंह, ब्रजेन्द्र, संगीता, प्रतिमा सहित सभी बच्चे मौजूद रहे।

लक्ष्मीबाई की जयंती पर विचार गोष्ठी सम्पन्न

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लालगंज (रायबरेली)। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद लालगंज के तत्वाधान एवं जिला संयोजक नीलेश शुक्ला के संयोजन में वीरांगना महारानी लक्ष्मीबाई की जन्म जयंती पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद लालगंज के कार्यकर्ताओं ने भी वीरांगना महारानी लक्ष्मीबाई के प्रतीक के रूप में घोड़े पर सजीव झांकी सजाया। विद्यार्थी परिषद के कार्यक्रम में बोलते हुए ममता शर्मा ने कहा कि माध्यम से भी महिलाओं और खासतौर से छात्राओं को वीरांगना लक्ष्मीबाई के व्यक्तित्व और विचारों से प्रेरणा लेने की जरूरत है उनके द्वारा राष्ट्रहित में किए गए कार्यों को आत्मसात करने की आवश्यकता है। तभी इस विचार गोष्ठी की महत्ता सार्थक होगी। उन्होंने कहा कि रानी लक्ष्मीबाई ने मात्र 14 वर्ष की उम्र में क्रांतिकारी जीवन अपना लिया था और अपने जौहर से ब्रिटिश साम्राज्य को हिला कर रख दिया था। क्रांतिकारी मंगल पांडे के साथ मिलकर अंग्रेजो के खिलाफ उन्होंने जो बिगुल छेड़ा था उससे अंग्रेज भी घबरा गए थे। बाद में ऐसे वीरों की वीरता की वजह से ही हिंदुस्तान आजाद हुआ और हम सब आज खुली हवा में सांस ले रहे हैं। जिला संयोजक नीलेश शुक्ला ने कहा कि हम सबको ऐसी गोष्ठियों से संस्कारित अनुशासन जीवन जीने की प्रेरणा मिलती है। हम सबको वीरांगना लक्ष्मीबाई की अद्भुत क्रांतिकारी क्षमता, साहस और वीरता से प्रेरणा लेकर राष्ट्र के लिए कार्य करना चाहिए। कार्यक्रम के मौके पर तहसील संयोजक आदित्य शेखर सिंह, अभय सिंह, सोमदत्त मिश्रा, शुभम सैनी, खुशी सिंह, जया शुक्ला, भोलानाथ बाजपेई, सिम्मी, तान्या सहित अन्य महिला शक्ति मौजूद रही।

शॉर्ट सर्किट से कपड़े की दुकान में लगी आग

कैनविज टाइम्स संवाददाता

बछरावां (रायबरेली)। कस्बे की राजामऊ रोड पर स्थित जनता क्लॉथ हाउस में बीती रात भीषण आग लग गई। जिसमें रखें कपड़ों सहित डेढ़ करोड़ रुपए की संपत्ति का नुकसान बताया जा रहा है। लगभग 4 घंटे के बाद अग्निशमन विभाग के कर्मचारियों ने आग पर काबू पाया। राजामऊ रोड पर प्रशांत मिश्रा की जनता क्लॉथ हाउस के नाम से दुकान है। दुकान में रेडीमेड कपड़ों के अलावा ऊनी कपड़े तथा अन्य कपड़ों की बिक्री होती है। रात 10 बजे के करीब प्रशांत अपनी दुकान बंद कर घर चले गए। इसी बीच रात एक बजे के करीब दुकान से आप की लपटों को देखकर तत्काल दुकान मालिक को पड़ोसियों ने सूचित किया और मौके पर आनन-फानन पुलिस के साथ

आग से दुकान में रखी डेढ़ करोड़ रुपए की संपत्ति जलकर नष्ट

अग्निशमन विभाग के चार गाड़ियां भी पहुंची। चार घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया जा सका। इस अग्निकांड में कपड़े सहित डेढ़ करोड़ के संपत जलकर राख हो गई। थानाध्यक्ष जगदीश यादव ने बताया कि प्रथम दृष्टया मामला शॉर्ट-सर्किट से आग लगने का कारण प्रतीत हो रहा है। उन्होंने कहा कि मामले की जांच की जा रही है।

एनएसपीएस में मनी वीरांगना लक्ष्मीबाई और इंदिरा गाँधी की जयंती

कैनविज टाइम्स संवाददाता

रायबरेली। न्यू स्टैंडर्ड पब्लिक स्कूल सीनियर सेकेंडरी स्कूल त्रिपुला में प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की अमर वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई और भारत की प्रथम महिला प्रधानमंत्री माननीय इंदिरा गाँधी की जयंती उत्साह पूर्ण ढंग से मनाई गई। विद्यालय में आयोजित एक समारोह में विद्यालय के प्रधानाचार्य शिवलखन प्रजापति ने अमर वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई और लौह महिला इंदिरा गाँधी के चित्र पर माल्यार्पण करते हुए उन्हें श्रद्धा-सुमन अर्पित किए। इस अवसर पर विद्यालय की छात्रा निहारिका, अनन्या, जान्ह्वी, दीपशिखा, श्रद्धांजलि आराध्या, वर्षा, किंजल सोनी एवं छात्र अनुभव, आयुष, पियूष, वेदांत, प्रजन्य, अभय आदि ने महारानी लक्ष्मीबाई और इंदिरा गाँधी की जीवन शैली पर आधारित एक लघु नाटिका प्रस्तुत कर उनके अपूर्व साहस और शौर्य का परिचय दिया। कार्यक्रम के अंत में प्रधानाचार्य ने अपने उद्बोधन में कहा कि वर्तमान परिवेश में महिलाओं को अपनी संस्कृति, सम्मान एवं अस्मिता के लिए महारानी लक्ष्मीबाई और श्रीमती इंदिरा गाँधी के व्यक्तित्व से प्रेरणा लेते हुए जीवन सफर में साहस के साथ आगे बढ़ते रहना चाहिए। संचालन विद्यालय की शिक्षिका कल्पना बाजपेई के नेतृत्व में छात्रा गौरंगी मिश्रा व शताक्षी श्रीवास्तव ने किया। इस अवसर पर उप-प्रधानाचार्य मो फैजान खान, सीएस दास मिश्रा, संयोजिका संचिता त्रिवेदी, शाहीन खान, पिंकी जायसवाल, अवधेश शर्मा, रामदेव, बालजी पाण्डेय, शिवकरन पाल, गिरीश श्रीवास्तव सहित समस्त शिक्षक-शिक्षिकाएं, विद्यार्थी एवं शिक्षणेत्तर कर्मचारी उपस्थित रहे। न्यू स्टैण्डर्ड बालिका विद्या मन्दिर में महान वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई और भारत की प्रथम महिला प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की जयंती के अवसर पर विद्यालय के प्रधानाचार्य तारकेश्वर सिंह सहित हेड-मिस्ट्रेस संध्या अग्रवाल एवं सभी शिक्षक-शिक्षिकाओं ने पुष्पांजलि अर्पित कर नमन किया। इस अवसर पर स्कूल के बच्चों में से अनिका सिंह ने रानी लक्ष्मीबाई, विदिशा सिंह ने श्रीमती इन्दिरा गांधी के किरदारों को जीवन्त रूप में दर्शाया। स्कूल की छात्राएं तैय्यबा फातिमा एवं निधि कुमारी ने अपने साथियों को रानी लक्ष्मीबाई और श्रीमती गांधी के जीवन से जुड़ी आद्योपान्त जानकारियां दीं। इस अवसर पर मायाकान्त दीक्षित, प्रमान्शु श्रीवास्तव, रमाशंकर पाठक, साधना मिश्रा, सृष्टि पांड्या, अजय मिश्रा, अमित सिंह, दीपक गुप्ता, रजंना बाजपेई, शिप्रा सिंह, ललित मोहन, बिन्दु सिंह सहित विद्यालय परिवार उपस्थित रहा।

निकाह करो नहीं तो पूरे परिवार की हत्या कर दूंगा!

लालगंज (रायबरेली)। शनिवार को आयोजित तहसील दिवस में एक दूसरे संप्रदाय की बालिका ने गांव के ही एक मुस्लिम युवक के ऊपर छेड़खानी सहित जबरन निकाह का दबाव बनाने के मामले की शिकायत पेश की जिसमें सीओ ने आरोपी युवक के खिलाफ थानाध्यक्ष खीरों को कार्यवाही करने के निर्देश दिए हैं। मामला खीरो थाना क्षेत्र के रायगढ़ गांव का है। मामले की आप बीती बताते हुए पीड़ित छात्रा ने बताया कि उसके गांव का एक मुस्लिम युवक असलम पुत्र जहूर उसे स्कूल आते-जाते छेड़ता है। साथ ही गलत काम का भी जबरन दबाव बनाता है और कहता है कि धर्म परिवर्तन कर मेरे साथ निकाह कर लो नहीं तो तुम्हारी और तुम्हारे परिवार की हत्या कर दूंगा। पीड़ित छात्रा दूसरे संप्रदाय से ताल्लुक रखती है। पीड़ित छात्रा ने इसके पहले पुलिस अधीक्षक के यहां भी प्रार्थना पत्र देकर न्याय की गुहार लगाई थी लेकिन मामले में पुलिस कार्यवाही करने से बचती नजर आ रही है। थक हार कर शनिवार को पीड़ित बालिका लालगंज तहसील में आयोजित संपूर्ण समाधान दिवस में पहुंची, जहां उसने फिर से प्रार्थना पत्र देकर न्याय की गुहार लगाई है।

झाड़-फूंक के बहाने मौलवी करता रहा महिला से रेप नाबालिग बेटी के साथ भी की अश्लील हरकत

कैनविज टाइम्स संवाददाता

गोंडा। जिले से एक सनसनीखेज मामला सामने आया है. यहां एक मौलवी ने जिन्न का डर दिखाकर 38 वर्षीय महिला के साथ छह महीने तक दुष्कर्म किया. यही नहीं उसने महिला की नाबालिग बेटी के साथ भी अश्लील हरकत की. जिले के सिविल लाइन चौकी काशीराम कॉलोनी में झाड़-फूंक के नाम पर शर्मसार करने वाली घटना सामने आई है. एक मौलवी झाड़-फूंक का बहाना बताकर नगर कोतवाली क्षेत्र की काशीराम कॉलनी में रहने वाली 38 वर्षीय महिला के घर में जाने लगा. उसने जिन्न का डर दिखाकर महिला के साथ छह महीने तक दुष्कर्म किया. यही नहीं आरोपी मौलवी मोहम्मद जैनुल आबदीन दुष्कर्म पीड़िता की 14 वर्षीय नाबालिग बेटी को अपने घर पर खाना बनाने के बहाने ले गया. जहां वो नाबालिग के साथ भी अश्लील हरकत करता रहा.जब पीड़िता के भाई ने उसे अश्लील हरकत देख लिया, तो उसने मौलवी को अपने घर आने से मना कर दिया था. आरोप है कि इससे नाराज मौलवी ने लड़के को फांसी लगाकर पेड़ से लटका दिया था. उसके बाद इलाज के लिए ले जाते समय लड़के की मौत हो गई थी. पुलिस ने पोस्टमार्टम करवाया था, लेकिन अभी तक कार्यवाही नहीं की गई है. लेकिन शुक्रवार को पीड़िता और उसकी बेटी ने पुलिस अधीक्षक आकश तोमर से मिलकर न्याय की गुहार लगाई और आरोपी मौलवी पर कार्रवाई की मांग की है। फिलहाल कोतवाली नगर पुलिस आरोपी के खिलाफ 376, 354, 304, 323, 504, 506, पॉक्सो एक्ट और एससी एसटी एक्ट की धारा के तहत मामला दर्ज कर जांच में जुट गई है।

पीड़ित महिला बोली मौलवी ने मेरी बेटी के साथ भी की अश्लील हरकत

पीड़ित महिला ने बताया कि उसके घर के सामने मौलवी मजार बनाकर रहता है और झाड़-फूंक के बहाने हमारे घर में आता था. उसने मेरे साथ गलत काम किया. इतना ही नहीं खाना बनाने के बहाने वो मेरी बेटी को ले जाता था और उससे भी अश्लील हरकत करता था. मौलवी की पत्नी दो महीने पहले घर छोड़ कर भाग चुकी है. मेरी बेटी से अश्लील हरकत करते जब उसके भाई ने देखा तो नाराज मौलवी ने उसको फांसी के फंदे पर लटका दिया. इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई है. पुलिस ने अभी तक कोई कार्यवाई नहीं की है हम चाहते हैं कि हमको न्याय मिले।

गोंडा पुलिस ने किया मौलवी को गिरफ्तार

वहीं इस पूरे मामले पर सीओ सिटी लक्ष्मकांत गौतम ने बताया कि 17 नवंबर को पीड़िता ने थाना कोतवाली नगर में मोहम्मद जैनुल आबदीन द्वारा झाड़-फूंक के बहाने जबरन संबंध बनाने व अन्य गंभीर आरोप लगाते हुए प्रार्थना पत्र प्रस्तुत किया था. जिसके आधार पर सुसंगत धाराओं में मामला दर्ज करते हुए आरोपी मोहम्मद जैनुल आबदीन को गिरफ्तार कर लिया गया है. इस मामले में कानूनी कार्रवाई की जा रही है ।

आंखें है अनमोल इनका रखें विशेष ख्याल : डॉ. संजीव कुमार

कैनविज टाइम्स संवाददाता

बहराइच। आंखे अनमोल है।इन्हें बचाने के लिए हमेशा सजग रहना चाहिए।हमारी आंखें दुनिया की खूबसूरत नजारे को दिखाने वाली एक विंडो की तरह होती हैं।आंखें शरीर के सबसे नाजुक अंगों में से एक हैं।इसे ईश्वर के विशिष्ट उपहार के रूप में भी जाना जाता है, जिसकी मदद से हम दुनिया की खूबसूरती का आनंद ले पाते हैं। आंखों को स्वस्थ रखने के लिए इसके विशेष देखभाल की आवश्यकता होती है, क्योंकि इसमें होने वाली छोटी से भी समस्या बड़ी मुसीबतों का कारण बन सकती है। आंखों की देखभाल करने की दिशा में पहला कदम इसके जोखिम और आने वाली समस्याओं के संकेतों से अवगत होना है। पिछले कुछ समय में जीवनशैली और आहार से संबंधित समस्याओं के कारण आंखों से संबंधित कई तरह की बीमारियों का जोखिम बढ़ गया है। इसके शुरुआती लक्षणों की पहचान कर रोग को गंभीर रूप लेने से बचाया जा सकता है।एक साक्षात्कार के दौरान नेत्र रोग सर्जन डॉ. संजीव कुमार ने बताया कि आंखों में होने वाली किसी भी तरह की समस्या को नजरअंदाज नहीं किया जाना चाहिए।

अगर समय रहते समस्या का निदान हो जाए तो न सिर्फ आंखों को स्वस्थ रखने में मदद मिलती है साथ ही लंबे समय तक रोशनी को बनाए रखना भी आसान हो जाता है।

उन्होंने बताया कि मोतियाबिंद से ज्यादा मरीज इस समय कार्नियल अल्सर के उनके पास आ रहे है।कॉर्नियल अल्सर अधिकतर एक जीवाणु संक्रमण के कारण होते हैं जो कॉर्निया में अक्सर फंगल अल्सर,आंख की चोट,आघात या अन्य क्षति के बाद घुसपैठ करता है।कॉन्टैक्ट लेंस पहनने वाले लोग आंखों में जलन व खुजली के प्रति विशेष रूप से संवेदनशील होते हैं जो बढ़ कर कॉर्नियल अल्सर का रूप ले सकती है। ऐसा संभव है कि कॉन्टैक्ट लेंस आंख की सतह से रगड़ खा कर एपिथिलियम को थोड़ी क्षति पहुंचा दे जिससे जीवाणु को आंख में घुसने का मार्ग मिल जाए।उन्होंने बताया कि काम करते समय 20 मिनट के अंतराल पर 20 सेकंड्स तक 20 बार पलक को खोलना बन्द करना चाहिए जिससे आंखों में आंसू की पर्याप्त मात्रा बनी रहे।उन्होंने बताया कि मोतियाबिंद रोग उम्र वाला कम हो रहा जबकि दवाओं के प्रभाव के कारण ज्यादा हो रहा है।उन्होंने स्टॉइड दवा के सेवन से दूर रहने के लिए बताया।उन्होंने बताया कि सबसे ज्यादा बच्चों को आंखों में समस्यायें आ रही है जिसका मुख्य कारण मोबाइल है।डॉ. संजीव ने बताया कि जनपद में शीघ्र कार्निया ट्रांसप्लांट की सुविधा उपलब्ध हो जाएगी जिससे गम्भीर मरीजो को बाहर नही जाना पड़ेगा।उल्लेखनीय हो कि नेत्र सर्जन डॉ. संजीव कुमार के शहर स्थित बंजारी मोड़ पर शिवम नेत्रालय में बच्चों की आंखो से संबंधित सर्जरी सुविधा से लेकर अन्य सुविधाएं उपलब्ध है।

सदर तहसील में आए 126 फरियादी 6 का निराकरण

कैनविज टाइम्स संवाददाता

गोरखपुर। शासन के निर्देश पर महीने के पहले व तीसरे शनिवार को संपूर्ण समाधान तहसील दिवस के सदर तहसील में ज्वाइंट मजिस्ट्रेट/ एसडीएम सदर कुलदीप मीना की अध्यक्षता में फरियादियों की समस्याओं को सुना गया,और संबंधित को निर्देश दिया गया। शनिवार को तहसील सदर सभागार में कुल 126 फरियादी अपनी अपनी फरियाद लेकर ज्वाइंट मजिस्ट्रेट /एसडीएम सदर कुलदीप मीना के पास पहुंचे ज्वाइंट मजिस्ट्रेट ने प्रत्येक फरियादियों की बारी बारी से समस्याओं से अवगत होते हुए संबंधित को निस्तारण करने का निर्देश दिया। तहसील सदर सभागार में 12 बजे तक कुछ थाने के प्रतिनिधि नहीं पहुंचे थे जिसको लेकर ज्वाइंट मजिस्ट्रेट ने नाराजगी व्यक्त करते हुए संबंधित थाने पर कारण बताओ नोटिस संबंधित को जारी करने का निर्देश दिया। 12 बजे तक उक्त थाने का कोई भी प्रतिनिधि सदर तहसील सभागार में उपस्थित क्यों नहीं हुआ क्यों ना उनके खिलाफ कड़ी से कड़ी कार्रवाई की जाए वैसे तो लगभग 1 बजे तक अनुपस्थित रहने वाले थाने के प्रतिनिधि उपनिरीक्षक पहुंच गए लेकिन इनकी वजह से उस थाने के अन्तर्गत आए हुए फरियादियों की समस्याओं का निराकरण नहीं हो सका आज सदर तहसील सभागार में कुल 6 फरियादियों की समस्याओं का निराकरण किया गया ज्यादातर मामले भूमि विवाद व न्यायालय में विचाराधीन वाद के आए थे। सदर तहसील सभागार में सदर तहसीलदार विनोद सिंह व संबंधित विभागों के संबंधित अधिकारी व कर्मचारीगण मौजूद रहे।

महिला ग्राम पंचायत अधिकारी का ऑडिओ वायरल कमीशन मांग रही हूं आपके बाप की कमाई नहीं

कैनविज टाइम्स संवाददाता

नंदनी मौर्या, ग्राम पंचायत अधिकारी

गोड़ा। विकास खंड कर्नलगंज ग्राम पंचायत अधिकारी नंदिनी मौर्या और ग्राम प्रधान प्रतिनिधि के बीच कमीशन को लेकर हुई तीखी नोकझोंक की एक ऑडियो क्लीप सोशल मीडिया पर वायरल हो रही है।वायरल ऑडियो क्लीप में ग्राम पंचायत अधिकारी नंदिनी मौर्या कह रही है कि एक रुपये आप मेरा कमीशन का दिए। हम आपके बाप की कमाई मांग रहे है क्या?। कमीशन को लेकर हो रही बहस का ऑडियो क्लीप सोशल मीडिया पर वायरल होने पर अधिकारी भी सकते में हैं। बता दें कि सोशल मीडिया पर जो ऑडियो क्लीप वायरल हो रही है वो दो मिटन 20 सेकंड की है। हालांकि समाजवादी पार्टी के ऑफिशियल ट्विटर हैंडल से ट्वीट करते हुए प्रदेश की योगी आदित्यनाथ सरकार पर निशाना साधा गया है। समाजवादी पार्टी ने ट्वीट करते हुए कहा, योगीराज में नख से शिख तक भ्रष्टाचार व्याप्त है, योगी जी भ्रष्टाचार मुक्ति के लाख दावे करें लेकिन सच्चाई यह है कि योगीराज में भ्रष्टाचार कई गुना बढ़ गया है। ये योगी जी के जीरो टॉलरेंस की सच्चाई है! शर्म करें!

क्या है यह पूरा मामला ?

यह मामला जिले के कर्नलगंज के फत्तेपुर गांव का है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, यह ऑडियो क्लीप ग्राम पंचायत अधिकारी नंदिनी मौर्या व ग्राम पंचायत फत्तेपुर की प्रधान जफरुल निशा का काम देख रहे विवेक श्रीवास्तव के बीच नोकझोंक का हैं। ऑडियो क्लीप में प्राथमिक विद्यालय फत्तेपुर, प्राथमिक विद्यालय मोहम्मदपुर कमियार, एएनएम सेंटर के भवन के मरम्मत में चार लाख रुपये खर्च होने की बात हो रही है। वायल क्लीप में ग्राम पंचायत अधिकारी चहेती फर्म पर भुगतान चाह रही थी।

अपना कमीशन मांग रही हूं...

वायरल ऑडियो क्लीप में ग्राम पंचायत अधिकारी सचिव नंदिनी मौर्या, प्रधान के सहयोगी बताए जा रहे युवक से फोन पर कॉल करके एक लाख एक हजार रुपये कमीशन अपनी चहेती फर्म के नाम भुगतान करने का दबाव बनाया। आडियो में कह रही है कि एक रुपये आप मेरा कमीशन का दिए। हम आपके बाप की कमाई मांग रहे है क्या?। इसी के साथ आखिरी भुगतान होने की, और बीडीओ के यहां मिलने की धमकी भी दी।

ऑडियो वायल होने पर बीडीओ ने मांगा स्पष्टीकरण

ग्राम प्रधान ने विकास कार्य के लिए आए सरकारी धन में कमीशन मांगने वाली ग्राम पंचायत अधिकारी के विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज करवा कर कार्रवाई किए जाने की मांग की है। खंड विकास अधिकारी श्रीकांत तिवारी ने कहा कि ग्राम पंचायत अधिकारी को पत्र देकर तीन दिवस के अंदर वायरल बातचीत के संबंध में स्पष्टीकरण मांगा है। अभी उनका जवाब नहीं मिला है। सचिव के बीमार होने की बात सामने आई है। जवाब न मिलने पर कार्रवाई की जाएगी।

कमीशन के आरोप को गलत बताया

उधर, ग्राम पंचायत अधिकारी नंदिनी मौर्या ने अपने ऊपर लगाए गए आरोपों को बेबुनियाद बताया है। कहा कि विवेक श्रीवास्तव ने ऑडियो को काट छांटकर बनाया है। बदनाम करने व दबाव बनाकर भुगतान कराने के लिए ऑडियो को वायरल किया गया है। उन्होंने जांच में सहयोग किए जाने की बात कही है।

डीएम की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ समाधान दिवस

कैनविज टाइम्स संवाददाता

कैसरगंज बहराइच । जन शिकायतों के त्वरित निस्तारण के लिए प्रत्येक माह प्रथम एवं तृतीय शनिवार को आयोजित होने वाले सम्पूर्ण समाधान दिवसों की कड़ी में तहसील कैसरगंज में आयोजित सम्पूर्ण समाधान दिवस में जिलाधिकारी डॉ. दिनेश चन्द्र ने मुख्य विकास अधिकारी कविता मीना, अपर पुलिस अधीक्षक कुवंर ज्ञानन्जय सिंह, उप जिला अधिकारी महेश कुमार कैथल, पुलिस क्षेत्राधिकारी कमलेश कुमार सिंह व अन्य अधिकारियों के साथ आए हुए फरियादियों के समस्याओं की गंभीरता पूर्वक सुनवाई करते हुए संबंधित अधिकारियों को समयबद्धता के साथ गुणवत्तापरक निस्तारण के निर्देश दिए गए।

जिलाधिकारी डॉ. चन्द्र ने कहा कि जनसमस्याओं का निस्तारण आने वाले फरियादियों के समस्याओं की गम्भीरता पूर्वक सुनवायी कर उसका सयमबद्धता के साथ निस्तारण सुनिश्चित कराये ताकि फरियादी को अनावश्यक रूप से भाग-दौड़ न करनी पड़े। राजस्व विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए गए कि वरासत से सम्बन्धित प्रकरणों का त्वरित निस्तारण सुनिश्चित करें। सम्पूर्ण समाधान दिवस के अवसर पर डीएम डॉ. चन्द्र द्वारा सीडीओ व अन्य के साथ ग्राम बदरौली,मूसेपुर, गोड़हिया नं.02,आशार चुलम्भा,खालेपुर बबुरी, ढड़ैला, कन्दैला, पवना, बुढ़ानपुर व कुण्डासर के बाढ़ प्रभावित 38 ग्रामवासियों को सरसो व मसूर बीज के मिनी किट का वितरण किया गया। इसके अलावा ग्राम तवक्कलपुर के अजय यादव, कहरई के रोहित कुमार, एनिहतिन्सी की बेवा मीना देवी व हशमुद्दीन को खतौनी की नकल तथा ग्राम नत्थनपुर के बिगई, जगदीश प्रसाद, दीनानाथ पुत्रगण राम मनोरथ, बसहिया पाते के जानकी प्रसाद व फतेह बहादुर पुत्र कोरी लाल, परसोहर के आसमां पत्नी शमशुद्दीन एवं भिलौरा बासू की मनीषा पुत्र आशाराम के नाम दुरूस्त कर खतौनी की नकल का वितरण किया गया।

जबकि डिहवा शेर बहादुर सिंह के शिव प्रसाद, जतौरा के उदय राज व चौगइया के जगन्नाथ को तालाब आवंटन प्रमाण-पत्र का वितरण किया गया। सम्पूर्ण समाधान दिवस कैसरगंज में प्राप्त 131 मे 9 प्रार्थना-पत्रों का निस्तारण मौके पर किया गया।सम्पूर्ण समाधान दिवस पर विभागों द्वारा लगाये गये प्रदर्शनी स्टाल

10 गर्भवती महिलाओं की हुई गोद भराई पांच बच्चों का हुआ अन्नप्रासन

तहसील कैसरगंज में आयोजित सम्पूर्ण समाधान दिवस के अवसर पर चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग, आईसीडीएस, समाज कल्याण, पूर्ति, प्रोबेशन, दिव्यांगजन सशक्तिकरण व अन्य विभागों द्वारा विभागों द्वारा लगाए गए प्रदर्शनी स्टालों का जिलाधिकारी डॉ. दिनेश चन्द्र व मुख्य विकास अधिकारी कविता मीना ने अन्य अधिकारियों के साथ निरीक्षण कर मौजूद अधिकारियों से आवश्यक जानकारी प्राप्त की। अस अवसर पर आईसीडीएस के स्टाल के निरीक्षण के दौरान डीएम ने अन्नप्रासन भी कराया।इस अवसर पर मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा. एस. के सिंह,जिला विकास अधिकारी महेंद्र पांडे, पीडीडीआरडीए पी.एन. यादव, तहसीलदार अमर चन्द वर्मा सहित अन्य जिला स्तरीय अधिकारी,बीडीओ,बीईओ, सीडीपीओ व थानाध्यक्षगण मौजूद रहे।

एसएसपी सीडीओ ने तहसील में फरियादियों की सुनी समस्या

कैनविज टाइम्स संवाददाता

गोरखपुर। सम्पूर्ण समाधान तहसील दिवस कैंपियरगंज तहसील में वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक डॉ गौरव ग्रोवर की अध्यक्षता में आए फरियादियों की समस्याओं का निराकरण किया गया। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक प्रत्येक फरियादियों से उनके समस्याओं से रूबरू होते हुए संबंधित विभागों के अधिकारियों को संबंधित फरियादियों के समस्याओं के निराकरण करने के लिए निर्देशित किया ताकि आए हुए फरियादियों की समस्याओं का गुणवत्ता युक्त निस्तारण हो सके,और बार-बार फरियादी को तहसील का चक्कर न लगाना पड़े और फरियादी के समस्याओं का गुणवत्ता युक्त निस्तारण हो सके शासन का मकसद है कि आए हुए फरियादियों की समस्याओं का समाधान एक छत के नीचे एक ही दिन में निस्तारित करे जिससे फरियादी को इधर-उधर ऑफिसों का चक्कर न लगाना पड़े फरियादियों को संतुष्ट करना अधिकारियों का दायित्व है आज तहसील में पारिवारिक, भूमि, बिजली संबंधित विवाद आए थे। तहसील सभागार कैंपियरगंज में सीडीओ संजय कुमार मीना क्षेत्राधिकारी कैंपियरगंज योगेंद्र सिंह कार्यवाहक एसडीएम कैंपियरगंज,अपर एसडीएम सदर पवन कुमार सीएमओ आशुतोष दुबे सहित संबंधित अधिकारीगण मौजूद रहे।

निःशुल्क दन्त परीक्षण शिविर आयोजित

कैनविज टाइम्स संवाददाता

बहराइच। भारत विकास परिषद शाखा बहराइच ने परिषद परिवार की सदस्या श्रीमती मंजू निगम के विद्यालय आर आर एस्पायर अकादमी लखनऊ रोड में बहराइच के दंत विशेषज्ञ एवं परिषद परिवार के सदस्य डॉ आनन्द केसरवानी और डॉ स्वाति त्रिवेदी के द्वारा बच्चों का दंत परीक्षण किया गया जिसमे बच्चो के दांतो का वृहद परीक्षण किया गया तथा बच्चो को अपने दांतों की देखभाल के लिए विस्तारपूर्वक बताया गया । इस दंत परीक्षण के बाद डा स्वाति द्वारा सभी बच्चो को ठीक से दांत साफ करने की तकनीक भी बताई । परिषद द्वारा एक पत्रक भी बच्चों को वितरित किया गया जिसमे दांतो की देखभाल के लिए उपयोगी सुझाव दिए गए हैं। इस दंत कैंप में लगभग 56 बच्चो का परीक्षण किया गया और उन्हें दांतो की देखभाल को लेकर गाइड किया गया ।

इस कार्यक्रम में शाखा अध्यक्ष अनिल गोयल, मीडिया प्रभारी और कार्यक्रम संयोजक अभिषेक गुप्ता और डा प्रियंका सिंह, सत्य प्रकाश जायसवाल, शिवराम यज्ञ सैनी, सरोज गोयल, श्रीमती मंजू निगम आदि लोग उपस्थित रहे।

घरेलू गैस सिलेंडर की होम डिलीवरी में जमकर हो रही हो ओवररेटिंग

प्रशासन मौन

कैनविज टाइम्स संवाददाता

- घरेलू गैस सिलेंडर का धड़ल्ले से हो रहा व्यावसायिक उपयोग, नहीं हो रही कार्रवाई
- घरेलू गैस सिलेंडर का उपयोग घरेलू रूप से होने की बजाय व्यवसायिक रूप से अधिक होने लगा है

गोंडा । जिले में घरेलू गैस सिलेंडर की मांग और कीमत दोनों तेजी से बढ़ रही है। हालांकि निर्धारित कीमत से अधिक पैसा देने पर सिलेंडर लेने के लिए गैस गोदामों में लाइनों में नहीं लगना पड़ता और सिलेंडर घर बैठे हॉकर दे जाते हैं। वैसे, तो सिलेंडर लेने के समय ही सिलेंडर घर तक डिलेवर करने का शुल्क एजेंसी में ले लिया जाता है, लेकिन हॉकर को कुछ राशि सिलेंडर घर तक पहुंचाने की देना होती है। कुछ जगहों पर यह राशि सही मानी जा सकती है, क्योंकि हॉकर घर के भीतर तक सिलेंडर पहुंचाने में खासी मेहनत करनी होती है, लेकिन उस वक्त अतिरिक्त पैसा देना ठीक नहीं लगता, जब सहूलियत से सिलेंडर लिया जा रहा हो।इधर बगैर नवंबर के सिलेंडर भी बहुत आसानी से मिल जाता है। हॉकर को फोन करने पर वह घर के दरवाजे पर सिलेंडर लेकर मिनटों में पहुंच जाता है। इस सब के बीच दिनोंदिन बढ़ रही कीमतों के पीछे एक और मुख्य वजह यह सामने आई है कि जैसे जैसे सिलेंडर की मांग बढ़ रही, तो इसकी कीमत भी बढ़ती जा रही है। इस समय सिलेंडर 1110. में मिल रहा है, जो हॉकर द्वारा घर पर पहुंचाए जाने पर 1150. वा 1200 तक हो जाता है।मामले की पड़ताल में सामने आया है कि घरेलू गैस सिलेंडर का उपयोग घरेलू रूप से होने की बजाय व्यवसायिक रूप से अधिक होने लगा है। जबकि व्यवसायिक रूप से गैस का उपयोग किए जाने के लिए कॉमर्शियल सिलेंडर होते हैं, लेकिन इनका उपयोग न के बराबर होता है और 90 फीसदी स्थानों पर घरेलू गैस का उपयोग होता है। कैनविज टाइम्स द्वारा कुछ जगहों पर फोकस किया, तो चाय दुकानों, होटलों, रेस्टोरेंट, लॉज, हाथ ठेलों पर लगीं डोसा चाऊमीन की दुकानों पर घरेलू गैस सिलेंडर का इस्तेमाल बड़े पैमाने पर होता देखा गया है।बता दें कि शहर में इंडियन, भारत दोनों कंपनियों की डीलरशिप है, जाहिर सी बात है कि इन एजेंसियों की गोदामों से निकलकर घरेलू गैस सिलेंडर होटलों, रेस्टोरेंट तक पहुंचते हैं। लेकिन इस बात से डीलरों को कोई सरोकार नहीं है। अब, तो सीधा सिस्टम यह बन गया है, कि नवंबर के अलावा सिलेंडर हॉकर की जिम्मेदारी पर होते हैं, जिनकी बिक्री का सीधा हिसाब डीलर द्वारा लिया जाता है। अब चाहे हॉकर घरेलू सिलेंडर को किसी के घर तक पहुंचाए या फिर किसी के होटल पर सिलेंडर उपलब्ध कराए।इधर सरकारी कायदों की बात करें, तो घरेलू गैस सिलेंडर का व्यवसायिक रुप से उपयोग नहीं किया जा सकता है और यदि ऐसा होता पाया जाता है, तो कार्यपालिक मजिस्ट्रेट के द्वारा अर्थदंड की कार्रवाई की जाती है। लेकिन लंबा अरसा बीत चुका है और जिले में ऐसी कोई कार्रवाई नहीं होना ही सामने आई है। इधर कार्रवाई नहीं होने की वजह से घरेलू गैस सिलेंडर का व्यवसायिक उपयोग अब आम बात बन चुकी है। जिसका खामयाजा मंहगाई के रूप में आम आदमी को भुगतना पड़ रहा है और मांग के बढने के साथ साथ घरेलू गैस सिलेंडर की कीमत भी बढ़ती जा रहीं हैं।

दो शातिर अभियुक्त 24 घण्टे के अन्दर चोरी के माल सहित गिरफ्तार

गोंडा । थाना कोतवाली नगर पुलिस को वादी श्रवण कुमार गुप्ता पुत्र स्वर्गीय रामगोविन्द गुप्ता निवासी रानीबाजार गोण्डा ने चोरी होने की सूचना दी थी। प्रकरण को संज्ञान में लेकर पुलिस अधीक्षक गोण्डा आकाश तोमर ने उक्त घटना के शीघ्र अनावरण हेतु क्षेत्राधिकारी नगर के नेतृत्व में प्रभारी निरीक्षक कोतवाली नगर व एसओजी टीम को दिशा-निर्देश दिये थे। उक्त दिशा-निर्देश के क्रम में प्रभारी निरीक्षक कोतवाली नगर व एसओजी की संयुक्त टीम की तत्परता से सुरागरसी- पतारसी के दौरान मुखवीर खास की सूचना पर चोरी की घटना में संलिप्त 02 आरोपी अभियुक्तों- एक अभय कुमार गुप्ता उर्फ प्रिंस उर्फ जीत गुप्ता दो अखिलेश तिवारी को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से 6 अदद हार, 2 अदद कंगन,6 अदद चूड़ी, 11 अदद चेन, 18 अदद झुमकी झाला, 2 अदद हाथ पूल, 9 अदद अगूठी, 6 अदद लाकेट, 6 अदद टप्स, 1-1 अदद नाक का कील, मंगल सूत्र, नाक का नथ, कान की बाली, मांग टीका, बचकाना पायल (सभी पीली धातु(अनुमानित कीमत 47 लाख) बरामद किया गया। उक्त अभियुक्तगण द्वारा वादी श्रवण कुमार गुप्ता के घर में चोरी की गयी थी। जिसके सम्बन्ध में थाना कोतवाली नगर में अभियोग पंजीकृत किया गया था।

न्याय की आस में दर-दर भटक रही दुष्कर्म पीड़िता

कैनविज टाइम्स संवाददाता

❐ दुष्कर्म आरोपी पर पुलिस मेहरबान, पीड़िता के परिजन परेशान

❐ पीड़ित के परिजनों ने बताया कि घटना के बाद से आरोपी घूम रहा है खुलेआम

बदायूं। योगी सरकार भले ही महिलाओं और युवतियों पर हो रहे अत्याचारों को लेकर कितने भी कड़े कानून बना दे, लेकिन हकीकत में यह सिर्फ कागजों पर रह जाते हैं सरकार द्वारा दुष्कर्म पीड़ितों के हित में कई कड़े कानून बनाए गए जिसमें सरकार ने स्पष्ट रूप से यह कह रखा है कि दुष्कर्म पीड़ित युवतियों एवं महिलाओं को न्याय दिलाने के लिए सख्त से सख्त कदम उठाकर उन्हें न्याय दिलाया जाए उसके बाद एक दुष्कर्म पीड़िता को न्याय के लिए दर-दर भटकने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है। मामला थाना अलापुर क्षेत्र के एक गांव का है जहां उसकी शादी कस्बा सखानू वार्ड नं 8 के सगीरुल हसन पुत्र शरीफुल हसन के साथ 6 मई को हुई थी।

उसके बाद सुसराल वाले दहेज की अधिक मांग करने लगे जिससे विवाहिता के मायके वालों से विवाद हो गया जिसका मुकदमा चल रहा है। महिला का आरोप कि 15 सितंबर को मैं अपने मायके में अकेली थी मायके वाले किसी काम से बदायूं गए थे। तभी वहां मेरा देवर तहजीबुल हसन पुत्र शरीफुल हसन आया और घर में घुस कर मुझसे अश्लील हरकतें करने लगा कहने लगा आज तुझे मूंह दिखाने के काबिल नहीं छोड़ूंगा और मेरे कपड़े फाड़ कर मुझे जमीन पर पटक कर दुष्कर्म करने लगा मैने शोर मचाया।

तभी मेरी बहिन और पड़ोस के लोग आ गए। तहजीबुल हसन धमकी देकर भाग गया। मैने थाने जाकर पूरी घटना सुनाई थाना पुलिस ने मेरी रिपोर्ट दर्ज नही की फिर एसएसपी को प्रार्थना पत्र देकर कार्रवाई की मांग की थी वहीं वहां भी नहीं सुनी गई। परेशान होकर मैने न्यायलय की शरण ली जब जाकर मेरी रिपोर्ट दर्ज हुई थी। लगभग एक महीने से मेरा परिवार और स्वयं न्याय की आस में दर दर भटक रही हूं। अभी तक आरोपी खुलेआम घूम रहा है।आरोपी पर पुलिस मेहरबान है, मेरे परिवार वाले परेशान घूम रहे हैं।

महिला का कहना है बहु,बेटियां नहीं दिख रही सुरक्षित

बेटी बचाओ बेटी पढाओं का नारा उस जगह बेकार हो जाता है। जब बेटियों के साथ छेड़खानी और दुष्कर्म की घटनाएं सामने आने लगती हैं। इतना ही नहीं कभी-कभी आरोपियों को पुलिस और सत्ता की वजह से इनकी गिरफ्तारी नहीं हो पाती है और संरक्षण मिलता रहता है।

छह लाख की लागत से बने ऑडियोमेट्री रूम में नहीं बैठ रहा ऑडियोलॉजिस्ट

कैनविज टाइम्स संवाददाता

बदायूं। जिला अस्पताल में राष्ट्रीय बहरापन नियंत्रण एवं रोकथाम कार्यक्रम के तहत करीब छह लाख से अधिक के बजट से साउंड प्रूफ ऑडियोमेट्री रूम बेकार साबित हो रहा है।यहां के लिए एक ऑडियोलॉजिस्ट को जिला अस्पताल में तैनात किया गया है। जिससे लोगों को ऑडियोमेट्री की बेहतर सुविधा मिल सके। लेकिन ऐसा नहीं हो रहा है जनपद के मरीजों को ऑडियोलॉजिस्ट की सेवाएं ऑडियोमेट्री रूम में एक महीने से नही हो रही है।मरीज इधर उधर भटक रहे है। इसका कारण यह है कि ऑडियोलॉजिस्ट साउंड प्रूफ रूम में ऑडियोमेट्री न करके अधिकारियों की साठगांठ से दूसरे कमरे में ऑडियोमेट्री कर रहा है। जबकि साउंड प्रूफ रूम बना हुआ है उसी में ऑडियोमेट्री हो जोकि इसकी प्राथमिक आवश्यकता है और बेरा टेस्ट के लिए इसकी कोई आवश्यकता नहीं होती है इसलिए बेरा टेस्ट बाहर से करा कराया जा सकता है साउंड प्रूफ कमरा होने के बावजूद भी दिव्यांगों को बाहर जाकर यह जांच करानी पड़ती है।जिससे विकलांग प्रमाण बनवाने वाले आवेदकों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है गौरतलब यह है कि ऑडियोलॉजिस्ट दूसरे कमरे में ऑडियोमेट्री कर रही है जिसका कोई औचित्य नहीं है।

ऑडियोमेट्री टेस्ट की क्या होती है जरूरत

मूक बधिर, श्रवण बाधित समेत कई तरह के दिव्यांग जिला अस्पताल में निशक्त प्रमाण पत्र बनाने पहुंचते हैं। इनमें मूक बधिर और श्रवण बाधित दिव्यांगों को बेरा टेस्ट और प्योर टोन ऑडियोमेट्री टेस्ट की जरूरत पड़ती है। इस टेस्ट के बाद यह पता चल पाता है कि निःशक्तता का प्रतिशत कितना है। इस टेस्ट रिपोर्ट के आधार पर डॉक्टर निःशक्त प्रमाण पत्र जारी करते हैं। जिला अस्पताल में आने वाले ऐसे दिव्यांगों को ऑडियोमेट्री टेस्ट के लिए बाहर जाना पड़ रहा है। वहां से रिपोर्ट मिलने के बाद यहां मेडिकल बोर्ड में दिव्यांग को निःशक्त प्रमाण पत्र जारी किया जाता है। हालांकि जिला अस्पताल में भी ऑडियोमेट्री टेस्ट मशीन है। ऑडियोमेट्री टेस्ट नहीं हो पाने के कारण मरीजों को निजी लैब का रूख करना पड़ रहा है। गौरतलब है अस्पताल में बधिरता और अल्प बधिरता के मरीजों को अत्याधुनिक जांच सुविधा उपलब्ध करवाने के मकसद से विभाग द्वारा करीब छह लाख के बजट से आधुनिक ऑडियोमेट्री कक्ष का निर्माण करवाया गया। कक्ष में लकड़ी के दो चेंबर बनाए गए हैं। एक चेंबर में मरीज दूसरे में ऑडियोलॉजिस्ट बैठकर मरीज की अत्याधुनिक मशीनों से जांच करेगा। दोनों चेंबर में वूडन पार्टिशन है और फ्लोरिंग भी वुडन की है तथा दोनों कक्ष वातानुकूलित है। इस संबंध में सीएमओ डाक्टर प्रदीप वार्ष्णेय ने बताया कि हमने अपना कर्मचारी को पुरुष अस्पताल के सीएमएस को दे दिया है वह कर्मचारी से कैसे काम लेते है वो उनकी जिम्मेदारी है।

निर्वाचक नामावली लोगों के लिए निःशुल्क निरीक्षण के लिये है उपलब्ध

बदायूँ। अपर जिलाधिकारी प्रशासन/निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी विजय कुमार सिंह ने जनपद बदायूँ की समस्त निकायों (नगर पालिका परिषद, बदायूँ, उझानी, ककराला, बिल्सी, बिसौली, सहसवान एवं दातागंज तथा नगर पंचायत, गुलडिया, सखानू, कुंवरगाँव, कछला. इस्लामनगर, रुदायन, अलापुर, उसावाँ, उसहैत, फैजगंज, मुड़िया, सैदपुर, वजीरगंज एवं दहगवां) के प्रादेशिक निर्वाचन क्षेत्रों के निवासियों को अवगत कराया है कि इन नगर की वार्डवार निर्वाचक नामावली 18 नवम्बर 2022 शुक्रवार को अन्तिम रूप से प्रकाशित कर दी गई है। निर्वाचक नामावली उनके कार्यालय के अतिरिक्त कार्यालय निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी, कार्यालय सहायक निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी, कार्यालय नगर पालिका परिषद/नगर पंचायत, जिला निर्वाचन कार्यालय (पंचायत एवं नगरीय निकाय), आदि कार्यालयों/स्थानों में आम लोगों के लिए निःशुल्क निरीक्षण के लिये उपलब्ध है।

टीकाकरण के फायदे के बारे में दी गई जानकारी

बदायूँ। मुख्य चिकित्सा अधिकारी कार्यालय में नियमित टीकाकरण के अंतर्गत आने वाले इनकार परिवार के मोबिलाइजेशन हेतु ब्लॉक रिस्पांस टीम का प्रशिक्षण यूनिसेफ के सहयोग से किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता मुख्य चिकित्साधिकारी द्वारा की गई। प्रशिक्षण में आईसीडीएस शिक्षा एवं स्वास्थ्य विभाग के ब्लॉक लेवल अधिकारी मौजूद रहे। जिला प्रशिक्षण अधिकारी द्वारा टीकाकरण के फायदे के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई। यूनिसेफ के डीएमसी सुभाष सिंह एवं संदीप सक्सेना द्वारा विरोधी परिवारों के कन्वर्जन हेतु बीआरटी के दायित्व के बारे में प्रशिक्षित किया गया एवं यूनिसेफ के बीएमसी सुमन लता एवं भुवनेश कुमार शर्मा के द्वारा सहयोग किया गया।

नहरे हैं सूखी कैसे हो खेतों में सिंचाई?

पुरनपुर। किसानों की समस्याएं खत्म होने का नाम नहीं ले रही हैं पहले बिन मौसम बरसात में किसानों की फसलों को बर्बाद कर दिया अब क्षेत्र के किसानों को गेंहू की उपज को पैदा करने के लिए नहरों से पानी नहीं मिल सका। किसानों ने जैसे तैसे अपने संसाधनों से महंगे दामों पर सिंचाई कर धान की फसल तैयार की लेकिन अंत में भारी बारिश के कारण किसानों की धान की फसलें भी बर्बाद हुई। किसान परेशान हो गया वहीं अब धान की कटाई होने के बाद गेंहू की बुवाई हो रही है लेकिन अब गेंहू कि सिंचाई के लिए नहरों से पानी नहीं हैं भारतीय किसान यूनियन के जिला अध्यक्ष स्वराज सिंह ने जिला अधिकारी से नहरों में पानी छोड़ने की मांग की है

चीनी मिल में हो रहे घोटाले को लेकर किसान नेताओं ने सौंपा ज्ञापन

पुरनपुर।भारतीय किसान यूनियन अराजनैतिक की ओर से जनपद के किसानों की समस्याओं के सम्बन्ध में डीएम संबोधित एक ज्ञापन तहसीलदार को सौंपा किसान नेताओं ने सहकारी चीनी मिल पूरनपुर ने अभी तक गन्ना पेराई शुरु नही किया है जिससे चीनी मिल के किसानों को भारी नुकसान उठाना पड़ रहा है किसान अपना गन्ना औने-पौने दामों पर बेचने को मजबूर है चीनी मिल न चलने से पेड़ी गन्ने की सप्लाई नहीं हो पा रही है जिससे गन्ने के खेतों में गेंहू की बुवाई लेट हो रही है पूरनपुर चीनी मिल को अतिशीघ्र चलाया जाये पूरनपुर चीनी मिल की रिपेयरिंग में हुई देरी की जांच करा कर दोषी अधिकारियों व कर्मचारियों पर कार्यवाई की जाये चीनी मिल रिपेयर में हो रहे गोलमाल की जांच करायी जाये जिले में डीएपी व यूरिया खाद की भारी किल्लत है किसानों को तत्काल खाद उपलब्ध करायी जाये जिससे किसानों को गेंहू बुवाई में दिक्कत न आये भरपूर मात्रा में खाद उपलब्ध करायी जाये ज्ञापन में मुख्य रूप से भारतीय किसान यूनियन अराजनैतिक के तहसील अध्यक्ष कुलवंत सिंह व महिला प्रकोष्ठ की ब्लाक अध्यक्ष बब्बली देवी सहित दर्जनों कार्यकर्ता एव पदाधिकारी मौजूद रहे।

व्यापारियों की समस्याओं के निस्तारण को लेकर सौंपा ज्ञापन

सुलतानपुर। उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मंडल सुल्तानपुर जिलाध्यक्ष विजय प्रताप सिंह नगर अध्यक्ष आनंद पांडेय के नेतृत्व में संगठन द्वारा व्यापारी हित में मुख्यमंत्री योगी, केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमन व केंद्रीय वाणिज्य एवम उद्योग मंत्री पीयूष गोयल को संबोधित व्यापार व व्यापारी हित संबंधी विभिन्न समस्याओं के निस्तारण हेतु मांग पत्र सीआरओ शमशाद हुसैन को सौंपा गया। इस अवसर पर जिला वरिष्ठ महामंत्री इलियास खान, जिला वरिष्ठ महामंत्री ,ष्ण चंद्र बरनवाल, वरिष्ठ जिला उपाध्यक्ष एजाज अहमद खान,जिला उपाध्यक्ष दिनेश मिश्र, जिला युवा अध्यक्ष बृजेश वर्मा,जिला महामंत्री लालजी चौरसिया, जिला मीडिया प्रभारी जुबैर अहमद, नगर उपाध्यक्ष अजीत अग्रहरी,नगर महामंत्री मनीष कसौंधन, नगर मीडिया प्रभारी जावेद अहमद, नगर मंत्री राहुल बरनवाल, सदस्य लइक अहमद आदि पदाधिकारी उपस्थित रहे।

गौवंशों के लिए सभी व्यवस्थाएं रहें पूर्ण : डीएम

कैनविज टाइम्स संवाददाता

बदायूं। जिलाधिकारी मनोज कुमार ने मुख्य विकास अधिकारी ऋषिराज, अपर पुलिस अधीक्षक नगर एके श्रीवास्तव मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी डॉ अरुण कुमार जादौन एवं उप जिलाधिकारियों खंड विकास अधिकारियों एवं संबंधित अधिकारियों के साथ जिला गौ-संरक्षण एवं अनुश्रवण समिति की बैठक शुक्रवार को कलेक्ट्रेट स्थित सभागार में आयोजित की।

विकासखंडबार डीएम ने समीक्षा करते हुए निर्देश दिए कि लक्ष्य के अनुसार गौवंशों को सुपुर्दगी में दिया जाए। गो आश्रय स्थलों की क्षमता वृद्धि की जाए। डीएम ने निर्देश दिए कि गोवंशो को गौ आश्रय स्थलों में ही रखा जाए क्योंकि किसान रवि की बुवाई कर रहे हैं उनकी फसलों को गोवंशो के द्वारा किसी प्रकार का नुकसान ना होने पाए। गोवंश स्थलो में मानक के अनुसार सभी प्रकार की व्यवस्था रहे, जिससे अप्रिय घटनाएं ना होने पाए, इसमें अच्छा कार्य करने वाले अधिकारियों को सम्मानित किया जाएगा। सभी गोवंश को ईयर टैग लगे हो। सभी विकास खंडों में गोवंश को पकड़ने के लिए कैटल कैचर की व्यवस्था रहे। नोडल अधिकारी साप्ताहिक निरीक्षण कर फोटो जीपीएस लोकेशन सहित व्हाट्सएप ग्रुप में शेयर करें। गोवंश सुपुर्दगी का लक्ष्य 15 दिसंबर तक है इसे समय सीमा के भीतर ही पूर्ण कर लिया जाए। गौशालाओं के लिए हरे चारे की बुवाई कराई जाए। सभी अधिकारी इच्छाशक्ति से कार्य कर कार्य में प्रगति लाएं।

समय सीमा के भीतर कराए जाएं सभी कार्य : डीएम

बदायूं। जिलाधिकारी मनोज कुमार ने मुख्य विकास अधिकारी ऋषिराज एवं संबंधित अधिकारियों के साथ सड़क निर्माण एवं गड्ढा मुक्त के संबंध में शुक्रवार को कलेक्ट्रेट स्थित सभागार में बैठक आयोजित की। डीएम ने अधिशासी अभियंता पीडब्ल्यूडी को निर्देश दिए हैं कि सड़कों का निर्माण कार्य समय सीमा के भीतर गुणवत्ता एवं मानक के अनुसार कराया जाए।

उन्होंने निर्देश दिए कि कार्यदाई संस्था द्वारा चलाए जा रहे कार्यों पर विशेष ध्यान दिया जाए। जो सड़कें प्रस्तावित की गई हैं उन सभी सड़कों पर कार्य होता रहे कोई भी सड़क ऐसी ना रहे जिस पर कार्य ना हो। कार्यों के टेंडर प्रक्रिया को जल्द से जल्द पूर्ण किया जाए। सड़कों पर आवश्यकता अनुसार ज़ेबरा क्रॉसिंग ब्लैक स्पॉट साइन बोर्ड आदि कार्य प्राथमिकता पर कराया जाए जिससे घटनाएं ना हो। नेकपुर अंडर पास में आवश्यकता अनुसार कार्य कराए जाए।

जिला अस्पताल में कर्मचारी निभा रहे हैं डॉ. का दायित्व

कैनविज टाइम्स संवाददाता

बदायूं। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा जनता के स्वास्थ्य की रक्षा के लिए जिला अस्पतालों में आधुनिक उपकरणों के साथ-साथ भरपूर दवाएं उपलब्ध कराई जा रही हैं ताकि गरीब जनता अपने स्वास्थ्य की रक्षा कर सकें कुछ डॉक्टर अपने फर्ज को भूल कर जनता के स्वास्थ्य से खिलवाड़ कर रहे हैं। आपको बता दें कि ऐसा ही जीता जागता उदाहरण जिला अस्पताल के सर्जरी ओपीडी कक्ष में देखने को मिला जहां एक अस्पताल का कर्मचारी डॉक्टर का दायित्व निभा रहा था और मरीजों को देखकर दवाएं लिख रहा था। अस्पताल के वरिष्ठ अधिकारी इस खबर से अनजान है या जानबूझकर कर्मचारियों को जनता के स्वास्थ्य से खिलवाड़ करने के लिए छोड़ दिया है।

प्राथमिक विद्यालय में संचालित हो रहा धान क्रय केंद्र

कैनविज टाइम्स संवाददाता

पूरनपुर। शासन की सख्ती के बीच अधिकारी धान खरीद पारदर्शिता के साथ होने का दावा कर रहे हैं। इधर ग्रामीण इलाकों में साहबों की सख्ती के बावजूद मात्र दिखावा बनकर रह गई है।केंद्रों पर धान का स्टॉक लगा है, उठान में तेजी नहीं है।अधिकांश जगहों पर तौल सही से नहीं हो रही,फिर भी कागजों में खरीद बढ़ती जा रही है ऐसे में बिचौलियों और माफियाओं का कम कीमत में खरीदा गया धान शामिल किया जा रहा।खरीद के नाम पर इंचार्ज को किनारे कर ठेकेदार किसानों से वसूली कर लक्ष्य का पीछा कर रहे है। एक अक्टूबर से शुरू हुई धान खरीद में बिचौलियों की मंशा के तहत किसानों का वाजिब मूल्य नहीं मिल पा रहा है बिचौलिये भी केंद्र प्रभारियों से सांठगांठ कर सक्रिय हो गए हैं।किसानों से कम कीमत पर खरीदा धान का भंडारण बिचौलियों के पास था अब तौल धीमी होने पर केंद्र प्रभारी कार्रवाई से बचने को लक्ष्य पूरा करने पर भी जोर दे रहे हैं। ऐसे में बिचौलिये के धान को खरीद में शामिल किया जा रहा है। यही वजह है कि दिनभर के बाद शाम को लक्ष्य कागजों में रहस्यमय ढंग से पूरा हो रहा। वहीं क्रय केंद्रों पर खरीदा गया धान अधिक सूखने के चलते कुटाई में टूटन बढ़ने की बात की जाती है। मगर बिचौलियों से लिए गए धान में यह दिक्कत नहीं बताई जाती। इसके पीछे भी मुनाफे को ही वजह माना जा रहा है। हालांकि अफसर धान खरीद पारदर्शिता के साथ हो रही है। वह स्वयं मानीटरिंग कर रहे हैं लेकिन जादौपुर खुर्द के प्राथमिक विद्यालय में लगा यूपीएसएस का धान क्रय केंद्र पर धान केंद्र प्रभारी दूर तक नजर नहीं आते हैं कुछ किसानों का आरोप है जब से केंद्र लगा है तब से केंद्र प्रभारी नजर नहीं आए हैं गांव के ही किसान ने बताया कि धान की तौल हुए 20 दिन बीत गए लेकिन अभी तक भुगतान प्राप्त नहीं हुआ है बार-बार केंद्र प्रभारी से कहते हैं लेकिन केंद्र प्रभारी आजकल आजकल का बहाना बनाकर टालते दिखाई देते हैं

मण्डलायुक्त की अध्यक्षता में सम्पूर्ण समाधान दिवस सम्पन्न

कैनविज टाइम्स संवाददाता

14 शिकायती प्रार्थना पत्र प्राप्त, एक का निस्तारण

पीलीभीत। मण्डलायुक्त संयुक्ता समद्दार की अध्यक्षता में तहसील कलीनगर का तहसील सम्पूर्ण समाधान दिवस सम्पन्न हुआ सम्पूर्ण तहसील समाधान दिवस में कुल 14 शिकायती प्रार्थना-पत्र प्राप्त हुये, जिसमें मण्डलायुक्त द्वारा मौके पर ही 01 शिकायतों का निस्तारण किया गया अवशेष शिकायतों के सम्बन्ध में संज्ञान लेते हुए कहा कि अधिकारी अपनी-अपनी विभागीय शिकायतों का गुणवत्ता परक ढंग से निस्तारण करें, अधिकारी स्वयं शिकायतकर्ता की शिकायतों के निस्तारण हेतु मौका मुआइना अवश्य करें और शिकायतकर्ता सहित दोनों पक्षों को बुलाकर शिकायतों का निस्तारण कराना सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री कार्यालय से जन सुनवाई की शिकायतों की गुणवत्ता की जांच की जा रही है सभी अधिकारी दोनों पक्षों को बुलाकर गुणवत्तापूर्ण शिकायतों का निस्तारण करायें तथा निस्तारण आख्या पोर्टल पर अपलोड करें जिससे कि शिकायतकर्ता द्वारा दोबारा शिकायत न की जा सके राजस्व सम्बन्धी मामलों में जहां पर पुलिस प्रशासन की आवश्यकता हो तो वहां पुलिस को साथ लेकर मौके पर निस्तारण कराया जाये। इसके साथ ही साथ मण्डलायुक्त द्वारा समस्त अधिकारियों को आईजीआरएस की शिकायतों पर ध्यान देने के निर्देश दिये और निर्देशित किया गया अधिकारी मौके पर पहुँचकर स्थिति को देखकर ही शिकायतों का गुणवत्तापरक ढंग से निस्तारण करायें इसके उपरान्त मण्डलायुक्त द्वारा महामहिम राज्यपाल के दौरे के दृष्टिगत बाइफरकेशन में की जा रही व्यवस्थाओं का जायजा लिया गया निरीक्षण के दौरान बाइफरकेशन मार्ग, साफ सफाई व्यवस्था,गेस्ट हाउस को भी देखा गया और सम्बन्धित अधिकारियों को समस्त व्यवस्थाऐं ठीकठाक कराने के निर्देश दिये गये। तहसील सम्पूर्ण समाधान दिवस में पुलिस महानिरीक्षक रमित शर्मा, जिलाधिकारी प्रवीण कुमार लक्षकार,पुलिस अधीक्षक दिनेश कुमार, मुख्य चिकित्साधिकारी आलोक कुमार,जिला विकास अधिकारी हवलदार सिंह, पीओ डूडा,शिखा शुक्ला उप जिलाधिकारी कलीनगर, अधिशासी अभियन्ता विद्युत पूरनपुर,अधिशासी अभियन्ता शारदा सागर खण्ड,जिला पूर्ति अधिकारी, अधिशासी अभियन्ता जल निगम, जिला विद्यालय निरीक्षक,जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी व तहसीलदार कलीनगर,खण्ड विकास अधिकारी पूरनपुर सहित अन्य जिला स्तरीय अधिकारी उपस्थित रहे।

केनरा बैंक ने फाउन्डर-डे पर जिला अस्पताल को दिये दो व्हील चेयर व सौ कम्बल

कैनविज टाइम्स संवाददाता

सुलतानपुर। शनिवार को केनरा बैंक सुलतानपुर शाखा ने अपने ११७वें फाउन्डर-डे के मौके पर जिला अस्पताल में मरीजों की सुविधा के लिए दो व्हीलचेयर सहित सौ कम्बल मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ एससी कौशल को मौजूदगी में भेट किया। केनरा बैंक के एजीएम उत्तम कुमार पाठक, वरिष्ठ शाखा प्रबंधक चंदन कुमार, शाखा प्रबंधक नफीस खान, प्रदीप शुक्ला, श्रीमती उर्वशी, आलोक एव समाजसेवी अब्दुल कादिर तथा चिकित्सालय के आकिरियों ने मरीजों को फल बांटें। मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ एससी कौशल, वरिष्ठ परामर्शदाता डॉ एसके गोयल ने संयुक्त रूप से कहाकि केनरा बैंक ने अपने फाउन्डर-डे पर जिला अस्पताल को व्हीलचेयर व सौ कम्बल की सौगात मरीजों के लिए बेहतरीन तोहफा है, साथ ही बैंक स्टाफ ने फल वितरण के दौरान मरीजों का हाल भी जाना, सीएमएस डॉ एससी कौशल ने बैंक आकिरियों का आभार व्यक्त करते हुए कहाकि सेवा के कई रूप होते हैं। जनहितार्थ कार्यों में संस्थाएं और संस्थानों को आगे आना चाहिए। कार्यक्रम के बाद मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ एससी कौशल, वरिष्ठ परामर्शदाता डॉ एसके गोयल व स्टाफ के साथ औचक निरीक्षण में ट्रामा सेंटर पहुंचे। मौके पर ट्रामा सेंटर इंचार्ज डॉ आरपी सिंह व स्टाफ मौजूद रहे, सीएमएस ने बताया कि ट्रामा सेंटर डेंगू डेडिकेटेड हास्पिटल बनाकर डेंगू संक्रमण से ग्रसित मरीजों का उपचार किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि ट्रामा सेंटर को पूरी तरह से डेंगू वार्ड बनाया गया है, जहा पर संपूर्ण तैयारी के साथ मरीजों का इलाज किया जा रहा है।

साढ़े तीन लाख के संदिग्ध टप्पेबाज के बचाव में उतरे भाजपाई

कैनविज टाइम्स संवाददाता

सुल्तानपुर। भाजपाइयों ने संदिग टप्पेबाज का बचाव करते हुए कादीपुर कोतवाली का घेराव किया। भाजपाई संदिग को छुड़वाने के लिए पुलिस पर दबाव बना रहे थे। हालांकि मौके पर पहुंचे क्षेत्राधिकारी कादीपुर शिवम मिश्रा ने पहुंचकर सभी को समझाया बुझाया। उन्होंने आश्वस्त किया कि पूछताछ किया जा रहा है, निर्दोष के खिलाफ कार्रवाई नह की जाएगी।

दरअसल बीते शुक्रवार को कादीपुर कोतवाली क्षेत्र के बनके गांव निवासी वरिष्ठ भाजपा नेता ओमप्रकाश सिंह की बाइक की डिग्गी से साढ़े तीन लाख रूप की टप्पेबाजी हो गई थी। ओमप्रकाश अपने मित्र रामजीत मौर्य के साथ बैंक गए थे और वहां से पैसा निकाल के ब्लाक के पास पहुंचे और एक दुकान के बाहर बाइक खड़ी किया था। उनके वहां से जाते ही टप्पेबाज ने डिग्गी से पैसे उड़ा दिए थे। पास की दुकान में लगे सीसीटीवी में ये घटना कैद हो गई थी। घटना को लेकर पीड़ित ओमप्रकाश की तहरीर पर पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर पड़ताल शुरूकर दिया था। एसपी सोमेन वर्मा ने वर्क आउट के लिए तीन टीमें लगाई थी। इस बीच रात में पुलिस ने स्थानीय निवासी शिवम को संदिग मानते हुए हिरासत में ले लिया। शिवम भाजपा आईटी सेल का वर्कर है। सुबह इसकी सूचना जब भाजपा के नेताओं को हुई तो सभी कोतवाली पहुंच गए। भाजपाइयों का कहना है कि पुलिस ने शिवम की बुरी तरह पिटाई किया है। भाजपा जिला महामंत्री घनश्याम चौहान, आनन्द जायसवाल, मंडल अध्यक्ष भूपेंद्र पाठक, सर्वेश सिंह, व्यापार मंडल अध्यक्ष घनश्याम जायसवाल आदि कोतवाली पर डटे रहे। सूचना मिलने पर सीओ कादीपुर शिवम मिश्रा कोतवाली पहुंचे उन्होंने भाजपाइयों को समझाया कहा कि थोड़ा सहयोग कीजिए ताकि घटना ट्रेस हो सके। पूछताछ की जा रही है ताकि किसी व्यापारी को समस्या ना आये। किसी भी निर्दोष के विरुद्ध

पांच भू-माफियाओं पर एफआईआर, स्टे के बावजूद ढहा दिया था दीवार

सुलतानपुर। सत्ता की हनक दिखाकर कानून हाथ में लेना भू-माफियाओं को महंगा पड़ा है। चार वर्ष पूर्व जिस विवादित भूखंड पर कोर्ट ने स्टे दे रखा था उस पर दीवार ढहाकर गेट लगाने के मामले में पुलिस ने आरोपियों के विरुद्ध मुकदमा दर्जकर उनकी तलाश शुरूकर दिया है।

जानकारी के अनुसार घटना बांआकला थानाक्षेत्र के गोढवा मनियारी गांव की है। यहां के राजेश दूबे, अजय दूबे, अनुज दूबे, हिमांशु दूबे व अभिषेक शुक्ला के विरुद्ध मुकदमा दर्जकर पुलिस ने विवेचना शुरूकर दी है। इसी गांव के रहने वाले अजीत कुमार शर्मा ने बताया कि उसकी व सुनील शर्मा और शिवेंद्र शर्मा की पैतृक जमीन है। अजीत के अनुसार बंटवारे में मझना रोड स्थित दीपक के मकान की पिछली दीवार से सुरेश जायसवाल के बैनामें की आगे के दीवार तक उसकी बाउंड्रीवाल है। आगे की जमीन जीएस लैंड है जिसका ग्राम समाज से पीड़ित ने पट्टा ले रखा है। आरोप है कि राजेश दूबे, अजय दूबे उनके साथी हिमांशु शुक्ला, अभिषेक शुक्ला व अनुज दूबे दो दिन पूर्व मौके पर पहुंचे और दीवार तोड़कर अपना गेट लगा दिया।

अटैचमेंट पर किया जा रहा है सेटलमेंट शासनादेश को कुचलने की हो रही साजिश

कैनविज टाइम्स संवाददाता

सुलतानपुर। सरकार व्यवस्था सुधार को लेकर आएदिन नित नए फरमान के साथ आम आदमी की सुविधाओं को यान में रखते हुए नवीन व्यवस्था देने की सरकारी विभागों को हिदायतें के साथ आदेश-निर्देश जारी कर रही है, लेकिन जमीनी हकीकत में आकिरी अपने आकिरों का दुरुपयोग करते हुए सरकारी फरमान को कुचलने के काम कर रहे हैं। हम बात कर रहे हैं विभागों में संबद्धता को लेकर, जबकि सरकार का स्पष्ट निर्देश है कि किसी भी दशा में विभागों में अटैचमेंट नहीं किया जायेगा, परंतु कभी दबाव में तो कभी स्वहित के लिए संबद्धता को सरकारी आदेश के बाद भी जारी बताते हुए की जा रही है। मामला स्वास्थ्य विभाग से जुड़ा है, स्वास्थ्य विभाग में अटैचमेंट को लेकर कई डाक्टरों को सरकारी नियमों के विरुद्ध संबद्ध किया गया है। जिला अस्पताल में कई ऐसे डाक्टरों को संबद्ध किया गया है जो शहर में अपनी नर्सिंगहोम चला रहे हैं या फिर क्लीनिक खोल रखा है, जिसके चलते आएदिन भ्रष्टाचार को लेकर सरकार पर इल्जाम लगाया जाता रहा है, और हो भी क्यूं ना, यही संबद्धता वाले डाक्टरों के कारण स्वास्थ्य विभाग की जमकर छीछालेदर हो रही है। कुल मिलाकर व्यवस्था में व्यवधान आम जनता नहीं बल्कि विभागीय आकिरी व बिचौलियों की कारगुगारियों के कारण सरकार की योजनाओं को पलीता लगाया जा रहा है। सूत्रों की माने तो जुगाड़ लगाकर खुद को जिला अस्पताल में अटैच करवाने वाले डाक्टर शहर में ही अपना नर्सिंगहोम चला रहे हैं, और संबद्धता का कारण मात्र अस्पताल से मरीजों का अपने नर्सिंगहोम में स्थानांतरित कर मरीजों को मिलने वाली सरकारी सुविधा को ताक पर रख आर्थिक शोषण करना मात्र उद्देश्य है। इस सबं में अपर निदेशक स्वास्थ्य अयोया से बात करने पर उन्होंने बताया कि संबद्धता शासनादेश का उलंघन है, उन्होंने कहाकि इस मामले में मुख्य चिकित्साकिारी सुलतानपुर से वार्ता करने के पश्चात ही निर्णय लेने की स्थिति में रहूंगा।

जनजातीय समुदाय का सम्मान

केंद्र की नरेन्द्र मोदी सरकार ने जनजातीय समुदाय के सम्मान का नया अध्याय लिखा है। देश में पहली बार जनजातीय समाज की महिला सर्वोच्च पद पर आसीन हुई है। पहली बार जनजातीय गौरव दिवस का शुभारंभ हुआ है। आजादी के अमृत महोत्सव में अनेक उपेक्षित राष्ट्रनायकों को प्रतिष्ठित किया जा रहा है। अमृत महोत्सव के माध्यम से राष्ट्रीय प्रेरणा का नया दिन भी घोषित किया गया। अब देश प्रतिवर्ष जनजातीय गौरव दिवस भी मनाएगा। इस दिवस का प्रथम आयोजन गत वर्ष हुआ था। तब प्रधानमंत्री मोदी ने झारखंड में बिरसा मुंडा की मूर्ति का वर्चुअल लोकार्पण किया था। इसके अलावा भोपाल में विश्वस्तरीय रानी कमलापति रेलवे स्टेशन राष्ट्र को समर्पित किया गया।बिरसा मुंडा और रानी कमलापति के महान योगदान से देश की नई पीढ़ी परिचित हुई। जनजातीय समुदाय में भगवान बिरसा मुंडा का बड़ा सम्मान है। वह राष्ट्रनायक के रूप में पूरे देश के लिए सम्मान की विभूति हैं। रानी कमलापति का भी राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान है। बिरसा मुंडा का जन्म 15 नवम्बर, 1875 को झारखंड के खूंटी जिले के उलीहातु गांव में हुआ था। उन्होंने जनजातीय समुदाय को लामबंद कर ब्रिटिश दासता से मुक्त कराने का संकल्प लिया था। मुंडा विद्रोह को उलगुलान नाम से भी जाना जाता है। बिरसा मुंडा को 1895 में गिरफ्तार कर लिया गया। उन्हें दो साल के कारावास की सजा दी गई। उन्हें लोग सम्मान से धरती आबा कहते थे। खूंटी थाने पर हमला कर अंग्रेजों को चुनौती दी गई। तांगा नदी के किनारे ब्रिटिश सेना पराजित भी हुई थी। डोम्बरी पहाड़ पर संघर्ष हुआ। उन्हें चक्रधरपुर के जमकोपाई जंगल से गिरफ्तार कर लिया गया। जेल में ही उनका निधन हो गया। मध्य प्रदेश के रेलवे स्टेशन हबीबगंज भोपाल का अंतिम गोंड शासक रानी कमलापति के नाम पर नामकरण किया गया। वह 18वीं शताब्दी की गोंड रानी थीं। यह पहली बार है, जब जनजातीय स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि देने के लिए बड़े पैमाने पर कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। अब तक ये सेनानी स्वतंत्रता संग्राम के गुमनाम नायक रहे हैं। जनजातीय समुदाय ने प्राचीन काल से ही जम्मू-कश्मीर,मणिपुर, नागालैंड सहित सीमावर्ती क्षेत्रों में निवास किया है और देश की सुरक्षा में बड़ी भूमिका निभाई है। आजादी से पहले भी जनजातीय नायकों ने भारतीय स्वतंत्रता के संघर्ष में प्रमुख भूमिका निभाई। रानी कमलापति का नाम रेलवे स्टेशन से जोड़ने से गोंड समाज सहित सम्पूर्ण जनजाति वर्ग का गौरव बढ़ा है। रानी कमलापति रेलवे स्टेशन देश का पहला आईएसओ सर्टिफाइड एवं पीपीपी मॉडल पर विकसित रेलवे स्टेशन है। एयरपोर्ट पर मिलने वाली सुविधाएं इस रेलवे स्टेशन पर मिल रही हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के भगीरथ प्रयास के बाद रानी कमलापति को पहली बार लोगों ने जाना। मोदी की पहल से यह नाम राष्ट्रीय फलक पर उभरा। आजादी के बाद देश में पहली बार इतने बड़े पैमाने पर जनजातीय कला, संस्कृति, स्वतंत्रता संग्राम में उनके योगदान को गौरव एवं सम्मान प्रदान किया गया है। भगवान श्रीराम और जनजातीय समाज का रिश्ता किसी से छुपा नहीं है। जनजातीय समाज की परंपराओं, रीति-रिवाज और जीवनशैली से प्रेरणा मिलती है। सरकार निरंतर उनके कल्याण के कार्य कर रही है। सरकार द्वारा बीस लाख जनजातीय व्यक्तियों को वनभूमि के पट्टे प्रदान किए गए हैं। जनजातीय युवाओं के शिक्षा एवं कौशल विकास के लिए देशभर में साढ़े सात सौ एकलव्य आवासीय आदर्श विद्यालय खोले जा रहे हैं। केन्द्र सरकार द्वारा तीस लाख विद्यार्थियों को हर वर्ष छात्रवृत्ति दी जा रही है। सरकार द्वारा नब्बे वन उपजों पर न्यूनतम समर्थन मूल्य घोषित किया गया है। भारत सरकार ने जो डेढ़ सौ से अधिक मेडिकल कॉलेज मंजूर किए हैं,उनमें जनजातीय बहुल जिलों को प्राथमिकता दी गई है। इसी तरह जल जीवन मिशन के अंतर्गत जनजातीय क्षेत्रों में नल से जल पहुंचाने की योजना संचालित हो रही है। सरकार ने खनिज नीति में ऐसे परिवर्तन किए, जिनसे जनजातीय वर्ग को वन क्षेत्रों में खनिजों के उत्खनन से लाभ मिलने लगा है। जिला खनिज निधि से पचास हजार करोड़ के लाभ में जनजातीय वर्ग हिस्सेदार है।

बढ़ती आबादी के खतरे भी कम नहीं

भारत में बढ़ती आबादी के बढ़ते खतरों को इसी से बखूबी समझा जा सकता है कि दुनिया की कुल आबादी का करीब छठा हिस्सा विश्व के महज ढाई फीसदी भूभाग पर रहने को अभिशप्त है। जाहिर है कि किसी भी देश की जनसंख्या तेज गति से बढ़ेगी तो वहां उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव भी उसी के अनुरूप बढ़ता जाएगा। आंकड़ों पर नजर डालें तो आज दुनियाभर में करीब एक अरब लोग भुखमरी के शिकार हैं और अगर वैश्विक आबादी बढ़ती रही तो भुखमरी की समस्या बहुत बड़ी वैश्विक समस्या बन जाएगी, जिससे निपटना इतना आसान नहीं होगा। बढ़ती आबादी के कारण ही दुनियाभर में तेल, प्राकृतिक गैसों, कोयला इत्यादि ऊर्ज़ा के संसाधनों पर दबाव अत्यधिक बढ़ गया है, जो भविष्य के लिए बड़े खतरे का संकेत है। जिस अनुपात में भारत में आबादी बढ़ रही है, उस अनुपात में उसके लिए भोजन, पानी, स्वास्थ्य, चिकित्सा इत्यादि सुविधाओं की व्यवस्था करना किसी भी सरकार के लिए आसान नहीं है। इस समय चीन की आबादी दुनिया में सर्वाधिक 1.426 अरब है और उसके बाद भारत की आबादी 1.412 अरब है। संयुक्त राष्ट्र का मानना है कि 2050 तक भारत की आबादी 1.668 अरब हो जाएगी जबकि चीन की आबादी उस समय 1.317 अरब रहने का अनुमान है। हालांकि हम इस बात पर थोड़ा संतोष व्यक्त कर सकते हैं कि जनसंख्या वृद्धि दर के वर्तमान आंकड़ों की देश की आजादी के बाद के शुरुआती दो दशकों से तुलना करें तो 1970 के दशक से जनसंख्या वृद्धि दर में निरन्तर गिरावट दर्ज की गई है लेकिन यह गिरावट दर काफी धीमी रही है। आर्थिक सर्वेक्षण के मुताबिक भारत में पिछले कुछ दशकों में जनसंख्या वृद्धि की गति धीमी हुई है। वर्ष 1971-81 के मध्य वार्षिक वृद्धि दर 2.5 प्रतिशत थी, जो 2011-16 में घटकर 1.3 प्रतिशत रह गई। जनसंख्या वृद्धि की रफ्तार को नियंत्रित रखने के लिए औसत प्रजनन दर 2.1 होनी चाहिए और कुछ समय पूर्व राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण द्वारा जारी आंकड़ों से पता चला था कि देश में यह दर 2.2 से घटकर 2 हो गई है।

यूनाइटेड नेशंस पॉपुलेशन फंड (यूएनएफपीए) के मुताबिक दुनिया की आबादी आठ अरब हो गई है, जिसे सात से आठ अरब होने में केवल 12 वर्ष का समय लगा है। जबकि दुनिया की आबादी को 1 से 2 अरब होने में 100 साल से भी ज्यादा लगे थे। हालांकि दुनिया की आबादी तेजी से बढ़ने को संयुक्त राष्ट्र मानवता की उपलब्धियों के प्रमाण के रूप में देख रहा है और यह सही भी है कि इसमें सबसे बड़ा योगदान शिक्षा तक पहुंच का विस्तार, स्वास्थ्य देखभाल में प्रगति, लैंगिक असमानता में कमी इत्यादि कारकों का है लेकिन भारत जैसे विकासशील देशों के लिए बढ़ती आबादी के खतरे भी कम नहीं हैं। यूएन की रिपोर्ट के मुताबिक दुनिया की आबादी एक अरब बढ़ने में भारत की हिस्सेदारी 17.7 करोड़ और चीन की 7.3 करोड़ रही यानी आबादी के बढ़ते ग्राफ के मामले में भारत चीन से बहुत निकल गया है तथा अगले साल तक भारत की आबादी चीन से भी ज्यादा हो जाएगी यानी भारत दुनिया का सर्वाधिक आबादी वाला देश बन जाएगा। विश्व की कुल आबादी में से करीब 18 फीसदी लोग अब भारत में रहते हैं और दुनिया के हर 6 नागरिकों में से एक से ज्यादा भारतीय है। अगर भारत में जनसंख्या की सघनता का स्वरूप देखें तो जहां 1991 में देश में जनसंख्या की सघनता 77 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर थी, 1991 में बढ़कर वह 267 और 2011 में 382 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर हो गई। भारत में बढ़ती आबादी के बढ़ते खतरों को इसी से बखूबी समझा जा सकता है कि दुनिया की कुल आबादी का करीब छठा हिस्सा विश्व के महज ढाई फीसदी भूभाग पर रहने को अभिशप्त है। जाहिर है कि किसी भी देश की जनसंख्या तेज गति से बढ़ेगी तो वहां उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव भी उसी के अनुरूप बढ़ता जाएगा। आंकड़ों पर नजर डालें तो आज दुनियाभर में करीब एक अरब लोग भुखमरी के शिकार हैं और अगर वैश्विक आबादी बढ़ती रही तो भुखमरी की समस्या बहुत बड़ी वैश्विक समस्या बन जाएगी, जिससे निपटना इतना आसान नहीं होगा। बढ़ती आबादी के कारण ही दुनियाभर में तेल, प्राकृतिक गैसों, कोयला इत्यादि ऊर्ज़ा के संसाधनों पर दबाव अत्यधिक बढ़ गया है, जो भविष्य के लिए बड़े खतरे का संकेत है। जिस अनुपात में भारत में आबादी बढ़ रही है, उस अनुपात में उसके लिए भोजन, पानी, स्वास्थ्य, चिकित्सा इत्यादि सुविधाओं की व्यवस्था करना किसी भी सरकार के लिए आसान नहीं है। इस समय चीन की आबादी दुनिया में सर्वाधिक 1.426 अरब है और उसके बाद भारत की आबादी 1.412 अरब है। संयुक्त राष्ट्र का मानना है कि 2050 तक भारत की आबादी 1.668 अरब हो जाएगी जबकि चीन की आबादी उस समय 1.317 अरब रहने का अनुमान है। हालांकि हम इस बात पर थोड़ा संतोष व्यक्त कर सकते हैं कि जनसंख्या वृद्धि दर के वर्तमान आंकड़ों की देश की आजादी के बाद के शुरुआती दो दशकों से तुलना करें तो 1970 के दशक से जनसंख्या वृद्धि दर में निरन्तर गिरावट दर्ज की गई है लेकिन यह गिरावट दर काफी धीमी रही है। आर्थिक सर्वेक्षण के मुताबिक भारत में पिछले कुछ दशकों में जनसंख्या वृद्धि की गति धीमी हुई है। वर्ष 1971-81 के मध्य वार्षिक वृद्धि दर 2.5 प्रतिशत थी, जो 2011-16 में घटकर 1.3 प्रतिशत रह गई। जनसंख्या वृद्धि की रफ्तार को नियंत्रित रखने के लिए औसत प्रजनन दर 2.1 होनी चाहिए और कुछ समय पूर्व राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण द्वारा जारी आंकड़ों से पता चला था कि देश में यह दर 2.2 से घटकर 2 हो गई है तथा राहत की बात यह भी है कि मुस्लिम समुदाय में भी औसत प्रजनन दर तेज गिरावट के साथ 2.36 हो गई है। पिछले कुछ दशकों में देश में शिक्षा और स्वास्थ्य के स्तर में निरन्तर सुधार हुआ है, उसी का असर माना जा सकता है कि धीरे-धीरे जनसंख्या वृद्धि दर में गिरावट आई है लेकिन यह इतनी भी नहीं है, जिस पर जश्न मनाया जा सके। बेरोजगारी और गरीबी ऐसी समस्याएं हैं, जिनके कारण भ्रष्टाचार, चोरी, अनैतिकता, अराजकता और आतंकवाद जैसे अपराध पनपते हैं और जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण किए बिना इन समस्याओं का समाधान संभव नहीं है। विगत दशकों में यातायात, चिकित्सा, आवास इत्यादि सुविधाओं में व्यापक सुधार हुए हैं लेकिन तेजी से बढ़ती आबादी के कारण ये सभी सुविधाएं भी बहुत कम पड़ रही हैं। जनसंख्या वृद्धि की वर्तमान स्थिति की भयावहता के मद्देनजर पर्यावरण विशेषज्ञों की इस चेतावनी को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता कि यदि जनसंख्या वृद्धि की रफ्तार में अपेक्षित कमी लाने में सफलता नहीं मिली तो निकट भविष्य में एक दिन ऐसा आएगा, जब रहने के लिए धरती कम पड़ जाएगी और बढ़ती आबादी जरूरी संसाधनों को निगल जाएगी। विश्वभर में अभी भी डेढ़ अरब से ज्यादा लोग ढलानों पर, दलदल के करीब, जंगलों में तथा ज्वालामुखी क्षेत्र जैसी खतरनाक जगहों पर रह रहे हैं। जहां तक प्रति हजार पुरुषों पर महिलाओं की संख्या का सवाल है तो यह भी कम चिन्ता का विषय नहीं है कि जनसंख्या वृद्धि दर घटते जाने के साथ-साथ प्रति हजार पुरुषों पर महिलाओं की संख्या भी घट रही है। निसंदेह यह सब पुत्र की चाहत में कन्या भ्रूणों को आधुनिक मशीनों के जरिये गर्भ में ही नष्ट किए जाने का ही दुष्परिणाम है। जनसंख्या वृद्धि में अपेक्षित कमी लाने के साथ-साथ जनसंख्या नियंत्रण कार्यक्रमों में इस बात का ध्यान रखे जाने की भी नितांत आवश्यकता है कि पुरुष और महिलाओं की संख्या का अनुपात किसी भी सूरत में न बिगड़ने पाए क्योंकि यदि यह अनुपात इसी कदर गड़बड़ाता रहा तो आने वाले समय में इसके कितने घातक परिणाम सामने आएंगे, उसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। बढ़ती आबादी का सर्वाधिक चिंतनीय पहलू यह है कि इसका सीधा प्रभाव पर्यावरण पर पड़ रहा है। विश्व विकास रिपोर्ट के अनुसार प्राकृतिक संसाधनों से जितनी भी आमदनी हो रही है, वह किसी भी तरह पूरी नहीं पड़ रही, दशकों से यही स्थिति बनी है और इसे लाख प्रयासों के बावजूद सुधारा नहीं जा पा रहा। विश्व बैंक की एक रिपोर्ट के मुताबिक सन् 2050 तक विश्व की दो तिहाई आबादी नगरों में रहने लगेगी और तब ऊर्ज़ा, पानी तथा आवास की मांग और बढ़ेगी जबकि बहुत से पर्यावरणविदों का मानना है कि सन् 2025 तक ही विश्व की एक तिहाई आबादी समुद्रों के तटीय इलाकों में रहने को विवश हो जाएगी और इतनी जगह भी नहीं बचेगी कि लोग सुरक्षित भूमि पर घर बना सकें। इससे तटीय वातावरण तो प्रदूषित होगा ही, पर्यावरण का संतुलन भी बिगड़ जाएगा। बहरहाल, भारत में जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण पाने के लिए हमें कुछ कठोर और कारगर कदम उठाते हुए ठोस जनसंख्या नियंत्रण नीति पर अमल करने हेतु कृतसंकल्प होना होगा ताकि कम से कम हमारी भावी पीढ़ियां तो जनसंख्या विस्फोट के विनाशकारी दुष्परिणामों भुगतने से बच सकें। -योगेश कुमार गोयल

केरल का मार्क्सवादी दुराग्रह

डॉ. वेदप्रताप वैदिक

राज्यपाल आरिफ खान ने इस मामले में दृढ़ता दिखाई है और ऐसे उपकुलपतियों से इस्तीफ़े देने के लिए कहा है। आरिफ खान के इस दृष्टिकोण को भारत के सर्वोच्च न्यायालय और केरल के उच्च न्यायालय ने दो उपकुलपतियों के मामलों में बिल्कुल सही ठहराया है। उन्होंने कहा है कि यदि राज्यों के विश्वविद्यालयों को विश्व विद्यालय अनुदान आयोग की मान्यता और वित्तीय सहायता मिल रही है तो उन्हें नियुक्तियों में उसके नियमों का पालन करना अनिवार्य है।

केरल की मार्क्सवादी सरकार का दुराग्रह अपनी चरम सीमा पर पहुंच गया है। सत्तारूढ़ मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के मुख्यमंत्री पिनराई विजयन ने अपने राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान के विरुद्ध मोर्चा खोल दिया है। उन्होंने राज्यपाल को केरल के विश्वविद्यालयों के कुलपति पद से हटाने के लिए एक अध्यादेश तैयार कर लिया है और अब विधानसभा का सत्र बुलाकार वे अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रस्ताव भी पारित करना चाहते हैं। उनसे कोई पूछे कि राज्यपाल के हस्ताक्षर के बिना कौन सा प्रस्तावित अध्यादेश लागू किया जा सकता है और उनके दस्तखत के बिना कौन सा विधेयक कानून बन सकता है। यानी केरल की विजयन सरकार झूठ-मूठ की नौटंकी में अपना समय बर्बाद कर रही है। जहां तक उपकुलपतियों का सवाल है, उनकी नियुक्तियां विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के नियमों के अनुसार ही होनी चाहिए लेकिन उन नियमों का उल्लंघन करके आप अपने मनमाने उम्मीदवारों को चुन लें और फिर राज्यपाल से कहें कि वे आंख मींचकर उन पर मोहर लगा दें। राज्यपाल आरिफ खान ने इस मामले में दृढ़ता दिखाई है और ऐसे उपकुलपतियों से इस्तीफ़े देने के लिए कहा है। आरिफ खान के इस दृष्टिकोण को भारत के सर्वोच्च न्यायालय और केरल के उच्च न्यायालय ने दो उपकुलपतियों के मामलों में बिल्कुल सही ठहराया है। उन्होंने कहा है कि यदि राज्यों के विश्वविद्यालयों को विश्व विद्यालय अनुदान आयोग की मान्यता और वित्तीय सहायता मिल रही है तो उन्हें नियुक्तियों में उसके नियमों का पालन करना अनिवार्य है। केरल के विश्वविद्यालयों और सरकारी दफ्तरों में सारे नियमों को ताक पर रखकर मार्क्सवादी पार्टी के समर्थकों और कार्यकर्ताओं और नेताओं के रिश्तेदारों को भरा जा रहा है। अदालतों ने मार्क्सवादी नेताओं की पत्नियों को दी गई कई बड़ी नौकरियों को गैरकानूनी घोषित कर दिया है। कई अपराधी पार्टी कार्यकर्ताओं को सरकारी नौकरियां पकड़ा दी गई हैं ताकि उनके सहारे वे कानून की वैतरणी पार कर जाएं और दो साल की नौकरी के बाद जीवनभर पेंशन के मजे लूटते रहें। केरल की मार्क्सवादी पार्टी में यह राजनीतिक भ्रष्टाचार तो उसका शिष्टाचार बन गया है, लेकिन राजनीतिक शिष्टाचार की सारी मर्यादाएं उसने भंग कर दी हैं। साल 2019 में कन्नूर के समारोह में राज्यपाल पर हमला करने वाले पार्टी कार्यकर्ता को दंडित करना तो दूर रहा, मुख्यमंत्री ने उसे अपने निजी स्टाफ में नियुक्त करके उसे सुरक्षा कवच प्रदान कर दिया है। मर्यादा भंग का ऐसा ही काम एक मंत्री ने भी कर दिखाया है। मुख्यमंत्री विजयन को शायद अंदाज नहीं है कि यदि वे यही अतिवादी रवैया बनाए रखेंगे तो वे केरल में कहीं राष्ट्रपति शासन को आमंत्रित न कर डालें और उसके साथ-साथ मार्क्सवाद की मिट्टी भी कहीं पलीत न कर दें।

सेहत मंत्र

साइनस इंफ़ेक्शन होने पर दवाई नहीं सिर्फ एक टुकड़ा लहसुन आएगा काम

साइनस इंफ़ेक्शन जिसे साइनसाइटिस या राइनोसिनिटिस के रूप में भी जाना जाता है, वास्तव में साइनस की सूजन है जिसके परिणामस्वरूप व्यक्ति को कई तरह की परेशानियों का सामना करना पड़ता है। इनके लक्षणों में भरी हुई या बहती हुई नाक, बुखार, सिरदर्द, गले में खराश या खांसी आदि होती है। साइनस संक्रमण एक आम स्वास्थ्य समस्या है और ठंड के मौसम में लोगों को इस समस्या का अधिक सामना करना पड़ता है। इतना ही नहीं, साइनसाइटिस होने पर व्यक्ति को अपने दैनिक कार्य करने में भी परेशानी होती है। हालांकि अधिकतर लोग यह समस्या होने पर दवाई लेते हैं, लेकिन हर बार दवाई लेना अच्छा विचार नहीं है। इससे आपको कुछ समय के लिए भले ही राहत मिल जाए, लेकिन लम्बे समय में आपको इन दवाईयों के नुकसान ही झेलने पड़ते हैं। ऐसे में आप अपनी किचन से ही साइनस का इलाज ढूंढ सकते हैं। ऐसी ही एक चीज है लहसुन। यूं तो इसका इस्तेमाल भोजन में किया जाता है, लेकिन इसमें ऐसे कई तत्व जैसे एलिसिन आदि पाया जाता है, जो साइनस संक्रमण को प्रभावी रूप से दूर करता है। इतना ही नहीं, नेचुरल होने के कारण इसका कोई नुकसान भी नहीं होता। यूं तो लहसुन का उपयोग कई तरह की स्वास्थ्य समस्याओं में किया जाता है, लेकिन साइनस संक्रमण में इसे बेहद प्रभावशाली माना गया है। दरअसल, इसमें एलिसिन कंपाउड पाया जाता है, जो लहसुन का एंटीबायोटिक, एंटीवायरल, एंटीफंगल, एंटी-बैक्टीरियल और एंटीऑक्सीडेंट गुण प्रदर्शित करते हैं। वहीं इसके अन्य तत्वों में एलिन और एजीन पाया जाता है, जो सर्क्यलटोरी सिस्टम और इम्यूनोलॉजिकल सिस्टम के हीलिंग इफ़ेक्ट को बढ़ाते हैं। लहसुन स्वाभाविक रूप से आपके नाक मार्ग में सूजन को कम करता है। ऐसे में अगर साइनस इंफ़ेक्शन होने पर लहसुन का प्रयोग किया जाए तो यह बेहद प्रभावी तरीके से काम करता है। लहसुन की मदद से आप नोज़ ड्रॉप बनाकर अपनी नाक में डाल सकते हैं। इससे आपको काफी राहत महसूस होगी। नोज़ ड्रॉप बनाने के लिए आधा कप डिस्टिल्ड वॉटर लेकर उसमें एक लहसुन की कली को कुचलकर डालें और कुछ घंटों के लिए इसे ऐसे ही छोड़ दें। अब पानी को छान लें ताकि पानी में लहसुन के टुकड़े ना रह जाएं।

धर्म मंत्र

भक्तों के संकट क्षण में हर लेते हैं श्रीराम भक्त हनुमानजी

रामायण युग में दिव्य शक्तियों से परिपूर्ण रामभक्त हनुमान जी को कौन नहीं जानता और कौन नहीं समझता है। रामभक्त हनुमान जी सर्वगुण सम्पन्न, बाल ब्रह्मचारी, हर प्रकार के कठिन से कठिन कार्य को करने के लिए सदा तत्पर रहने वाले हैं। हनुमान जी एक ऐसे महान देवता हैं जो आज कलियुग के निराशावादी जीवन में भी उत्साह का संचार करते रहते हैं। हनुमान जी कलियुग में आदर्श जीवन कैसे जिया जाये इसकी प्रेरणा प्रदान करते हैं। उत्तर भारत में हनुमान जयन्ती का पर्व अर्धरात्रि व्यापिनी कृष्ण चर्तुदशी को मनाया जाता है। हनुमान जी के जन्म का उल्लेख अगस्त्य संहिता में हुआ है। दूसरी ओर चैत्र मास की एकादशी और पूर्णिमा पर भी हनुमान जी के जन्म के प्रमाण मिलते हैं। हनुमान जयंती के दिन हनुमान जी की विशेष पूजा अर्चना की जाती है। जिससे कई गुना लाभ सभी भक्तों को मिलता है। हनुमान जयंती के अवसर पर हनुमान जी के सभी मंदिरों को बेहद भव्य तरीके से सजाया जाता है। हनुमान जयंती पर उनका षोडपोचार पूजन तथा श्रृंगार किया जाता है। हनुमान जी कलियुग में आज के वातावरण में भी एक सर्वश्रेष्ठ संकटहर्ता हैं। परिवारों के बड़े-बुजुर्ग भी जब उनके बच्चे निराशावाद में चले जाते हैं तब अपने बच्चों को हनुमान जी की शरण में जाने को कहते हैं क्योंकि हनुमान जी का चित्र देखने मात्र से ही सभी प्रकार की निराशा दूर होने लगती है। वैसे भी उल्लेख मिलता है कि जब हनुमान जी कभी-कभी निराश होने लगते थे तब वे स्वयं अपने प्रभु श्रीराम की शरण में चले जाते थे। इसी कारण एक गीत गुनगुनाया भी जाता है कि, ''हनुमान जी न चलें श्रीराम के बिना और श्रीराम जी न चलें हनुमान के बिना।

पर्यटन

नागपुर: सतरंगी पहचान वाला बहुत ही खूबसूरत शहर

कुदरती खूबसूरती और ऐतिहासिक समृद्धि का सुंदर मेल नजर आता है यहां। यदि के सम्मोहित कर देने वाले किलों और पुराने मंदिरों में शहर की विरासत की छाप देख सकते हैं। नागपुर महाराष्ट्र के कुछ खास शहरों में से एक है जहां झीलों और हरियाली से भरी वादियां आपका मन मोह लेंगी। खासतौर पर कुदरत के प्रेमियों के लिए यह स्थान बाहें फैलाए स्वागत करने के आतुर रहता है। यदि आप वाइल्ड लाइफ प्रेमी भी हैं और टाइगर सफारी करना चाहते हैं यह शहर आपकी प्रतीक्षा में है। दरअसल, सबसे हरा और सबसे स्वच्छ शहरों में से एक नागपुर में अनेक वाइल्ड लाइफ सेंक्चुअरी हैं। संतरा नगरी तो यह है ही। खास बात है कि आप यहां के संतरा बगान की सैर के लिए भी आ सकते हैं। फूड लवर्स को तो अपना मुरीद बना लेता है यह शहर। यह बौद्ध-दलित लोगों के लिए आंदोलन का एक मुख्य केंद्र रहा है। बाबा साहेब भीम राव अंबेडकर ने यही अपने लाखों अनुयायियों के साथ बौद्ध-धर्म की दीक्षा ली थी। कुल मिलाकर, विविधता से भरपूर है यह शहर, जिसका हर रंग खास है। अठारहवीं शताब्दी के आरम्भ में गोंड राजा बख्त बुलंद ने नागपुर शहर की स्थापना की गई थी। नागपुर ब्रिटिशकालीन मध्य भारत की एक रियासत थी, जिसे पेशवा बाजीराव प्रथम के समय रघुजी भोंसले ने अपनी राजधानी बनाया। 1761 ई. के बाद नागपुर के भोंसले स्वतंत्र रूप से इस पर शासन करने लगे। 1817 ई. में यह ब्रिटिश प्रभाव में आ गया। 1854 ई. में लॉर्ड डलहौजी ने नागपुर को नागपुर नरेश के उत्तराधिकारी न होने के कारण कब्जा कर ब्रिटिश साम्राज्य का अंग बना दिया और वहां के राजवंश के कीमती रत्न-आभूषणों को नीलाम कर दिया। वर्तमान में नागपुर में भोंसले वंश के शासनकाल का एक दुर्ग तथा अन्य भवनादि स्थित हैं। 1861 ई. में इसे मध्य प्रांत की राजधानी बना दिया गया, जो 1956 ई. तक रही। 1956 में भाषा के आधार पर हुए राज्य पुनर्रचना ने नागपुर को महाराष्ट्र का हिस्सा और उसकी उपराजधानी बना दिया।

मंत्री जी! दबंग हमरी जमीन पा कब्जा करे है हमार मदद करो ?

राज्यमंत्री ने लगाया जनता दर्शन, सुनी फरियाद

कैनविज टाइम्स संवाददाता

बाराबंकी। खाद्य एवं रसद राज्यमंत्री ने सिरौलीगौसपुर के निरीक्षण भवन में लोगों की समस्याएं सुनी और संबंधित विभाग के अधिकारियों को निस्तारण के निर्देश दिए।खाद्य एवं रसद राज्य मंत्री सतीश चंद्र शर्मा ने सिरौलीगौसपुर क्षेत्र के लोगों की समस्याएं सुनी। दरियाबाद एवं रामनगर विधानसभा के मध्य सिरौलीगौसपुर के निरीक्षण भवन में प्रत्येक माह के तीसरे शनिवार को लोगों की समस्या सुनने के लिए मौजूद रहे। इसी क्रम में महमूदाबाद के राकेश कुमार सिराज अहमद व अन्य लोगों ने बताया कि गांव के अंदर बंजर की दो बीघा भूमि को गांव के ही एजाज रसूल ने बैरी केटिंग करके उस पर कब्जा कर लिया है इस संबंध में मंत्री ने उप जिलाधिकारी से तत्काल जांच करने की बात कही। इसके अतिरिक्त बदोसराय की शिव देवी ने बताया कि वह जनता इंटर कॉलेज में रसोईया का काम करती हैं पिछले एक महीने से वहां के प्रधानाचार्य ने उन्हें हटा दिया है। वहीं मधनापुर के गंगादीन ने शिकायत किया कि उसके पिता की संपत्ति में उसके सगे भाई द्वारा बेईमानी से कब्जा किया जा रहा है । इन सभी शिकायतों को देखते हुए राज्य मंत्री ने उप जिलाधिकारी खंड विकास अधिकारी एवं विद्युत विभाग के अधिकारियों को निस्तारण के निर्देश दिए हैं । इस मौके पर अपर जिलाधिकारी राकेश कुमार सिंह उप जिलाधिकारी प्रिया सिंह तहसीलदार सुरेंद्र कुमार खंड विकास अधिकारी जितेंद्र कुमार विद्युत विभाग के अधिशासी अभियंता डीके यादव उपखंड अधिकारी रामगोपाल व अवर अभियंता सुनील कुमार चौधरी मौजूद रहे।

बेहतर गुणवत्ता के साथ हो सिल्ट की सफाई तभी टेल तक पहुंचेगा पानी : सुन्दर लाल दीक्षित

कैनविज टाइम्स संवाददाता

❐ लिल्हौरा माइनर की सिल्ट सफाई कार्यक्रम का पूर्व विधायक ने किया शुभारम्भ

हैदरगढ़ बाराबंकी । माइनरों की सफाई गुणवत्ता पूर्ण एव समय बद्ध तरीके से हो ताकि टेल तक पानी पहुच सके आने वाली गेंहू की फसल में सिंचाई समस्या न हो इसके बेहतर इंतजाम किए जाए उक्त बात पूर्व विधायक सुन्दर लाल दीक्षित ने लिल्हौरा माइनर की सफाई के उद्घाटन के दौरान कही ।

पूर्व विधायक सुन्दर लाल दीक्षित ने कहा वर्तमान में डबल इंजन की सरकार देश और प्रदेश के किसानो की आय में बढोत्तरी कर उन्हें मुख्य धारा से जोड़ने का प्रयाश कर रही है ऐसे में किसानो को सिंचाई हेतु पानी की समस्या न हो इसके लिए समय से सिल्ट की सफाई का काम शुरू होना है ।

कार्यक्रम में बतौर मुख्यअतिथि सुन्दर लाल दीक्षित ने फावड़ा चलकर सिल्ट सफाई कार्यक्रम का शुभारम्भ किया वही अधिशाषी अभियंता नवनीत कुमार , सहायक अभियंता अजय प्रताप सिंह ने संयुक्त रूप से मुख्य अतिथि का स्वागत किया । बताते चले है किसानो को सिंचाई हेतु समस्या न हो इसके लिए समय से सिल्ट सफाई का कार्य शुरू होना था जिसके सम्बन्ध में नवम्बर माह में सिल्ट सफाई कार्यक्रम शुरू हो चुका है आज ब्राम्हनान वार्ड स्थित लिल्हौरा माइनर की सफाई हेतु कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया।

प्रदेश इस दौरान भाजपा मंडल अध्यक्ष कृष्ण कुमार सिंह मुन्नू , बचान रावत अधिशाषी अभियंता नवनीत कुमार , सहायक अभियंता अजय प्रताप सिंह , जूनियर इंजीनियर नवनीत कुमार वर्मा , शैलेन्द्र तिवारी , अनुराग कुमार गोंड विक्रम सभरवाल आदि मौजूद रहे ।

बिजली विभाग व परिवहन विभाग के विरूद्ध श्रीराम सेवा समिति ने खोला मोर्चा सौंपा, ज्ञापन

कैनविज टाइम्स संवाददाता

रामसनेहीघाट बाराबंकी ।जनहित की समस्याओं को देखते हुए श्री राम सेवा समिति दल उत्तर प्रदेश के राष्ट्रीय अध्यक्ष डी एन एस त्यागी के द्वारा संपूर्ण समाधान दिवस तहसील रामसनेहीघाट जनपद बाराबंकी में त्वरित समस्याओं के समाधान कराने हेतु कई प्रार्थना पत्र लिखित रूप से दिया प्रथम बिंदु में परिवहन विभाग के द्वारा लखनऊ से बाराबंकी होते हुए टिकरा बाजार तक बस का आवागमन होता है जिस पर संविदा कर्मी उपसंचालक उमेश के द्वारा आए दिन यात्रियों से दुर्व्यवहार करने एवं गाली गलौज आम बात हो गई है जिससे यात्रियों को आवागमन में बाधाएं उत्पन्न होती हैं इसी क्रम में गत दिनों राजू ओझा की तरफ से आइजीआरएस के माध्यम से उक्त संविदा कर्मी के विरुद्ध तत्काल प्रभाव से कार्यवाही करने हेतु शिकायत दर्ज कराई गई थी जिस पर उच्च विभाग द्वारा दिनांक 15 नवंबर 2022 को उभय पक्षों के बीच तत्काल जांच एवं प्रभावी कार्यवाही हेतु समय निश्चित किया गया था जिस पर शिकायतकर्ता पीड़ित को उक्त विभाग द्वारा सूचना भी नहीं दी गई थी लेकिन किसी तरह जानकारी होने पर पीड़ित अपना पक्ष रखने महोदय के पास पहुंचा तब महोदय द्वारा पीड़ित का पक्ष सुनकर टालमटोल करते हुए उक्त संविदा कर्मी के बचाव की ही बात करते रहे ऐसी स्थिति में पीड़ित पक्ष को न्याय पाना असहज महसूस हो रहा है जिसकी शिकायत लिखित रूप से श्री राम सेवा समिति उत्तर प्रदेश के राष्ट्रीय अध्यक्ष द्वारा त्वरित भ्रष्ट उपसंचालक संविदा कर्मी के विरुद्ध तत्काल कार्यवाही करने हेतु पत्र सौंपा गया पत्र संख्या 2 उपखंड अधिकारी देवीगंज जनपद बाराबंकी विद्युत विभाग के द्वारा गरीब जनता तथा उपभोक्ताओं का मनमाने ढंग से शोषण किया जा रहा है जिसमें आए दिन अवैध वसूली को लेकर शिकायतें प्रकाश में रहती हैं उसी क्रम में उपखंड अधिकारी महोदय के द्वारा एक अवैध वसूली का प्रकरण संज्ञान में आया है उपभोक्ता राजेंद्र कुमार ग्राम बबुरी गांव थाना असंद्रा जनपद बाराबंकी के द्वारा सितंबर माह सन 2019 में पीडी करवाकर सारा पैसा जमा कर कनेक्शन कटवा दिया गया था परंतु उपखंड अधिकारी देवीगंज के द्वारा पुनः पत्र जारी करते हुए लगभग ?36000 की मांग की गई जिसकी तत्काल जांच एवं दोषियों के विरुद्ध अवैध वसूली किए जाने को लेकर राष्ट्रीय अध्यक्ष डीएनए त्यागी के द्वारा लिखित पत्र देते हुए दोषियों के विरुद्ध दंडात्मक विधिक कार्यवाही की मांग की गई है पत्र संख्या 3 देवीगंज सुबेहा मार्ग स्थित गोमती नदी राजघाट पुल के पास मुख्य सार्वजनिक रास्ते पक्की सड़क पर 3 गहरे गड्ढे जानलेवा काफी दिनों से साबित हो रहे हैं परंतु उक्त विभाग के द्वारा आज तक नजरअंदाज किया जा रहा है जबकि प्रदेश सरकार के द्वारा सड़कों को गड्ढा मुक्त कराए जाने का आह्वान किया जाता है परंतु उक्त गड्ढों के प्रति क्या विभाग कोई बड़ा हादसा एवं जान माल के खतरे का इंतजार कर रहा है राष्ट्रीय अध्यक्ष के द्वारा पत्र सोते हुए देवीगंज सुबेहा मार्ग की सड़क को चौड़ीकरण एवं गड्ढा मुक्त कराए जाने हेतु त्वरित कार्यवाही की अपेक्षा की गई है।

पुलिस व मानवाधिकार पर वाद विवाद प्रतियोगिता आयोजित

कैनविज टाइम्स संवाददाता

बाराबंकी। रिजर्व पुलिस लाइन्स स्थित सभागार में पुलिसकर्मियों के मध्य पुलिस एवं मानवाधिकार पर वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया । रिजर्व पुलिस लाइन्स स्थित सभागार में अपर पुलिस अधीक्षक, अखिलेश नारायण सिंह की अध्यक्षता में पुलिसकर्मियों के मध्य 12वीं सदी- पुलिस एवं मानवाधिकार विषय पर वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें पक्ष की तरफ से एक मुख्य आरक्षी व दो आरक्षियों एवं विपक्ष की तरफ से एक उ0नि0 व एक आरक्षी द्वारा प्रतिभाग किया गया। प्रतियोगिता में आरक्षी अनुज कुमार नागर द्वारा पक्ष में एवं उ0नि0 कृष्ण देव सिंह द्वारा विपक्ष में अपना वक्तव्य देकर प्रथम स्थान प्राप्त किया गया। अपर पुलिस अधीक्षक दक्षिणी द्वारा प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले पुलिसकर्मियों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर क्षेत्राधिकारी लाइन्स, प्रतिसार निरीक्षक एवं अन्य अधिकारी कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

न्यूज डायरी

संदिग्ध परिस्थितियों में अधेड़ का शव पेड़ से लटकता मिला मचा हडकंप

रामसनेहीघाट बाराबंकी। जैदपुर थाना क्षेत्र अहमद पुर चौकी अंतर्गत गांव खंता पुरवा में कुछ दूर स्थित भट्ठा के अमरूद के पेड़ मे इसी गांव के निवासी राकेश वर्मा पुत्र ईश्वर दीन उम्र 50 फासी लगाकर आत्महत्या कर ली। जानकारी के अनुसार शुक्रवार की शाम को राकेश से किसी बात को लेकर घर पर झगड़ा हुआ था।रात में घर से निकलकर कुछ दूरी एक ईट भट्ठा के पास एक खेत मे अमरूद के लगे पेड़ पर गमछा व रस्सी के सहारे फाँसी लगाकर आत्महत्या कर लिया। सुबह के 6 बजे के आसपास स्थानीय लोगों ने उक्त घटना की जानकारी परिजनों व अहमदपुर चौकी पुलिस को दी जिसके बाद पुलिस घटनास्थल पहुंच उक्त शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज मामले की जांच में जुट गई है।

बत्तीस फुट लंबी दीवाल गिराकर मलबा गायब करने का आरोप

रामसनेहीघाट बाराबंकी। तहसील रामसनेही घाट थाना असंद्रा के क्षेत्र में दबंग पर बत्तीस फुट लंबी आठ फुट ऊंची दीवाल गिरा कर मलबे को रातो रात गायब करने का सनसनीखेज मामला सामने आया है। शिकायत पर पुलिस ने आरोपी पर मुकदमा पंजीकृत कर लिया है। प्राप्त जानकारी अनुसार पूरे छविनाथ शुक्ल मजरे सूरजपुर निवासी सुनील कुमार शुक्ला ने पुलिस को लिखित प्रार्थना पत्र देकर बताया कि गाँव के ही रामप्रकाश पुत्र नंदकिशोर नंदा ने मकान से सटी बनी दीवाल को मददगारो की मदद से रातों रात दीवाल गिरा कर ईट गायब कर दी है सुनील ने बताया कि उक्त रामप्रकाश अपराधी किस्म का व्यक्ति है। व एलानिया धमकी देता है। सुनील के प्रार्थना पत्र पर मुकामी पुलिस ने मुकदमा पंजीकृत कर जांच शुरू कर दी है।

रेलवे के नाम पर रात्रि में धड़ल्ले से आबादी से होकर चल रहे डंफर

मसौली बाराबंकी। थाना सफदरगंज अंतर्गत ग्रामसभा रहरा मऊ मैं पिछले 6 दिनों से रेलवे के नाम पर खनन ठेकेदार द्वारा बेखौफ होकर रेलवे के नाम पर रात और दिन में धड़ल्ले से खनन किया जा रहा है।लगातार आबादी के बीच से होकर मिट्टी भरे डंफर गुजर रहे है।मिट्टी भरे डंफरो पर किसी भी प्रकार की पन्नी या तिरपाल का प्रयोग नहीं किया जा रहा है।सड़क पर टैंकर द्वारा पानी डलवाने की भी कोई व्यवस्था नहीं है। सड़क पर धूल उड़ाते हुए डंफर धड़ल्ले से दौड़ रहे है।रात्रि में हो रहे मिट्टी खनन को लेकर बाराबंकी खनन अधिकारी से जानकारी करने पर बताया गया की हमारे द्वारा दिन में मिट्टी खनन का परमिशन जारी किया गया है।हो सकता है खनन करवाने वाले ने एस पी साहब से रात में खनन करने की परमिशन ली हो।

वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई की जयंती धूमधाम से मनाई

बाराबंकी। भारत के स्वतंत्रता संग्राम की अमर बलिदानी वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई जन्म-जयन्ती कम्पोजिट विद्यालय सिरौलीगौसपुर में हर्षोल्लास पूर्वक मनाई गई। सभी शिक्षको व बच्चों ने महारानी लक्ष्मीबाई की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें नमन किया। इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत खूब लड़ी मर्दानी गीत पर बच्चों द्वारा भाव पूर्ण नृत्य प्रस्तुत किया गया। शिक्षकों ने बच्चों को महारानी लक्ष्मी बाई के त्याग और बलिदान के बारे में बताया तथा यह भी बताया कि महारानी लक्ष्मी बाई के जीवन से हमें प्रेरणा मिलती है कि हमें कभी भी अन्याय और अत्याचार के सामने झुकना नहीं चाहिए।महारानी लक्ष्मीबाई भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की एक अमर बलिदानी वीरांगना है। हम सब सदैव उनके ऋणी है। उनके त्याग और बलिदान के बारे में बताते हुए शिक्षक रुद्र प्रताप पाण्डेय ने कहा कि लड़ाई की रिपोर्ट में ब्रितानी जनरल ह्यूरोज़ ने टिप्पणी किया है कि रानी लक्ष्मीबाई अपनी सुन्दरता, चालाकी और दृढ़ता के लिये उल्लेखनीय तो थी ही विद्रोही नेताओं में सबसे अधिक ख़तरनाक भी थी। कार्यक्रम साज- सज्जा व तैयारी का कार्य श्रीमती गीता एवं निर्देशन रूद्र प्रताप पांडेय ने किया तथा कुमारी महिमा, अक्षरा ,प्रियांशी ,साक्षी, अपूर्वा ,अंशिका ,गरिमा ,महक ,निधि बच्चों ने कार्यक्रम प्रस्तुत किया । इस अवसर पर कुंवर अखंड प्रताप मौर्य ,सुनील कुमार यादव ,अमित कुमार मिश्रा, मुकेश कुमार , चंद्र प्रकाश सिंह आदि उपस्थित थे।

पीएसी के जवानों के बीच वादविवाद प्रतियोगिता आयोजित

कैनविज टाइम्स संवाददाता

मसौली बाराबंकी। दसवीं वाहिनी के मनोरंजन कक्ष मे सेनानायक सुनील कुमार सिंह की अध्यक्षता में वाहिनी मनोरंजन कक्ष में राष्ट्रीय मानवाधिकार के तत्वावधान में पीएसी जवानों के मध्य वाद-विवाद प्रतियोगिता कराई गयी।आयोजन के निर्णायक सहायक सेनानायक अरशद जमाल सिद्दीकी एवं डॉ. जाकिर हुसैन द्वारा 21 वी सदी में पुलिस एव मानवाधिकार शीर्षक के विषय पर वाद-विवाद प्रतियोगिता में 21वीं सदी की पुलिस की तरफ से पक्ष रखते हुए आरक्षी गौरव श्रीवास्तव प्रथम, आरक्षी जितेन्द्र पाठक द्वितीय व आरक्षी बलराम तृतीय स्थान पर रहे, वहीं मानवाधिकार की तरफ से पक्ष रखने वाले आरक्षी बृजेश चौहान प्रथम, आरक्षी दीपक कुमार सिंह द्वितीय व आरक्षी विवेक कुमार तृतीय स्थान पर रहे । उक्त कार्यक्रम के दौरान शिविरपाल न्याज अहमद काजमी, सूबेदार मेजर चंद्रेश राव, पीसी देवेंद्र मौर्य, पीसी अनिल कुमार, पीसी सच्चिदानंद दीक्षित आदि उपस्थित रहें ।

स्वच्छता हमारी नैतिक जिम्मेदारी, जनता के सहयोग से हो सफल होगा मिशन :डॉ. संस्कृता मिश्रा

कैनविज टाइम्स संवाददाता

मसौली बाराबंकी। विश्व स्वच्छता दिवस के मौके पर आज क्षेत्र की सभी ग्राम पंचायतों में स्वच्छता रन का आयोजन कर लोगो को स्वच्छता के प्रति जागरूक करते हुए स्वच्छता की शपथ दिलाई गयीं।

खण्ड विकास अधिकारी डॉ0 संस्कृता मिश्रा, सहायक विकास अधिकारी पंचायत जानकीराम के निर्देशन में क्षेत्र की सभी ग्राम पंचायतों में स्वच्छता के प्रति जागरूक किया गया तथा पंचायत भवनों से स्वच्छता रैली निकाली गयी। ग्राम पंचायत बड़ागांव के पंचायत भवन में आयोजित कार्यक्रम में ग्राम पंचायत अधिकारी कृष्ण कुमार सिंह ने कहा कि स्वच्छता किसी भी देश की पहचान होती है जब देश स्वच्छ होगा तभी उस देश के नागरिक स्वस्थ होंगे और जब नागरिक स्वस्थ होंगे तो देश का विकास काफी तीव्र गति से होगा। उन्होंने

लोगों को दिलाई गई स्वच्छता की शपथ

आम लोगों को भी इस अभियान को सफल बनाने की अपील की उन्होंने ने कहा कि स्वच्छता में ही देवी देवताओं का वास होता है। उन्होंने छात्र-छात्राओं से अपील करते हुए कहा कि वे अपने गांव, टोला, मुहल्ले में स्वच्छता अभियान चलाकर ग्रामीणों को स्वच्छता के प्रति जागरूक करने की बात कही। इस मौके पर ग्राम प्रधान प्रतिनिधि नूर मोहम्मद, पंचायत सहायक मोनिका वर्मा, पप्पू रस्तोगी बीडीसी पप्पू गौतम मुस्ताक राइन, नूरुल आमीन, लखन रावत, इशरत अली, वीरेंद्र कुमार, राजेन्द्र यादव, वन्दना प्रजापति, रेशमा यादव, रोशन यादव सहित अन्य ग्रामीण मौजूद रहे। इसी क्रम में ग्राम पंचायत दादरा में ग्राम प्रधान मुबीन सिकन्दर की अध्यक्षता में स्वच्छता रन का आयोजन किया गया।

बर्निंग ट्रेन होते होते बची अमृतसर साप्ताहिक ट्रेन

रामसनेहीघाट बाराबंकी। बाराबंकी में न्यू तिनसुकिया से अमृत सर साप्ताहिक एक्सप्रेस बर्निंग ट्रेन होने से बाल बाल बची। न्यू तिनसुकिया एक्सप्रेस के एक बोगी से ब्रेक के पहिये से धुआं निकालने लगा और पहिया लाल हो गया। ट्रेन जब लखनऊ स्टेशन से निकली तो वहां पर कर्मचारी ने रेलवे कंट्रोल को सूचना दी गई। सैद खानपुर स्टेशन से कुछ दूरी पर ट्रेन को मेन लाइन पर रोक दिया गया। इसके बाद धुएं पर काबू पाया गया। सैदखानपुर स्टेशन के अधीक्षक राम प्रताप के अनुसार न्यू तिनसुकिया एक्सप्रेस को ब्रेक बाइंडिंग की सूचना पर मेन लाइन पर रोका गया था। तकनीकी स्टाफ द्वारा इसे ठीक कर दिया गया। उसके बाद ट्रेन को करीब आधा घंटा रोके जाने के बाद ट्रेन को रवाना कर दिया गया।

बच्चों में बढ़े आत्मविश्वास व ज्ञान की हो बृद्धि इसके लिए चलाया जा रहा मिशन पहचान : ओपी त्रिपाठी

कैनविज टाइम्स संवाददाता

❐ जिला विद्यालय निरीक्षक ने विद्यालय में पहुँचकर जानी अभियान की जमीनी हकीकत

बाराबंकी। जिला विद्यालय निरीक्षक द्वारा बंकी ब्लॉक स्थित चार माध्यमिक विद्यालयो में पहुंचकर जनपद में चलाए जा रहे मिशन पहचान जमीनी हकीकत को जाना। इस दौरान उन्होंने राजकीय हाई स्कूल रसूलपुर, राजकीय हाई स्कूल जहांगीराबाद, सतनाम विद्यापीठ उच्चतर माध्यमिक विद्यालय व डीएवी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय छात्रों से मिलकर संवाद स्थापित किया। बता दें कि बीते तीन महीनों से जिला विद्यालय निरीक्षक ओपी त्रिपाठी के निर्देशन पर बच्चों में आत्मविश्वास व ज्ञान में तेजी से वृद्धि के साथ-साथ उनके चौमुखी विकास के लिए राजकीय व सहायता प्राप्त माध्यमिक स्तर के सभी विद्यालयों में मिशन पहचान नाम का एक विशेष अभियान चलाया जा रहा है। जिसकी जमीनी हकीकत जानने के लिए शनिवार को जिला विद्यालय निरीक्षक ने शनिवार को चार विद्यालयों में पहुंचकर बच्चों से संवाद स्थापित किया। जिसमें उन्होंने पाया कि मिशन पहचान के तहत जिस आत्मविश्वास व ज्ञान की वृद्धि की नीव वह रखना चाहते थे। उसमें काफी हद तक उनके अधीनस्थ अध्यापकों व विद्यालय के प्रधानाचार्यों ने हाथ बटाया है। यहां डीआईओएस ने यदा-कदा कमियां पाने पर उनको जल्द सुव्यवस्थित करने के निर्देश दिए।

निरीक्षण के दौरान जिला विद्यालय निरीक्षक द्वारा विद्यालय स्टाफ के साथ परिचर्चा कर गुणवत्ता में सुधार करने हेतु बहुमूल्य टिप्स दिए। जिला विद्यालय निरीक्षक द्वारा सुझाव दिया गया कि बच्चों को क्लास में क्रियाशील रखा जाए और सीखने सिखाने की प्रक्रिया में विद्यार्थियों को भी सहभागी बनाया जाए विद्यार्थियों में रटने की बजाय समझने की प्रवृत्ति विकसित की जाए नया अध्याय पढ़ाने से पहले पुनरावृति भी कराई जाए शनिवार को फन डे में सप्ताह में पढ़ाए गए पाठ/विषय वस्तु पर आधारित क्विज भी कराई जाए जिससे बच्चे अपडेट रहेंगे गुरु जी स्वाध्याय के द्वारा अपडेट रहें।

अंतर्राष्ट्रीय बाल अधिकार दिवस पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

कैनविज टाइम्स संवाददाता

रामसनेहीघाट बाराबंकी। बनीकोडर ब्लॉक के ग्राम राजेपुर स्थित गायत्री देवी इंटर कॉलेज में चाइल्ड लाइन 1098 जिला उपकेन्द्र बनीकोडर की द्वारा अंतर्राष्ट्रीय बाल अधिकार दिवस पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित गया। कार्यक्रम में चाइल्ड लाइन जिला समन्वयक जियालाल टीम प्रभारी अवधेश कुमार सदस्य अखिलेश कुमार राम कैलाश अमित कुमार अंजलि जयसवाल बंदना ने बाल अधिकारों के बारे में लोगों को जागरुक किया।

बच्चों को सम्बोधित करते हुए जिला समन्वयक ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा 20 नवम्बर 1989 को पारित बाल अधिकार समझौते में भारत सहित 189 देशों ने हस्ताक्षर कर बच्चों के अधिकारों के प्रति बचनबद्ध हुए हैं। बच्चों को मुख्य रुप से चार अधिकार सुनिश्चित करने का निर्देश बाल अधिकार कानून देता है जिसमे जीने का अधिकार, विकास का अधिकार, संरक्षण पाने का अधिकार, सहभागिता का अधिकार शामिल किया गया है। टीम लीडर अवधेश कुमार ने बताया कि बाल अधिकार को मनाने का उद्देश्य भारत के हर साल बाल अधिकार दिवस बच्चों के अधिकारों और सम्मान को सुनिश्चित करने के लिए मनाया जाता है समाज के सभी नागरिकों को चाहिए कि उनका पूरा विकास और सुरक्षा का आनंद लेने का मौका देना चाहिए और सुनिश्चित करें कि बाल अधिकार के कानून नियम और लक्ष्य का पालन हो साथ ही बाल अधिकार को मजबूत बनाने के लिए समाज को लगातार इस पर कार्य करना होगा चाइल्ड लाइन सदस्य अखिलेश कुमार ने कहा कि बच्चे देश का भविष्य है अतः इनके विकास के बारे में चिंतन करना तथा कुछ ठोस प्रयास करना देश की जिम्मेदारी है। टीम सदस्य अंजलि जायसवाल ने बताया कि देश का समुचित विकास बच्चों के विकास के बिना संभव नहीं है इस दिवस को मनाने का उद्देश्य बच्चों को अधिकार संरक्षण व शिक्षा को बढ़ावा देना है। टीम सदस्य अमित कुमार ने कहा कि बच्चों के विकास से देश के विकास को मजबूती मिलती है जितना शक्तिशाली देश के बच्चे होते हैं उतना ही उस देश का युवा प्रभावशाली बनता है और उतना ही उज्जवल उस देश का भविष्य होता है। उन्होंने बच्चों को लैंगिक अपराध के बचने के उपाय के साथ धूम्रपान से दूर रहने के उपाय भी बताएं सदस्य वंदना ने 1098 व अन्य टोल फ्री नंबर व बच्चों के लिए सरकारी योजना की जानकारी दी। युवा कल्याण एवं प्रादेशिक विकास दल अधिकारी बनीकोडर आलोक कुमार सिंह के सहयोग से विद्यालय की मेधावी छात्रा नाजिया बानो को सम्मानित किया गया। विद्यालय के प्रधानाचार्य प्रदीप कुमार ने सभी अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए चाइल्ड लाइन के कार्यों की सराहना की इस अवसर पर अभिषेक सिंह वर्मा अजय प्रताप वर्मा गरिमा अंकिता सौम्या आदि छात्र छात्राएं व अभिभावक गण मौजूद रहे।

दूसरा टी20: भुवनेश्वर की 'कशमकश' में उलझा भारत 'गेम टाइम' के लिये बेताब

एजेंसी

माउंट मोनगानुई। युवा भारतीय टीम को रविवार को यहां दूसरे टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच में न्यूजीलैंड से कड़ी चुनौती का सामना करने की उम्मीद है जिसमें कप्तान हार्दिक पंड्या की निगाहें कुछ 'गेम टाइम' हासिल करने पर लगी होंगी, पर भुवनेश्वर कुमार के सामने भी इस छोटे प्रारूप में बने रहने की कठिन चुनौती होगी। वेलिंगटन में श्रृंखला का शुरूआती मैच बारिश के कारण रद्द हो गया था और भारतीय खिलाड़ी यहां मैदान पर उतरने के लिये बेताब होंगे। यह मैदान जिस जगह स्थित है, उसे 'बे ऑफ प्लेंटी' कहा जाता है और जहां तक टी20 प्रारूप में रवैये का संबंध है तो भारतीय क्रिकेट में इस समय सोच विचारने के लिये काफी कुछ है। 'बे ओवल' मैदान की बाउंड्री काफी बड़ी हैं और यह एक खुला मैदान है जो वेलिंगटन में नहीं था। इस दौरे पर भारतीय टीम प्रबंधन को 33 वर्षीय

भुवनेश्वर कुमार की मौजूदगी को लेकर चल रही दुविधा से निपटना पड़ सकता है। कुछ अनसुलझे सवाल हैं जिनका जितना जल्दी जवाब मिल जाये, भारतीय क्रिकेट के लिये उतना ही बेहतर होगा। क्या 2024 में होने वाले टी20 विश्व कप में भुवी होंगे जबकि उनकी रफ्तार में गिरावट दिख रही है? क्या उनके पास अपने मुद्दों को सुलझाने के लिये इतना समय है क्योंकि वह बल्लेबाजी के मुफीद पिच पर अब इतने कारगर नहीं रहे हैं? अगले साल ज्यादा टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच नहीं हैं और वह काफी हद तक एक प्रारूप के ही खिलाड़ी बन गये हैं तो इससे वह कहां पहुंचते हैं? इस समय सभी जवाब 'नकारात्मक' ही दिखते हैं इसलिये एक सवाल उठता है कि क्या सबसे सीनियर तेज गेंदबाज के तौर पर खिलाना युवाओं से मौका छीनने जैसा नहीं होगा। सवालों की यह तलवार अंतरिम मुख्य कोच वीवीएस और कप्तान हार्दिक पांड्या के सामने लटकी होगी। भुवनेश्वर अपनी व्यक्तिगत उपलब्धि (एक कैलेंडर वर्ष में सबसे ज्यादा 40 विकेट चटकाने से महज चार विकेट दूर) के करीब खड़े हैं और ऐसे में उन्हें नहीं खिलाना उनका मनोबल गिराने वाला फैसला होगा। पर भुवी ने जो 36 विकेट हासिल किये हैं, वो सभी गेंदबाजों के लिये मददगार परिस्थितियों में मिले हैं और वो भी कमजोर प्रतिद्वंद्वियों के खिलाफ। और थोड़ी सी सपाट पिच या फिर बेहतरीन बल्लेबाजी आक्रमण के सामने भुवनेश्वर असफल रहे हैं। लेकिन अगर उन्हें खिलाया जाता है तो टीम प्रबंधन उमरान मलिक और मोहम्मद सिराज की जोड़ी को परखने का मौका चूक जायेगा कि वे फिन एलेन, ग्लेन फिलिप्स और डेवोन कॉनवे जैसे मजबूत खिलाड़ियों के खिलाफ दबाव भरी परिस्थितियों में कैसा खेलते हैं। भारत के सबसे तेज गेंदबाज उमरान को तैयार करने की आवश्यकता है। पाकिस्तान ने हारिस रऊफ, शाहीन शाह अफरीदी और नसीम शाह के साथ दिखा दिया है कि अत्यधिक तेज गति क्या कर सकती है। जब ऋषभ पंत को टी20 अंतरराष्ट्रीय श्रृंखला के लिये टीम का उप कप्तान नियुक्त किया गया तो कहा गया था कि वह पारी का आगाज करेंगे लेकिन शुभमन गिल इस प्रारूप में अपने आत्मविश्वास से या फिर विशेषज्ञ ईशान किशन उनके साथ जोड़ी बनायेंगे, यह देखना होगा। एक अन्य विकल्प केकेआर कप्तान श्रेयस अय्यर और दीपक हुड्डा के बीच भी हो सकता है। हुड्डा और श्रेयस दोनों को शामिल करने के लिये किशन को अंतिम एकादश से बाहर करना होगा।

एटीपी फाइनल्स: रुबलेव ने सितसिपास को हराकर सेमीफाइनल में किया प्रवेश

एजेंसी

ट्यूरिन। रूसी टेनिस खिलाड़ी एंड्री रुबलेव ने शनिवार को ग्रीक के स्टेफानोस सितसिपास को हराकर एटीपी फाइनल्स के सेमीफाइनल में प्रवेश किया। रुबलेव ने सितसिपास को 3-6, 6-3, 6-2 से जीत हासिल की। यह मुकाबला 1 घंटे और 42 मिनट तक चला। यह सीजन की उनकी 51वीं टूर-स्तरीय जीत थी। छठी वरीयता प्राप्त रुबलेव का सामना सेमीफाइनल में कैस्पर रूड से होगा। मैच जीतने के बाद रूबलेव ने कहा, ''मैंने हार नहीं मानी। मैं लड़ता रहा और खेलता रहा। मैंने अपनी भावनाओं को थोड़ा खो दिया था, जब मैं पहले सेट में 40-0 से पीछे चल रहा था, लेकिन इसके बाद फिर मैं बस लड़ता रहा और खेलता रहा। मुझे लगा कि अगर मैंने अपना सर्वश्रेष्ठ दिया तो मेरे पास मौके होंगे। मैं मैच को पलटने में कामयाब रहा और मैं सेमीफाइनल में पहुंचकर खुश हूं। 25 वर्षीय रुबलेव, जो इस टूर्नामेंट के पिछले दो संस्करणों में ग्रुप स्टेज से आगे नहीं बढ़ सके था, अब अगर वह सेमीफाइनल में अच्छा प्रदर्शन करते हैं तो उसके पास ट्रॉफी जीतने का सुनहरा मौका होगा। रुबलेव ने कहा, ''मैं वास्तव में सेमीफाइनल मैच का इंतजार कर रहा हूं क्योंकि कैस्पर कोर्ट के अंदर और बाहर बहुत अच्छे इंसान हैं। वह एक महान खिलाड़ी हैं, महान फाइटर हैं। उन्होंने इस सीजन में कई अच्छी चीजें हासिल की हैं, इसलिए यह मेरे लिए वास्तव में एक अच्छी चुनौती होगी। मुझे उम्मीद है कि मैं अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करूंगा और देखूंगा कि आगे क्या होता है।

एटीपी फाइनल्स : नोवाक जोकोविच ने डेनियल मेदवेदेव को दी शिकस्त

ट्यूरिन। सर्बियाई टेनिस स्टार नोवाक जोकोविच ने एटीपी फाइनल्स में रूस के डेनियल मेदवेदेव को तीन सेट तक चले रोमांचक मैच में 6-3, 6-7 (5), 7-6 (2) से शिकस्त दी। यह मैच तीन घंटे और 11 मिनट तक चला। जोकोविच अगर यह टूर्नामेंट जीतते हैं तो वह स्विस दिग्गज रोजर फ़ेडरर के वर्ष के अंत में छह जीत के रिकॉर्ड की बराबरी कर लेंगे। उनकी आखिरी खिताबी जीत 2015 में आई थी। जोकोविच ने कहा कि आज मेरे पास सबसे महान प्रतिद्वंद्वियों में से एक के खिलाफ यह मैच बहुत महत्वपूर्ण है। मैं वास्तव में यह मैच जीतना चाहता था। डेनियल और मेरे बीच अतीत में कुछ बेहतरीन मैच हुए हैं और मैं आज का यह मैच जीतना जानता था, क्योंकि उनके खिलाफ यह सीज़न का आखिरी मैच होने वाला था और मैं यह मैच हार के साथ समाप्त नहीं करना चाहता था।

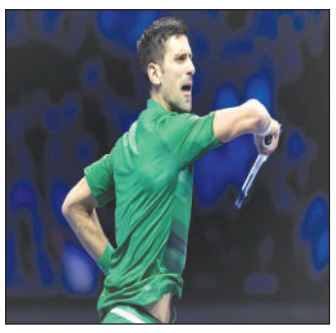

उन्होंने कहा कि मैंने टाई-ब्रेक में अच्छी शुरुआत की। मेदवेदेव के लिए पिछले तीन मैच मुश्किल मैच थे, तीनों मैचों में वह तीसरे में सेट में 7-6 से हार गए। यह आसान नहीं है, लेकिन वह एक अद्भुत खिलाड़ी हैं। मेरे मन में उनके लिए बहुत सम्मान है। सेमीफाइनल में आज जोकोविच का सामना टेलर फ्रिट्ज से होगा।

स्टीव स्मिथ ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में पूरे किये 14,000 रन

सिडनी। स्टार ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाज स्टीव स्मिथ ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में 14,000 रन का आंकड़ा पार कर लिया है। वह सबसे तेज इस आंकड़े को पार करने वाले पहले ऑस्ट्रेलियाई भी बन गए हैं। स्मिथ ने सिडनी क्रिकेट ग्राउंड (एससीजी) में इंग्लैंड के खिलाफ दूसरे एकदिवसीय मैच के दौरान यह उपलब्धि हासिल की। मैच में स्मिथ ने 114 गेंदों में 82.45 के स्ट्राइक रेट से पांच चौकों और एक छक्के की मदद से 94 रन की शानदार पारी खेली। इस मैच में ऑस्ट्रेलिया ने पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 50 ओवरों में 8 विकेट पर 280 रन बनाए हैं। स्मिथ ने अब 288 मैचों की 328 पारियों में 49.52 की औसत से 14,065 रन बनाए हैं। उन्होंने 239 के सर्वश्रेष्ठ व्यक्तिगत स्कोर के साथ 40 शतक और 69 अर्धशतक बनाए हैं। सभी प्रारूपों में उनका स्ट्राइक रेट 65.44 है। स्मिथ ने सर्वाधिक रन बनाने के मामले में डेविड बून (13,386) को पीछे छोड़ दिया है। वह

ऑस्ट्रेलिया के लिए अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले नौवें बल्लेबाज बन गए हैं। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में ऑस्ट्रेलिया के लिए शीर्ष पांच रन बनाने वाले खिलाड़ियों में रिकी पोंटिंग (27,368), स्टीव वॉ (18,496), एलन बॉर्डर (17,698), माइकल क्लार्क (17,112) और डेविड वार्नर (16,612) हैं। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में शीर्ष पांच रन बनाने वाले खिलाड़ियों में भारतीय दिग्गज सचिन तेंदुलकर (34,357), श्रीलंका के महान कुमार संगकारा (28,016), रिकी पोंटिंग (27,483), श्रीलंका के बल्लेबाज महेला जयवर्धने (25,957) और दक्षिण अफ्रीका के महान ऑलराउंडर जैक कैलिस (25,534) हैं।

एफआईएच हॉकी विश्व कप के लिए हमारी तैयारी सही रास्ते पर: सुमित

एजेंसी

भुवनेश्वर। भारतीय पुरुष हॉकी टीम के मिडफील्डर सुमित एफआईएच ओडिशा हॉकी पुरुष विश्व कप 2023 के लिए टीम में जगह बनाने के लिए कड़ी मेहनत कर रहे हैं और कहा कि वह मैदान पर अपना 100 प्रतिशत दे रहे हैं। सुमित ने कहा, ''अगर मैं अच्छा खेलता हूं, तो मुझे एफआईएच ओडिशा हॉकी पुरुष विश्व कप 2023 के लिए भारतीय पुरुष हॉकी टीम में शामिल होने से कोई नहीं रोक पाएगा। सुमित ने कहा,''मैं जब भी मैदान पर जाता हूं, हमेशा अपना 100 प्रतिशत देने के बारे में सोचता हूं। मैं हमेशा खुद से प्रतिस्पर्धा करता हूं और मानता हूं कि मुझे कल की तुलना में बेहतर होना है। मेरा कर्तव्य कड़ी मेहनत करना है और चयन पूरी तरह से कोच और चयनकर्ता पर निर्भर करता है। उन्होंने कहा, ''मेरे खेल का प्लस पॉइंट यह है कि मैं लगभग हर स्थिति में खेल सकता हूं। मैं एक मिडफील्डर के रूप में खेलता हूं, लेकिन कभी-कभी मैं एक डिफेंडर के रूप में भी खेलने के लिए डीप ड्रॉप करता हूं। मुझे टीम में किसी भी स्थिति में खेलने में कोई समस्या नहीं है। सुमित ने आगामी एफआईएच ओडिशा हॉकी पुरुष विश्व कप 2023 के लिए भारतीय पुरुष हॉकी टीम की तैयारियों का एक अच्छा लेखा-जोखा दिया। सुमित ने कहा, ''हमारा अभ्यास वास्तव में अच्छा चल रहा है और हमने एफआईएच मेन्स हॉकी प्रो लीग 2022-23 में अभी चार मैच खेले हैं। हमने सभी चार मैचों में अच्छी हॉकी खेली है, इसलिए हमारी तैयारी सही रास्ते पर है। उन्होंने कहा, ''मुझे ओडिशा पुरुष हॉकी विश्व कप भुवनेश्वर 2018 याद है जब हम क्वार्टर फाइनल में हार गए थे और हर बार जब मैं भुवनेश्वर वापस जाता हूं, तो यह मुझे उस हार की याद दिलाता है। हमारी टीम का लक्ष्य विश्व कप में पोडियम पर समाप्त करना है। हरियाणा के एक छोटे से गांव से आने वाले सुमित को बचपन में काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ा था। हालांकि, इससे उनके लचीलेपन और भारतीय पुरुष हॉकी टीम के लिए खेलने के सपने पर कोई असर नहीं पड़ा। सुमित ने कहा, ''बचपन से ही मेरा लक्ष्य भारतीय पुरुष हॉकी टीम के लिए खेलना था। हालांकि, मेरी पारिवारिक पृष्ठभूमि उतनी अच्छी नहीं थी और फिर मेरे कोच ने मेरे गांव में मेरा साथ दिया। मेरे पिता बीमार हुआ करते थे जब मैं एक बच्चा था और मेरे भाई ने परिवार का समर्थन करने के लिए काम किया। उन्होंने कहा,''ऐसे दिन थे जब मैंने अपने परिवार का समर्थन करने और हॉकी का अभ्यास करने के लिए ढाबे पर काम किया था। जब भी मुझे मैच खेलने के लिए यात्रा करना पड़ता था, मालिकों ने हमेशा आर्थिक रुप से मेरी मदद की। सुमित ने आगे कहा, ''टोक्यो ओलंपिक में पदक जीतना मेरे और घर वालों के लिए बहुत गर्व का क्षण था। जब मैं कांस्य पदक जीतकर वापस आया तो पूरा गांव मेरे पीछे था और उस समय मुझे अपनी मां की याद आ रही थी। (2020 में उनका निधन हो गया)।

विवादास्पद साक्षात्कार के बाद क्रिस्टियानो रोनाल्डो के अनुबंध को समाप्त करना चाहता है मैनचेस्टर यूनाइटेड

लंदन। मैनचेस्टर यूनाइटेड पियर्स मॉर्गन के साथ विवादास्पद साक्षात्कार के बाद स्टार स्ट्राइकर क्रिस्टियानो रोनाल्डो के अनुबंध को समाप्त करने के तरीकों की तलाश कर रहा है। साक्षात्कार में, रोनाल्डो ने क्लब की आलोचना की थी और कहा था कि वह इसके प्रबंधक टेन हाग के लिए ''कोई सम्मान नहीं'' रखते हैं। उन्होंने यह भी दावा किया कि क्लब के पदानुक्रम के सदस्य उन्हें मैनचेस्टर यूनाइटेड से बाहर करने की कोशिश कर रहे हैं और जब उन्होंने अपनी बेटी की बीमारी के कारण प्री-सीज़न में भाग लेने में असमर्थता व्यक्त की तो उस पर संदेह किया। क्लब के बारे में रोनाल्डो के बयान इंटरनेट पर वायरल होने के बाद, यूनाइटेड ने कहा कि क्लब ''पूर्ण तथ्यों के स्थापित होने के बाद'' अपनी प्रतिक्रिया पर विचार करेगा और उसके बाद उचित कदम उठाएगा। स्काई स्पोर्ट्स के अनुसार, यह स्पष्ट है कि रोनाल्डो के

फिर से क्लब की ओर से खेलने की संभावना लगभग न के बराबर है। मैनचेस्टर यूनाइटेड ने इस प्रक्रिया के लिए कोई समय सीमा निर्धारित नहीं की है, लेकिन वे चाहते हैं कि स्टार खिलाड़ी का बाहर निकलना साफ-सुथरा और एक तरह से सम्मानजनक तरीके से हो। वे रोनाल्डो को छुट्टी का भुगतान नहीं देना चाहते। रोनाल्डो और कई बार के प्रीमियर लीग चैंपियन दोनों की इच्छा को देखते हुए, उम्मीद है कि एक बीच का रास्ता निकाला जाएगा। लेकिन यह आसान नहीं होगा क्योंकि उनका अनुबंध फुटबॉल के इतिहास में सबसे बड़ा अनुबंध है।

आरसीबी की टीम में वापसी करेंगे एबी डिविलियर्स, फ्रेंचाइजी ने ट्वीट कर दी जानकारी

एजेंसी

बेंगलुरू। दक्षिण अफ्रीका के पूर्व दिग्गज बल्लेबाज एबी डिविलियर्स जल्द ही इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) फ्रेंचाइजी रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर (आरसीबी) की टीम में वापसी करेंगे। आरसीबी ने शनिवार को उक्त जानकारी दी। आरसीबी ने ट्वीट किया कि अब्राहम बेंजामिन डिविलियर्स फॉरएवर! इस दिन पिछले साल, लाखों क्रिकेट प्रशंसकों के लिए खुशी लाने वाले, हमारे पसंदीदा सुपरहीरो, डिविलियर्स ने क्रिकेट के सभी प्रारूपों से संन्यास की घोषणा की। लेकिन ... वह बेंगलुरु में जल्द ही वापस लौटेंगे। विशेष रूप से, डिविलियर्स हाल ही में बेंगलुरु में थे, जिससे आरसीबी में उनकी वापसी की अटकलें तेज हो गईं। डिविलियर्स ने 3 नवंबर को फ्रेंचाइजी द्वारा पोस्ट किए गए एक वीडियो में कहा, ''मैं यहां अगले साल के आईपीएल के लिए

आरसीबी के लोगों के साथ बातचीत करने के लिए हूं। डिविलियर्स आरसीबी हॉल ऑफ फ़ेमर भी हैं। उन्होंने 2011 से 2021 तक 157 मैचों में टीम का प्रतिनिधित्व किया। उन्होंने 41.10 की औसत से 4,522 रन बनाए। उन्होंने 158 से अधिक की स्ट्राइक रेट से टीम के लिए दो शतक और 37 अर्द्धशतक लगाए हैं। बता दें कि आरसीबी ने आगामी इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2023 के लिए अपने अधिकांश बड़े नामों को बरकरार रखा है। वेस्टइंडीज के बल्लेबाज शेरफ़ेन रदरफोर्ड एकमात्र बड़ा नाम है जिसे फ्रेंचाइजी ने रिलीज किया है।

भारत अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेला आज से आम लोगों के लिए खुला

नई दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली के प्रगति मैदान में आयोजित 41वां भारत अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेला (आईआईटीएफ-2022) शनिवार से आम जनता के लिए खुल गया। भारतीय व्यापार संवर्धन संगठन (आईटीपीओ) ने यह जानकारी दी। आईटीपीओ के बयान के मुताबिक आम जनता के लिए मेले में प्रवेश करने का समय आज सुबह 10.00 बजे से लेकर शाम 07.30 बजे तक है। अंतिम दिन 27 नवंबर को प्रवेश का समय सुबह 10.00 बजे से शाम 04.30 बजे तक रहेगा। आईटीपीओ ने हर दिन मेले में एक बार में 30 से 35 हजार दर्शकों को ही प्रवेश देने की योजना बनाई है। बयान में साफ किया गया है कि प्रगति मैदान के प्रवेश द्वार पर टिकट की बिक्री नहीं हो रही है। भारतीय व्यापार संवर्धन संगठन ने कहा है कि आम जनता को असुविधा से बचने के लिए मेट्रो स्टेशनों और आईटीपीओ की वेबसाइट पर ऑनलाइन टिकट खरीदने की सुविधा है। सुप्रीम कोर्ट मेट्रो स्टेशन को छोड़कर 67 चुनिंदा मेट्रों स्टेशनों पर इसके लिए टिकट की बिक्री की जा रही है। आजादी के 75वें वर्ष में आयोजित 41वां व्यापार मेला की शुरुआत 14 नवंबर को हुई थी। यह मेला 27 नवंबर तक चलेगा। 14 दिवसीय इस मेले में शुरुआती पांच दिन व्यापारी दर्शकों के लिए खुले थे। इसका उद्घाटन केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने 14 नवंबर को किया था। इस वर्ष के व्यापार मेले का विषय 'निवेश का अमृतकाल' है।

देश का विदेशी मुद्रा भंडार बढ़कर 544 अरब डॉलर के पार पहुंचा

पिछले हफ्ते विदेशी मुद्रा भंडार में 14.73 अरब डॉलर का इजाफा

एजेंसी

नई दिल्ली। आर्थिक मोर्चे पर सरकार के लिए अच्छी खबर है। विदेशी मुद्रा भंडार में एक साल से ज्यादा की सबसे तेज बढ़ोतरी दर्ज हुई है। देश का विदेशी मुद्रा भंडार 11 नवंबर को समाप्त हफ्ते के दौरान 14.73 अरब डॉलर बढ़कर 544.72 अरब डॉलर के पार पहुंच गया है। रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई) के जारी आंकड़ों के मुताबिक विदेशी मुद्रा भंडार 11 नवंबर को समाप्त हफ्ते के दौरान 14.73 अरब डॉलर बढ़कर 544.72 अरब डॉलर के पार पहुंच गया है। विदेशी मुद्रा भंडार में अगस्त 2021 के बाद यह सबसे ज्यादा बढ़ोतरी रही है। इससे पहले बीते 4 नवंबर को समाप्त हफ्ते में विदेशी मुद्रा भंडार घटकर 529.99 अरब डॉलर रहा था। आंकड़ों के मुताबिक इस दौरान मुद्रा भंडार का अहम घटक विदेशी मुद्रा आस्तियां (एफसीए) भी 11.8 अरब डॉलर की वृद्धि के साथ 482.53 अरब डॉलर पर पहुंच गई है। इसी तरह देश के स्वर्ण भंडार का मूल्य भी 2.64 अरब डॉलर बढ़कर 39.70 अरब डॉलर पर पहुंच गया।

उल्लेखनीय है कि इस साल की शुरूआत में अपना विदेशी मुद्रा भंडार संतोषजनक स्तर पर था, लेकिन रुपये के मूल्य में गिरावट को रोकने के लिए रिजर्व बैंक को डॉलर खुले बाजार में बेचना पड़ रहा है, जिससे विदेशी मुद्रा भंडार में गिरावट देखने को मिल रहा है। हालांकि, 2022 की शुरुआत में देश का विदेशी मुद्रा भंडार करीब 630 अरब डॉलर था। तब से रुपये में गिरावट का माहौल है।

कच्चा तेल 88 डॉलर प्रति बैरल के करीब, पेट्रोल-डीजल के दाम स्थिर

एजेंसी

नई दिल्ली। अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल के दाम में गिरावट का सिलसिला जारी है। पिछले 24 घंटे में क्रूड आयल का भाव करीब तीन फीसद लुढ़ककर 88 डॉलर प्रति बैरल के करीब आ गया। हालांकि, सार्वजनिक क्षेत्र की तेल एवं गैस विपणन कंपनियों ने घरेलू बाजार में पेट्रोल-डीजल की कीमत में कोई बदलाव नहीं किया है। इंडियन ऑयल की वेबसाइट के मुताबिक शनिवार को दिल्ली में पेट्रोल 96.72 रुपये और डीजल 89.62 रुपये प्रति लीटर पर टिका हुआ है। मुंबई में पेट्रोल का भाव 106.31 रुपये और डीजल 94.27 रुपये प्रति लीटर है। कोलकाता में पेट्रोल 106.03 रुपये और डीजल की कीमत 92.76 रुपये प्रति लीटर है। इसी तरह चेन्नई में पेट्रोल 102.63 रुपये और डीजल 94.24 रुपये प्रति लीटर बिक रहा है। हफ्ते के अंतिम दिन ब्रेंट क्रूड 2.16 डॉलर यानी 2.41 फीसदी की गिरावट के साथ 87.62 डॉलर प्रति बैरल पर ट्रेंड कर रहा है। वहीं, वेस्ट टेक्सस इंटरमीडिएट (डब्ल्यूटीआई) क्रूड 1.56 डॉलर यानी 1.91 फीसदी लुढ़ककर 80.08 डॉलर प्रति बैरल पर कारोबार कर रहा है। गौरतलब है कि देश में तेल के दाम करीब पिछले चार महीने से ज्यादा समय से स्थिर है।

आलोचकों को करारा जवाब है 'डोनी पोलो' हवाई अड्डे का उद्घाटन : मोदी

एजेसी

ईटानगर/नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पिछली कंग्रेस सरकार पर तंज कसते हुए कहा कि योजनाओं को अटकाने, लटकाने और भटकाने का युग चला गया है। हम ऐसी कार्य संस्कृति लेकर आए हैं जहां योजनाओं का शिलान्यास और उसका उद्घाटन भी हम करते हैं। उन्होंने कहा कि डोनी पोलो हवाई अड्डे का शुभारंभ उन आलोचकों को करारा जवाब है, जिन्होंने हवाई अड्डे के शिलान्यास को चुनावी हथकंडा करार देने की कोशिश की थी। प्रधानमंत्री ने शनिवार को अरुणाचल प्रदेश के ईटानगर में देश के पहले ग्रीनफील्ड डोनी पोलो हवाई अड्डे का उद्घाटन किया और 600 मेगावाट के कामेंग हाइड्रो पावर स्टेशन राष्ट्र को समर्पित किया। फरवरी 2019 में इस एयरपोर्ट का शिलान्यास स्वयं प्रधानमंत्री मोदी ने किया था। बीच में महामारी की चुनौतियों के बावजूद एयरपोर्ट का काम बहुत कम समय में पूरा किया गया है। सभा को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने राज्य के लोगों की अनुशासनप्रियता की प्रशंसा करते हुए कहा कि वे अरुणाचल से नई उमंग, ऊर्जा और नया उत्साह लेकर लौटते हैं। उन्होंने कहा कि अरुणाचल के लोगों के चेहरे पर कभी भी उदासीनता और निराशा नहीं झलकती है। प्रधानमंत्री ने विकास कार्यों को चुनाव और राजनीतिक लाभ से जोड़ने को लेकर राजनीतिक टिप्पणीकारों और विपक्ष की जमकर आलोचना की। उन्होंने कहा कि कहा कि जब उन्होंने फरवरी 2019 में 'डोनी पोलो' हवाई अड्डे का शिलान्यास किया, तब मई में चुनाव होने वाले थे। राजनीतिक टिप्पणीकारों ने शोर मचाया कि हवाई अड्डा नहीं बनने जा रहा है और मोदी मतदान के कारण पत्थर खड़ा कर रहे हैं। आज का उद्घाटन उन लोगों के मुंह पर करारा तमाचा है, जिन्होंने दावा किया था कि अरुणाचल प्रदेश में आगामी चुनावों के कारण शिलान्यास किया गया है। उन्होंने कहा, ल्लआप जानते हैं कि हम एक कार्य संस्कृति लेकर आए हैं, जिसका शिलान्यास हम करते हैं, उसका उद्घाटन भी हम करते हैं। अटकाना, लटकाना और भटकाना का युग चला गया। प्रधानमंत्री ने कहा कि आज देश में जो सरकार है, उसकी प्राथमिकता देश का विकास है, देश के लोगों का विकास है। साल में 365 दिन, चौबीसों घंटे, हम देश के विकास के लिए ही काम करते हैं। उन्होंने कहा कि हम देश के विकास के लिए काम करते हैं। मैं यहां अरुणाचल प्रदेश में हूं, जहां सूरज उगता है, और दमन में उतरूंगा, जहां सूरज डूबता है। हम चुनाव के लाभ के लिए काम नहीं करते हैं। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार सीमावर्ती क्षेत्रों में गांवों को मजबूत करने के लिए प्रतिबद्ध है। डबल इंजन सरकार अरुणाचल प्रदेश को नई ऊंचाइयों पर ले जा रही है। पूर्व की सरकारों पर पूर्वोत्तर की उपेक्षा को लेकर निशाना साधते हुए मोदी ने कहा कि आजादी के बाद पूर्वोत्तर एक अलग युग का गवाह बना। दशकों तक यह क्षेत्र पूर्व के राजनीतिक दलों की बेरुखी का शिकार रहा है। पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा पूर्वोत्तर के लिए अलग से मंत्रालय गठित करने का हवाला देते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि अटल जी ने सरकार बनाई और यह पहली सरकार थी जिसने क्षेत्र के विकास के लिए एक अलग मंत्रालय बनाया। प्रधानमंत्री ने कहा कि इसके बाद जो सरकारें आईं, उन्होंने गति को आगे नहीं बढ़ाया। परिवर्तन का एक और युग आया जब आपने मुझे अपनी सेवा करने का अवसर दिया। पहले की सरकारें सोचती थीं कि पूर्वोत्तर बहुत दूर है। सीमावर्ती क्षेत्रों के गांवों को अंतिम गांव माना जाता था, लेकिन लेकिन हमारी सरकार ने इन्हें आखिरी गांव, आखिरी छोर नहीं बल्कि देश का प्रथम गांव मानकर काम किया। अब कल्चर हो या एग्रीकल्चर, कॉमर्स हो या कनेक्टिविटी, पूर्वोत्तर को आखिरी नहीं बल्कि सर्वोच्च प्राथमिकता मिलती है।

सरकार सीमावर्ती क्षेत्रों में गांवों को मजबूत करने के लिए प्रतिबद्ध

योजनाओं को अटकाने, लटकाने और भटकाने का युग चला गया

राशिफल

मेष : आज बढ़िया दिन है जब आप सबके ध्यान को अपनी तरफ़ खींचेंगे।

वृष : आज आप अपने मनमौजी बर्ताव पर क़ाबू रखें, क्योंकि यह आपकी दोस्ती को बर्बाद कर सकता है। अपनी पेशेवर क्षमताओं को बढ़ाकर आप करिअर में नए दरवाज़े खोल सकते हैं।

मिथुन : आज सैर-सपाटे पर जाने का कार्यक्रम बन सकता है, जो आपकी ऊर्जा और उत्साह को तरोताज़ा कर देगा।

कर्क : आज अगर आप अपने आकर्षण और होशियारी का इस्तेमाल करें, तो लोगों से मनचाहा व्यवहार लाभ पा सकते हैं।

सिंह : आज व्यवसायियों के लिए अच्छा दिन है, क्योंकि उन्हें अचानक बड़ा फ़ायदा हो सकता है।

कन्या : आज प्यार का बुख़ार आपके सर पर चढ़ने के लिए तैयार है। इसका अनुभव कीजिए। आप जीतोड़ मेहनत और धीरज के बल पर अपने उद्देश्य हासिल कर सकते हैं।

तुला : आज पिता का तल्ख़ बर्ताव आपको नाराज़ कर सकता है। लेकिन हालात को नियंत्रण में रखने के लिए शांत रहें। इससे आपको ही फ़ायदा होगा।

वृश्चिक : आज आप दफ़्तर में माहौल में बेहतरी और कामकाज के स्तर में सुधार को महसूस कर सकते हैं।

धनु : आज के दिन किसी के साथ मजाक करने से बचें। रचनात्मक कामों से जुड़े लोगों के लिए बेहतरीन दिन है ।

मकर : आज आपका सामना कई नई आर्थिक योजनाओं से होगा- कोई भी फ़ैसला करने से पहले अच्छाईयों और कमियों पर सावधानी से ग़ौर फ़रमाएँ।

कुम्भ : आज आप शरारती मनोदशा में होंगे। अचानक आए ख़र्चे आर्थिक बोझ बढ़ा सकते हैं। आपके नज़दीकी लोग निजी जीवन में परेशानियाँ खड़ी कर सकते हैं।

मीन : आज बच्चों के साथ वाद-विवाद झुंझलाहट पैदा करेगा। एक प्यारी-सी मुस्कुराहट से अपने प्रेमी का दिन रोशन करें।

भारत फिर से विश्व गुरु बनने की राह पर अग्रसर : उपराष्ट्रपति

उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने शनिवार को राजस्थान में झुंझुनू जिले के खेतड़ी से विवेकानंद संदेश यात्रा को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया

एजेसी

झुंझुनू। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने शनिवार को राजस्थान में झुंझुनू जिले के खेतड़ी से विवेकानंद संदेश यात्रा को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। यह संदेश यात्रा 50 दिन में पूरे प्रदेश में भ्रमण करेगी। खेतड़ी के पोलोग्राउंड खेल मैदान में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए उपराष्ट्रपति धनखड़ ने कहा कि युवाओं को स्वामी विवेकानंद के जीवन चरित्र से प्रेरणा लेनी चाहिए। स्वामी विवेकानंद का भारत में विविध एकता का एक सपना था, जो आज साकार हो रहा है। देश के संस्कृति मंत्रालय की ओर से आजादी के अमृत महोत्सव के तहत खेतड़ी से शुरू की जा रही विवेकानंद संदेश यात्रा युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगी। उन्होंने कहा कि भारत पूरे विश्व में आज पांचवीं अर्थव्यवस्था बन चुका है तथा जल्द ही तीसरी अर्थव्यवस्था बनकर दिखाएंगे। भारत आज अपने दम पर हर क्षेत्र में नए आयाम स्थापित कर रहा है। किसी भी काम के लिए आज हमारा देश दूसरे देशों का मोहताज नहीं है। जिन लोगों ने इस देश पर राज किया, आज भारत उनको पछाड़कर बड़ी शक्ति बनने जा रहा है। भारत में लगातार हो रहे विकास की जबरदस्त यात्रा तेजी से चली जा रही है लेकिन कुछ लोग भ्रमित होकर बिना कुछ समझे अनर्गल बातें करते हैं। उन्होंने कहा कि कोरोना महामारी के दौरान कोविड वैक्सीनेशन में हमारे देश ने बहुत मेहनत कर विदेशों को वैक्सीन दी और आज दुनिया के किसी भी मापदंड में भारत पीछे नहीं रहा है। इससे पूरी दुनिया आज भारत की सराहना कर रही है। उन्होंने कहा कि भारत पूर्व समय में विश्व गुरु हुआ करता था। आज फिर से हम विश्व गुरु बनने की राह पर अग्रसर हो रहे हैं। दुनिया का आज कोई ऐसा प्रतिष्ठान नहीं है, जिसमें कोई भारतीय बड़े पद पर नहीं हो। उन्होंने कहा कि स्वामी विवेकानंद को शिकागो धर्म सम्मेलन में भेजने व विश्व में भारत की पहचान बनाने में राजा अजीत सिंह और खेतड़ी का बहुत योगदान रहा है। विवेकानंद संदेश यात्रा आमजन को नए विचारों के लिए प्रेरणा देगी। इससे पहले उपराष्ट्रपति धनखड़ भारतीय वायुसेना के विमान से खेतड़ी के नेहरू मैदान में पहुंचे। इस दौरान पुलिस के जवानों की ओर से गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया। क्षेत्रीय विधायक डॉ. जितेंद्र सिंह, पालिका चेयरमैन गीता सैनी, प्रधान मनीषा गुर्जर ने गुलदस्ता भेंट कर उनका स्वागत किया। सड़क मार्ग से उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ खेतड़ी के अजीत विवेक संग्रहालय में पहुंचे।

जहां पर उनका रामकृष्ण मिशन आश्रम के सचिव स्वामी आत्मनिष्ठानंद महाराज ने बुके भेंट कर स्वागत किया। उसके बाद उपराष्ट्रपति अपनी धर्मपत्नी के साथ अजीत विवेक म्यूजियम में बने भव्य स्वामी विवेकानंद की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित किया। इस दौरान ऊर्जा मंत्री भंवर सिंह भाटी भी मौजूद रहे। स्वामी आत्मनिष्ठानंद महाराज ने उपराष्ट्रपति को पूरे म्यूजियम का भ्रमण कराया। जहां पर मैना बाई, स्वामी विवेकानंद को अपने भजन प्रभु जी मेरे अवगुण चित ना धरो के माध्यम से ज्ञान दिया, वह स्थल भी उपराष्ट्रपति ने देखा। खेतड़ी में होने वाले संदेश यात्रा के उद्घाटन समारोह में उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ के साथ उनकी धर्मपत्नी सुदेश धनखड़, ऊर्जा मंत्री भंवर सिंह भाटी, विवेकानंद केन्द्र कन्याकुमारी प्रमुख ए बालकृष्ण, रामकृष्ण मिशन सचिव आत्मनिष्ठानंद महाराज मंच पर उपस्थित रहे। यात्रा के संयोजक डॉ. स्वतंत्र शर्मा व अशोक सिंह शेखावत ने बताया कि खेतड़ी से शुरू होने वाली विवेकानंद संदेश यात्रा पूरे राजस्थान प्रदेश में भ्रमण करेगी। संदेश यात्रा 50 दिन में प्रदेश के 7 संभागों के 33 जिलों में 75 स्थानों पर भ्रमण करते हुए 7 जनवरी को जोधपुर पहुंचेगी। जहां भव्य यात्रा के समापन समारोह का आयोजन किया जाएगा।

सीबीआई ने बैंक धोखाधड़ी मामले में एबीजी शिपयार्ड के विरुद्ध कोर्ट में चार्जशीट पेश की

मुंबई। सेंट्रल इंवेस्टिगेशन ब्यूरो(सीबीआई) ने शनिवार को मुंबई के विशेष कोर्ट में 22,842 करोड़ रुपये की बैंक धोखाधड़ी मामले में निजी कंपनी एबीजी शिपयार्ड लिमिटेड और उसके अध्यक्ष और प्रमोटर 18 अन्य संस्थाओं (भारत-आधारित फर्मों और अपतटीय संस्थाओं) सहित 25 आरोपितों के खिलाफ चार्जशीट दायर की है। इस चार्जशीट में एबीजी शिपयार्ड के पूर्व अध्यक्ष ऋषि अग्रवाल का नाम भी शामिल है। सूत्रों के अनुसार बैंक धोखाधड़ी मामले में 21 सितंबर को सीबीआई ने एबीजी शिपयार्ड लिमिटेड के पूर्व प्रमोटर ऋषि अग्रवाल को 22,000 करोड़ रुपये के देश के सबसे बड़े बैंक ऋण घोटाले में गिरफ्तार किया था। जांच के अनुसार एबीजी शिपयार्ड ने 2012 और 2017 के बीच 28 बैंकों के एक संघ को 22,842 करोड़ की धोखाधड़ी करने के लिए लेनदेन की साजिश की थी, जिसका पता कुछ महीने बाद चल सका था। इन बैंकों में भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई), आईडीबीआई और आईसीआईसीआई शामिल हैं। इसके बाद इस मामले की गहन छानबीन की जा रही है।

धमकी भरा पत्र मिलने के बाद इंदौर में राहुल गांधी का कार्यक्रम स्थल बदला

एजेसी

इंदौर। कंग्रेस नेता राहुल गांधी को पत्र के माध्यम से बम से उड़ाने की धमकी मिलने के बाद उनकी भारत जोड़ो यात्रा के इंदौर में होने वाले कार्यक्रम में बदलाव किया गया है। अब यात्रा के दौरान राहुल गांधी वैष्णव कॉलेज परिसर में रात्रि विश्राम करेंगे। पहले रात्रि विश्राम खालसा कॉलेज परिसर में करने वाले थे। वहीं, प्रदेश के गृह मंत्री डॉ. नरोत्तम मिश्रा ने कहा कि प्रदेश में भारत जोड़ो यात्रा में राहुल गांधी की सुरक्षा की जिम्मेदारी सरकार की है और सरकार इसको लेकर प्रतिबद्ध है। कोई परिंदा भी पर नहीं मार सकता है। उनकी सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए गए हैं। राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा 23 नवंबर से महाराष्ट्र से मध्य प्रदेश के बुरहानपुर जिले में प्रवेश करेगी और अगले दिन 24 नवंबर को यह यात्रा इंदौर पहुंचेगी। इसके बाद इंदौर से होते हुए यात्रा उज्जैन जाएगी। पूर्व प्रस्तावित कार्यक्रम के अनुसार, राहुल गांधी रात्रि विश्राम खालसा कॉलेज में करने वाले थे। कॉलेज के बड़े मैदान में ठहरने की तैयारियां भी प्रारंभ हो गई थीं। मगर अब यात्रा के कार्यक्रम में बदलाव करते हुए रात्रि विश्राम खालसा कॉलेज के सामने स्थित वैष्णव कॉलेज परिसर में होगा। कंग्रेस के प्रदेश सचिव राजेश चौकसे ने शनिवार को इसकी जानकारी दी। उन्होंने बताया कि खालसा कॉलेज परिसर में अब सांस्कृतिक गतिविधियां और अन्य कार्यक्रम होंगे। खालसा कॉलेज में रात्रि विश्राम की तैयारियां और अन्य कार्यक्रम एक साथ करने में स्थान की समस्या सामने आ रही थी, इसलिए जगह बदली गई है। वहीं, राहुल गांधी को बम से उड़ाने की धमकी मिलने के बाद प्रदेश के गृह मंत्री डॉ. नरोत्तम मिश्रा की प्रतिक्रिया सामने आई है। उन्होंने शनिवार को मीडिया से बातचीत करते हुए कहा कि सुरक्षा चूक जैसी बात आ कहां से रही है। इंदौर के जिस खालसा कॉलेज में राहुल गांधी का कार्यक्रम तय किया गया। दस दिन पहले स्थिति बिगाड़ने के लिए वहां कौन गया था। क्यों उनके जख्मों को हरा किया गया। सिख संगत में जाकर इस तरह के वातावरण का निर्माण क्यों किया।

पेज एक का शेष

हमें...

अलग-अलग रूपों में प्रकट होती है। काशी और तमिलनाडु की फिलॉसफी को हम इसी रूप में देख सकते हैं। काशी और तमिलनाडु दोनों ही संस्कृति और सभ्यता के टाइमलेस सेंटर हैं। दोनों क्षेत्र संस्कृत और तमिल जैसी विश्व की सबसे प्राचीन भाषाओं के केंद्र हैं। काशी में बाबा विश्वनाथ हैं तो तमिलनाडु में रामेश्वर का आशीर्वाद है। काशी और तमिलनाडु दोनों शिवमय और शक्तिमय हैं। एक स्वयं में काशी है तो तमिलनाडु में दक्षिण काशी है। काशी और कांची दोनों का सप्तपुरियों में महत्वपूर्ण स्थान है। दोनों संगीत, साहित्य और कला का अद्भुत स्रोत हैं। काशी का तबला है और तमिलनाडु का तन्नुमाई। काशी में बनारसी साड़ी है तो तमिलनाडु का कांजीवरम सिल्क पूरी दुनिया में फ़ेमस है। दोनों भारतीय अध्यात्म के सबसे महान आचार्यों की जन्मभूमि और कर्मभूमि है। काशी भक्त तुलसी की धरती है तो तमिलनाडु संत तिरुवल्लुवर की भक्तिभूमि है। जीवन के हर क्षेत्र में काशी और तमिलनाडु की एक ऊर्जा के दर्शन होते हैं। आज भी तमिल विवाह परंपरा में काशी यात्रा का जिक्र होता है। तमिल युवाओं की नई यात्रा से काशी यात्रा को जोड़ा जाता है। ये तमिल दिलों में काशी के लिए अविनाशी प्रेम ना अतीत में कभी मिटा ना भविष्य में कभी मिटेगा। यही एक भारत श्रेष्ठ भारत की परंपरा है, जिसे हमारे पूर्वजों ने जिया था। आज ये काशी तमिल संगमम फिर से उस गौरव को आगे बढ़ा रहा है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि काशी के निर्माण और विकास में तमिलनाडु ने अभूतपूर्व विकास दिया। तमिलनाडु के डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन को आज भी काशी याद करती है। ये बीएचयू के पूर्व कुलपति रहे हैं। महान वैदिक विद्वान राजेश्वर शास्त्री जी ने यहां रामघाट पर सांगवेद विद्यालय की स्थापना की। पट्टाभिराम शास्त्री जी हनुमान घाट पर रहे। उन्हें भी काशी में हमेशा याद किया जाता है। आप काशी भ्रमण करेंगे तो देखेंगे कि हरिश्चंद्र घाट पर तमिल शैली का काशी कामकोटी पंचायतन मंदिर बना है। केदारघाट पर 200 साल पुराना कुमारस्वामी मठ और मार्कण्डेय आश्रम है। हनुमानघाट और केदारघाट में बड़ी संख्या में तमिलनाडु के लोग रहते हैं, जिन्होंने पीढ़ियों से काशी में अपना योगदान दिया है।

उन्होंने कहा कि तमिलनाडु की एक और महान विभूति महान कवि सुब्रमण्यम भारती लंबे समय तक काशी में रहे। यहीं मिशन कॉलेज और जयनारायण कॉलेज में उन्होंने पढ़ाई की। अपनी पॉपुलर मूछें भी उन्होंने यहीं रखी थीं। महापुरुषों ने काशी और तमिलनाडु को एक सूत्र में बांधकर रखा है। काशी तमिल संगमम का ये आयोजन तब हो रहा है जब भारत ने अपनी आजादी के अमृत काल में प्रवेश किया है। भारत वो राष्ट्र है जिसने हजारों वर्ष से एक दूसरे के मनोभाव को जानकर, सम्मान करते हुए स्वाभाविक सांस्कृतिक एकता को जिया है। हमारे देश में सुबह उठकर 12 ज्योर्तिलिंगों को याद करने की परंपरा है। हम स्नान करते समय भी गंगा यमुना से लेकर गोदावरी और कावेरी तक की नदियों में स्नान करने की भावना प्रकट करते हैं। प्रधानमंत्री ने कहा कि हमें आजादी के बाद हजारों वर्षों की परंपरा और विरासत को मजबूत करना चाहिए था, लेकिन दुर्भाग्य से इसके लिए बहुत प्रयास नहीं किये गये। काशी तमिल संगमम आज इस संकल्प के लिए एक प्लेटफार्म बनेगा। हमें राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने के लिए ऊर्जा देगा। विष्णुपुराण का एक श्लोक हमें बताता है कि भारत का स्वरूप क्या है। भारत वो है जो हिमलाय से लेकर हिन्द महासागर तक सभी विविधताओं को समेटे हुए है और उसकी हर संतान भारतीय है। तमिल संगम साहित्य में गंगा का बखान किया गया है। तिरुक्कुरल में काशी की महिमा गाई गयी है। ये भौतिक दूरियां और ये भाषा भेद को तोड़ने वाला अपनत्व ही था जो स्वामी कुमरगुरुपर तमिलनाडु से काशी आए और इसे अपनी कर्मभूमि बनाया। स्वामी कुमरगुरुपर ने यहां केदारघाट पर केदारेश्वर मंदिर का निर्माण कराया। बाद में उनके शिष्यों ने तंजावुर जिले में काशी विश्वनाथ मंदिर का निर्माण कराया। उन्होंने कहा कि तमिलनाडु में जन्मे रामानुजाचार्य ने काशी से कश्मीर तक की यात्रा की थी। आज भी उनके ज्ञान को आधार माना जाता है। मेरे शिक्षक ने मुझसे कहा था कि तुमने रामायण महाभारत पढ़ी होगी, लेकिन अगर इसे गहराई से समझना है तो राजाजी ने जो महाभारत लिखी है उसे जरूर पढ़ना। रामानुजाचार्या, शंकराचार्य, राजाजी और सर्वपल्ली राधाकृष्णन तक दक्षिण के विद्वानों के भारतीय दर्शन को समझे बिना हम भारत को नहीं जान सकते।

प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत ने अपनी विरासत पर गर्व का पंच प्राण सामने रखा है। दुनिया में किसी भी देश के पास कोई प्राचीन विरासत होती है तो वो उसपर गर्व करता है। उसे गर्व से दुनिया के सामने प्रस्तुत करता है। मिस्र के पिरामिड से लेकर इटली के कॉलेजियम जैसे कितने ही उदाहरण हमारे सामने हैं। हमारे पास भी दुनिया की सबसे प्राचीन भाषा तमिल है। आज तक ये भाषा उतनी ही पॉपुलर और लाइव है। दुनिया की सबसे प्राचीन भाषा भारत में है ये बात जब दुनियावालों को पता चलती है तो उन्हें आश्चर्य होता है, मगर हम उसके गौरवगान में पीछे रहते हैं। ये हम 130 करोड़ देशवासियों की जिम्मेदारी है कि हमें तमिल की इस विरासत को बचाना है। उसे समृद्ध करना है। तमिल को भुलाएंगे तो देश का नुकसान होगा। तमिल को बंधनों में बांध कर रखेंगे तो भी देश का नुकसान होगा। हमें भाषा भेद को दूर करें भावनात्मक एकता कायम करना है। प्रधानमंत्री ने कहा कि काशी तमिल संगमम शब्दों से ज्यादा अनुभव का विषय है। तमिलनाडु से आये हुए सभी अतिथियों की काशी यात्रा उनकी मेमोरी से जुड़ने वाली है। ये आपके जीवन की पूंजी बन जाएगी। मेरी काशी आपके सत्कार में कोई कमी नहीं छोड़ेगी। मैं चाहता हूं कि तमिलनाडु और दक्षिण के दूसरे राज्यों में भी ऐसे आयोजन हों और देश के दूसरे राज्य के लोग वहां जाएं। ये बीज राष्ट्रीय एकता का वटवृक्ष बने। राष्ट्रहित ही हमारा हित है।

एक भारत...

ज्योतिर्लिंग और काशी में विराजमान भगवान आदि विश्वेश्वर पवित्र ज्योतिर्लिंग के रूप में पूजित हैं। यह दोनों ज्योतिर्लिंग काशी और तमिलनाडु के संबंधों के केंद्र बिंदु हैं। भगवान श्रीराम और भगवान शिव के माध्यम से निर्मित इस संबंध सेतु को आदि शंकराचार्य ने भारत के चारों कोनों में पवित्रपीठ की स्थापना कर आगे बढायाए आज प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी इस महायज्ञ को गति दे रहे हैं। उन्होंने कहा कि तमिलनाडु की तेनकाशी में भगवान विश्वनाथ का एक प्रचीन मंदिर है। तेनकाशी का अर्थ है दक्षिण की काशी। पांड्य वंश के सम्राट ने काशी से शिवलिंग लाकर तेनकाशी में स्थापित किया था। तमिलनाडु में शिवकाशी भी है। काशी के धार्मिक महत्व के कारण देश के सभी भागों के लोग सदियों से यहां आते रहे हैं। गंगा जी के तट पर बसी ये पवित्र नगरी भारत की धर्मए संस्कृति और आध्यात्मिक चेतना का केंद्र बनी हुई है। इसी प्रकार तमिलनाडु प्राचीन काल से ही ज्ञानए कला और संस्कृति का केंद्र रहा हैए जिसे पांड्यए चोलए पल्लव आदि राजाओं ने विस्तार दिया। काशी और तमिलनाडु में भारतीय संस्कृति के सभी तत्व समान रूप से संरक्षित हैं। तमिल भाषा का साहित्य अत्यंत प्राचीन और समृद्ध है। ये मान्यता है कि भगवान शिव के मुंह से जो दो भाषाएं निकलीं उनमें तमिल और संस्कृत समान रूप से निकलकर अपने समृद्ध साहित्य के रूप में जानी जाती हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि समस्त भारतीय भाषाएं सभी को अपने में समाहित करती हैं। ये समावेश सांस्कृतिक प्रेरणा का स्रोत रहा हैए जो समाज में सद्भाव और समरसता बनाये हुए है। काशी तमिल संगमम के आयोजन से तमिलनाडु के हमारे अतिथिग ना केवल काशी सहित उत्तर प्रदेश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत से परिचित होंगे बल्कि उत्तर और दक्षिण के संगम से हमारे सांस्कृतिक एकता को भी सुदृढ़ बनाने में अपना योगदान देंगे।

इस मौके पर केंद्रीय शिक्षामंत्री धर्मेन्द्र प्रधानए केंद्रीय शिक्षा राज्यमंत्री एल मुरुगन सांसद इलियाराजा पूर्व केंद्रीय मंत्री पी राधाकृष्णन तमिलनाडु बीजेपी के अध्यक्ष के अन्नामलाई आईआईटी चेन्नई के निदेशक प्रो बी कामाकोली बीएचयू के कुलपति सुधीर जैन तथा तमिलनाडु से पधारे पूज्य आधिनम मौजूद रहे।

बैग...

कबूली। साथ ही बताया कि उसने शव के टुकड़े महरौली के जंगल में अलग जगह और अलग-अलग दिन फेंके।

श्रद्धा की हत्या मामले में जांच के लिए दिल्ली पुलिस की तीन सदस्यीय टीम हिमाचल के कुल्लू पहुंच गई। जहां पुलिस ने होटल मालिक से पूछताछ की। पुलिस यहां आरोपित आफताब के बिना पहुंची है। आफताब और श्रद्धा मणिकर्ण के तोष में एक निजी होटल में ठहरे थे।

भारत...

कंग्रेस पार्टी संकट के दौर से गुजर रही है इसलिए पार्टी को एकजुट करने की नितांत आवश्यकता है। राहुल गांधी को कंग्रेस को मजबूत करने का प्रयास करना चाहिए। साथ ही इस यात्रा के दौरान राहुल गांधी गैरजरूरी बयान दे रहे हैं, इससे कंग्रेस पार्टी का नुकसान ही हो रहा है। भारत जोड़ो यात्रा राहुल गांधी की ऊलजलूल बयानबाजी से भारत तोड़ो यात्रा बनती जा रही है। यह यात्रा समाज में दरार पैदा कर रही है।

जम्मू-कश्मीर...

पर देशद्रोही कृत्य और भारत सरकार से सांठगांठ का आरोप लगाते हुए ऑनलाइन धमकी जारी भी की थी। इससे भयभीत होकर कई पत्रकार इस्तीफा दे चुके हैं। खुफिया रिपोर्ट में इस मामले में तुर्की स्थित आतंकी ऑपरेटिव मुख्तार बाबा और उसके जम्मू-कश्मीर के छह संपर्कों का हाथ होने का संदेह है। खुफिया रिपोर्ट के मुताबिक मुख्तार बाबा की उम्र 55 साल है। वह कश्मीर के विभिन्न अखबारों में काम कर चुका है। वह 1990 के दशक में श्रीनगर में रहता था। इसके बाद वह तुर्की भाग गया। बाबा अक्सर पाकिस्तान जाता है। वह कश्मीर घाटी के युवाओं को टीआरएफ में शामिल करने के लिए प्रेरित करता है। घाटी में मौजूद उसके छह सहयोगियों में से दो की पहचान कर ली गई है। बाबा ने पत्रकार समुदाय में मुखबिरों का नेटवर्क तैयार किया है। इनकी सूचनाओं पर ही धमकाने के लिए पत्रकारों की सूची तैयार की।

सावरकर...

नौकर अथवा कर्मचारी नहीं थे कि उन्हें अंग्रेज पेंशन देते। पेंशन आम तौर पर नौकर अथवा कर्मचारी को दी जाती है। राहुल गांछी को पेंशन और निर्वाह भत्ते के बीच का अंतर नहीं पता। पेंशन का मतलब सेवानिवृत्ति के बाद मिलने वाला वेतन है। सावरकर को भरण-पोषण भत्ता मिल रहा था। इसका मतलब निर्वाह भत्ता है। उन्होंने कहा कि वीर सावरकर के पास बैरिस्टर की डिग्री नहीं थी। उन्हें रत्नागिरी छोड़ने की अनुमति नहीं थी। ऐसी स्थिति में जीवित रहने के लिए व्यक्ति को क्या करना चाहिए? ऐसे कैदी की जिम्मेदारी सरकार की होती है। ब्रिटिश सरकार ने वर्ष 1928 में पारित अधिनियम के तहत 1929 में सावरकर के लिए 60 रुपये प्रति माह निर्वाह भत्ता शुरू किया था। इसे पेंशन नहीं कहा जा सकता। सात्यकी सावरकर ने कहा कि राहुल गांधी के बयान सिर्फ राजनीति से प्रेरित हैं। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी के इस तरह के बयान से दुख तो है लेकिन दूसरी तरफ उन्हें इस बात की खुशी है कि इससे बहुत से लोगों को वीर सावरकर के बारे में जानने की उत्कंठा जगेगी और वे सभी वीर सावरकर के विचारों को और आगे ले जाने का प्रयास करेंगे।

जम्मू-कश्मीर...

दिया है। सेना ने मारे गए आतंकी के शव को बरामद कर लिया है। उसके शव के साथ हथियार और गोला-बारूद भी बरामद किया गया है। माना जा रहा है कि आतंकी की मौत नियंत्रण रेखा पर बिछाई गई बारूदी सुरंग के फटने से हुई है। इस दौरान रक्षा प्रवक्ता जम्मू ने भी नौशहरा की नियंत्रण रेखा पर एक घुसपैठिए के मारे जाने की पुष्टि की है। उन्होंने कहा कि क्षेत्र में अभियान अभी जारी है। विस्तृत जानकारी को अभियान समाप्त होने के बाद साझा किया जाएगा।

आतंकवाद ...

सकते हैं। हमारे राष्ट्रों के नागरिकों ने नेतृत्व के ऊपर सबसे बड़ी जिम्मेदारी सौंपी है। उनकी सुरक्षा की और यह हमारा कर्तव्य है कि इस जिम्मेदारी की कसौटी पर हम खरे उतरें। शाह ने कहा कि पिछले दो दशकों में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने इस खतरे से निपटने के लिए एक ढाँचा विकसित किया है जिसका मुख्य उद्देश्य काउंटर-टेररिज्म सैंक्शन व्यवस्था खड़ी करना है। टेररिज्म को स्टेट-फंडेड इंटरप्राइज बनाने वाले देशों की कार्रवाईयों पर कुछ हद तक अंकुश लगाने का काम यूनाइटेड नेशन्स द्वारा स्थापित इस व्यवस्था ने सफलता से किया है, लेकिन इसे और कठोर, पारदर्शी व सटीक बनाना है। उन्होंने सम्मेलन में भाग ले रहे देशों के प्रतिनिधियों से अपील करते हुए कहा कि हमारी सबसे पहली प्रतिबद्धता होनी चाहिए पारदर्शिता और सहयोग की। सभी देशों और संगठनों को बेहतर और प्रभावी तरीके से इंटेलिजेंस साझा करने में पूरी तरह से पारदर्शिता का संकल्प लेना होगा। हमें टेररिज्म और टेररिस्ट गुटों के खिलाफ इस लड़ाई को प्रत्येक भौगोलिक और वर्चुअल क्षेत्र में लड़ना होगा। शाह ने आगे कहा कि ऐसे कई मामले सामने हैं, जहां अन्य मकसदों की आड़ में कुछ संगठन, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आतंकवाद और रेडिकलाइजेशन को बढ़ावा दे रहे हैं। यह भी देखा गया है कि यह संगठन, आतंकवाद को फाइनेंस करने के चैनल भी बनते हैं। अभी हाल ही में भारत सरकार ने सामाजिक गतिविधियों की आड़ में युवाओं को रेडिकलाइज करके उन्हें आतंक की ओर धकेलने की साजिश करने वाली एक संस्था को बैन करने का काम किया है। उनका इशारा पापुलर फ्रंट ऑफ इंडिया (पीएफआई) की ओर था। उन्होंने कहा कि प्रत्येक देश को ऐसी संस्थाओं को चिन्हित करके उनके विरुद्ध कार्रवाई करनी चाहिए। शाह ने कहा कि कुछ देशों, उनकी सरकारों और एजेंसियों ने 'टेररिज्म' को स्टेट पालिसी बनाया है। टेरर हेवन्स पर आर्थिक प्रतिबंध के साथ-साथ सभी प्रकार की नकेल कसना आवश्यक है। इस पर दुनिया के सभी देशों को अपने जियो-पोलिटिकल इंटरेस्ट से ऊपर उठकर एक मन बनाना होगा । उन्होंने कहा कि कुछ देश राजनीति के लिए आतंकवादियों और आतंकवाद को पनाह देने वालों का बार बार समर्थन करते हैं। मेरा मानना है कि आतंकवाद की कोई अंतरराष्ट्रीय सीमा नहीं होती इसलिए सभी देशों को राजनीति को भुलाकर एक दूसरे का सहयोग करना चाहिए। साथ ही, सभी देशों को 'टेररिज्म' और 'टेरर फाइनेंसिंग' की व्याख्या पर सहमति बनानी होगी। यह हमारे नागरिकों की सुरक्षा तथा मानवाधिकार और लोकतांत्रिक अधिकारों के रक्षा का मुद्दा है, न कि एक राजनैतिक मुद्दा !

केंद्रीय गृह मंत्री ने कहा कि इस सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य यही है कि टेररिज्म और टेरर फाइनेंसिंग के सभी चैनलों की पहचान कर, टेरर फाइनेंसिंग के खिलाफ एक प्रैक्टिकल तथा वर्केबल रोडमैप बनाया जाये। उन्होंने कहा कि अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) और वर्ल्ड बैंक के एक अनुमान के अनुसार दुनियाभर के अपराधई हर वर्ष लगभग 2 से 4 ट्रिलियन डॉलर की लॉन्ड्रिंग करते हैं और इसमें से एक बड़ा हिस्सा टेररिज्म बढ़ाने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। इन चुनौतियों को देखते हुए सभी देशों के काउंटर-टेरर और टेरर फाइनेंसिंग के क्षेत्रों में काम करने वाली एजेंसियों एवं उनके अधिकारियों को एक दीर्घकालिक रणनीति अपनानी होगी।

सत्येंद्र जैन...

बीमार आदमी को जरूरत पड़ सकती है। कानून में जेल में बंद आदमी को इलाज दिए जाने का प्रावधान है। किसी भी जेल का सीसीटीवी फुटेज निकलवा लीजिए, वहां भी मरीज को इसी तरह की थैरेपी दी जा रही होगी। कोर्ट ने ईडी को निर्देश दिया था कि ये वीडियो रिलीज नहीं किया जाए। फिर भी कोर्ट के आदेश का उल्लंघन किया गया. इस पर अलग से कार्रवाई करेंगे।

पूरे विश्व में भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ियों का परचम लहरा रहा : ब्रजेश पाठक

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। योनेक्स सनराईज 34वीं सब जूनियर अंडर-13 नेशनल बैडमिंटन चैम्पियनशिप-2022 का उद्घाटन गोमती नगर स्थित बीबीडी यूपी बैडमिंटन अकादमी में हुआ। चैम्पियनशिप के उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि उपमुख्यमंत्री बृजेश पाठक, विराज सागर दास अध्यक्ष बैडमिंटन एसोसिएशन ऑफ इंडिया चेयरमैन, उत्तर प्रदेश बैडमिंटन संघ व डॉक्टर नवनीत सहगल अध्यक्ष उत्तर प्रदेश बैडमिंटन संघ ने चैंपियनशिप का शुभारंभ किया। इस मौके पर मुख्य अतिथि बृजेश पाठक अपने सम्बोधन में पूर्व केंद्रीय मंत्री और बैडमिंटन एसोसिएशन ऑफ इंडिया के पूर्व अध्यक्ष डा अखिलेश दास गुप्ता को याद कर भाव विभोर हो गए। उन्होंने डा अखिलेश दास गुप्ता को याद करते हुए कहा कि खेलों को लेकर डा साहब ने जो सपना देखा था वो आज पूरे विश्व व पूरे देश में भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ियों का परचम लहरा रहा है। उन्होंने खेलों को लेकर कहा कि केंद्र में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व यूपी में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में खेल नये आयाम छू रहा है और खेलों व खिलाड़ियों को मिल रही सुविधाओं में बढ़ोत्तरी हो रही है। उन्होंने बैडमिंटन खेल के प्रतिभावान खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन करते हुए उन्हें उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दीं। वहीं इस मौके पर विराज सागर दास ने अपने संबोधन में कहा कि खेलो को लेकर मेरे पिता ने जो सपना देखा था वो आज साकार हुआ और पूरे देश में हीं नहीं पूरे विश्व में उत्तर प्रदेश के खिलाड़ी अपना परचम लहरा रहे है। आज प्रतिभाओं की हमारे पास कमी नहीं हैं। विगत दिनों नोएडा में पहली बार सम्पन्न हुए योनेक्स सनराईज मिनी नेशनल अण्डर-11 नेशनल बैडमिंटन चैम्पियनशिप 2022 में दिव्यांश सिंह ने बालक एकल में राष्ट्रीय बैडमिंटन प्रतियोगिता जीतकर उप्र का नाम बैडमिंटन इतिहास में दर्ज करा दिया है। 34वीं सब जूनियर अंडर -13 नेशनल बैडमिंटन चौंपियनशिप-2022 केसआयोजन में हिमंता बिस्वा सरमा, अध्यक्ष भारतीय बैडमिंटन संघ व संजय मिश्रा, महासचिव भारतीय बैडमिंटन संघ के इस आयोजन को सफल बनाने में पूर्ण रूप से सहयोग रहा है। डा नवनीत सहगल ने अपने उद्बोधन में कहा कि प्रदेश सरकार जल्द ही खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करने के लिए नयी खेल नीति लाने जा रही है। जिसमें खेल से जुड़े हुए हर पहलू को सम्मिलित किया गया है। इस अवसर पर बैडमिंटन एसोसिएशन ऑफ इंडिया के संयुक्त सचिव उमर राशिद, आब्जर्वर बलबीर सिंह जामवाल, डा सुधर्मा सिंह, सचिव उप्र बैडमिंटन संघ, आनन्द खरे, कोषाध्यक्ष उप्र बैडमिंटन संघ, अरूण कुमार कक्कड़, उपाध्यक्ष यूपी बैडमिंटन संघ तथा संजय गुप्ता, जोनल मैनेजर पंजाब नेशनल बैक लखनऊ भी मौजूद रहे।

आईसीएआई लखनऊ चैप्टर के क्रिकेट टूर्नामेंट का आयोजन

लखनऊ। आईसीएआई लखनऊ चैप्टर के क्रिकेट टूर्नामेंट सीएमए क्रिकेट लीग का आयोजन किया गया। यह पहला डे एंड नाइट सीएमए क्रिकेट टूर्नामेंट था। इस टूर्नामेंट के मुख्य अतिथि विधायक डॉ राजेश्वर सिंह रहे। जिन्होने क्रिकेट टूर्नामेंट का शुभारम्भ टॉस करके किया। इस टूर्नामेंट में चार टीमों नाईट राइडर्स, टाइटंस, सुपर किंग्स व रॉयल्स ने प्रतिभाग किया।

बीकेटी में मनाया गया विश्व शौचालय दिवस

लखनऊ। बेसिक विद्यालय सरैयां विकास खंड बख्शी का तालाब लखनऊ में विश्व शौचालय दिवस मनाया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि तहसीलदार बख्शी का तालाब रहे। विशेष अतिथि खंड शिक्षा अधिकारी प्रीती शुक्ला एवं खंड विकास अधिकारी संजय गुप्ता रहे। डिटॉल इंडिया के परियोजना समन्वयक दिलीप सिंह ने बच्चों को विश्व शौचालय दिवस के महत्व के बारे में बताया और उनको शौचालय को स्वच्छता से प्रयोग करना बताया। इसके उपरांत बच्चों ने शौचालय की आवश्यकता पर नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किया। बच्चों ने चित्रकला प्रतियोगिता एवं स्वच्छता प्रश्नोत्तरी में प्रतिभाग किया। विजेताओं का चयन डिटॉल इंडिया के प्रतिनिधि, विद्यालय के शिक्षकों एवं एआरपी अनुराग सिंह राठौर द्वारा सामूहिक निर्णय से किया गया। विजेता बच्चों को मुख्य अतिथि एवं विशिष्ठ अतिथियों द्वारा पुरस्कार प्रदान किया गया।

नवयुग कन्या महाविद्यालय में अंतर महाविद्यालयी कबड्डी प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। नवयुग कन्या महाविद्यालय एवं अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद लखनऊ पश्चिम के तत्वाधान में शनिवार को नारी शक्ति दिवस के अवसर पर अंतर महाविद्यालयी कबड्डी प्रतियोगिता का आयोजन नवयुग कन्या महाविद्यालय में किया गया। जिसमें लखनऊ के विभिन्न कॉलेज व क्लब की टीमों ने प्रतिभाग किया। जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में प्रोफ़ेसर राजेश कुमार चतुर्वेदी एडिशनल सेक्रेटरी यूपी स्टेट हायर एजुकेशन काउंसिल एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में अभाविप के प्रांत संगठन मंत्री अंशुल श्रीवास्तव, नवयुग प्राचार्या प्रोफ़ेसर मंजुला उपाध्याय व नवयुग शारीरिक शिक्षा विभागाध्यक्ष डॉ सीमा पांडेय ने दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम की शुरुआत किया। कार्यक्रम में पाँच टीमों ने प्रतिभाग किया। जिसमें फाइनल मैच साईं स्टेडियम सेंट्र व दयानंद क्लब के बीच हुआ। जिसमें साईं स्टेडियम 17-7 अंकों से विजय हुआ। वही मार्शल आर्ट में जीत कुनो डी एसोसिएशन में निपुण छात्राओं द्वारा शक्ति प्रदर्शन व कोटा शारीरिक शिक्षा विभाग की छात्राओं द्वारा पिरामिड बनाकर प्रदर्शन किया गया। मैच में प्रतिभाग करने वाले बच्चों को मेडल पहनाकर व सर्टिफिकेट देकर मुख्य अतिथि द्वारा सम्मानित किया गया। इस मौके पर नवयुग प्रवक्ता डॉ अमिता सिंह, आयशा वहीद, डॉ प्रतिमा घोष, ऐश्वर्या सिंह, प्रो सुषमा त्रिवेदी, डॉ वंदना द्विवेदी, मार्शल आर्ट प्रशिक्षक सुधीर कुमार शर्मा, कबड्डी कोच शराफत अली, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के ऋषभ कात्यान मिश्रा, लखनऊ पश्चिम संगठन मंत्री, जिला संयोजक तुषार, जिला सहसंयोजक निखिल व प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य वासु सैनी, कार्यकर्ता महिमा चौधरी व मोहिनी मौजूद रही।

वार्षिकोत्सव में नन्हे बच्चों की प्रतिभा का लहराया परचम

लखनऊ। स्टडी हॉल गोमती नगर, स्टडी हॉल कानपुर रोड ब्रांच और दोस्ती स्कूल के द्वारा दो दिवसीय वार्षिक कार्यक्रम गोमती नगर स्थित संत गाडके ऑडिटोरियम में किया गया। जिसका शुभारम्भ शुक्रवार को विधिवत शुभारम्भ किया गया। वार्षिकोत्सव के दूसरे दिन शनिवार को वार्षिकोत्सव का धूमधाम से समापन किया गया। वार्षिकोत्सव के दूसरे दिन कक्षा 01 से 05 तक के बच्चों ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम की शुरुआत विद्यालय की हेडमिस्ट्रेस बानी मल्होत्रा के सम्बोधन से हुई। इस मौके पर हेडमिस्ट्रेस स्टडी हॉल स्कूल, बानी मल्होत्रा ने बच्चों को व शिक्षकों की कड़ी मेहनत को सराहा। उन्होंने कहा कि बच्चों में वर्तमान में जीने और पूरी तरह से जीवन का आनंद लेने की क्षमता होती है। आज मंच पर छात्र खुद को अभिव्यक्त कर रहे हैं। उनका टीम वर्क और मेहनत हम सभी के लिए प्रेरणा है। वहीं समापन के मौके पर स्टडी हॉल कानपुर रोड ब्रांच की प्रधानाचार्य सुपर्णा चटर्जी और दोस्ती की हेडमिस्ट्रेस तरन्नुम नाहिद खान भी मौजूद रही। दोस्ती स्टडी हॉल एजुकेशनल फाउंडेशन के द्वारा संचालित विशिष्ट बच्चों का स्कूल है। स्टडी हॉल स्कूल के भीतर बसा, दोस्ती उत्तर प्रदेश के पहले और बहुत कम स्कूलों में से एक है, जो 2-21 वर्ष की आयु के बच्चों को मेनस्ट्रीम एजुकेशन में इंटेग्रेट करता है। सभी नन्हे मुन्ने बच्चों ने अपनी प्रस्तुति द्वारा दर्शाया की वे दुनिया अपनी नज़र से देखते हैं उन्होंने दिखा दिया कि संगीत और नृत्य की कोई भाषा या सीमा नहीं होती है। कार्यक्रम में नृत्य, गायन व नौटंकी का समायोजन रहा। दोस्ती स्कूल और स्टडी हॉल स्कूल कानपुर रोड स्कूल ने दो खूबसूरत गानों, एक डांस और एक मैजिक शो से दर्शकों का मन मोह लिया। कार्यक्रम का अंत ग्रैंड फिनाले डांस और स्टडी हॉल गोमती नगर की वाइस प्रिंसिपल मीनाक्षी शाह के द्वारा धन्यवाद के साथ हुआ।

मैकेनिकल मावरिक्स और ऑपरेटिंग एवेंजर्स ने जीत के फाइनल में बनाई जगह

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। मैकेनिकल मावरिक्स और ऑपरेटिंग एवेंजर्स ने एनईआर लखनऊ के इंटर डिपार्टमेंटल फुटसॉल टूर्नामेंट में छठें दिन खेले गए सेमीफाइनल मुकाबलों में जीत के साथ फाइनल में जगह बना ली। पूर्वोत्तर रेलवे लखनऊ मंडल क्रीड़ा संघ के तत्वावधान में एनईआर स्टेडियम, ऐशबाग पर खेले जा रहे टूर्नामेंट में शनिवार को पहले सेमीफाइनल में ऑपरेटिंग एवेंजर्स ने टाईब्रेकर तक खिंचे रोमांचक मुकाबले में कार्मशियल चैलेंजर्स को 4-3 से हराया। यह मैच काफी रोमांचक रहा जिसमें दोनों टीमों ने गोल करने के लिए तेज शॉट खेले। मैच का पहला गोल ऑपरेटिंग एवेंजर्स से अफजल ने 17वें मिनट में दागा। जवाब में कार्मशियल चैलेंजर्स से जीबी सोनकर ने 26वें मिनट में बराबरी का गोल दागा। इसके बाद पूरे मैच में कोई गोल नहीं हो सका और निर्धारित समय में मैच 1-1 से बराबरी पर रहा। टाईब्रेकर में ऑपरेटिंग एवेंजर्स से सुगंध, अफजल व हामिद ने गोल दागे। दूसरी ओर कार्मशियल चैलेंजर्स से राजू व सोनकर ही सफल शॉट खेल सके। पूर्वोत्तर रेलवे लखनऊ मंडल के खेल अधिकारी व प्रवर मंडल वाणिज्य प्रबंधक अंबर प्रताप।सिंह ने बताया कि दूसरा सेमीफाइनल भी काफी।संघर्षपूर्ण रहा। जिसमें मैकेनिकल मावरिक्स ने एक्सट्रा टाइम तक चले मैच में सिक्योरिटी हंटर्स को 1-0 से हराया। मैच में निर्धारित समय में दोनों ही टीमें गोल नहीं कर सकी। इसके बाद निर्णायकों ने मैच का परिणाम जानने के लिए एक्सट्रा टाइम का सहारा लिया जिसमें मैकेनिकल मावरिक्स से प्रशांत ने 51वें मिनट में गोल दागकर टीम को 1-0 से बढ़त दिला दी जो अंत तक कायम रही।

बाल निकुंज इण्टर कालेज में मेधावियों का हुआ सम्मान समारोह

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। बाल निकुंज इण्टर कालेज की मोहिबुल्लापुर स्थित शाखा के सभागार में कक्षा प्ले ग्रुप से कक्षा 05 के कुल 40 सेक्शनों के अर्द्धवार्षिक परीक्षा के टॉप-5 के कुल 200 मेधावी बच्चों के लिये सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। सम्मान समारोह के मुख्य अतिथि प्रोफ़ेसर कमल किशोर बाबा भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय व कालेज प्रबंध निदेशक एच एन जायसवाल द्वारा सभी मेधावी बच्चों को शील्ड प्रशस्ति पत्र एवं उपहार प्रदान कर उनका उत्साहवर्द्धन किया गया। वहीं इस मौके पर बच्चों के साथ उनके माता पिता को भी फूल माला पहनाकर सम्मानित किया गया। कालेज की तरफ से बताया गया कि बच्चों के साथ साथ उनकी कक्षा के कुल 40 कक्षाध्यापिकाओं को उनके उत्कृष्ट कार्य के लिए उपहार प्रदान कर सम्मानित किया गया।

छात्राओं को सशक्त बनाने के लिए आत्मरक्षा कार्यशाला का हुआ आयोजन

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। जैक्सन ग्रुप ने लेट्स गिव होप फाउंडेशन के सहयोग से म्युनिसिपल गर्ल्स इंटर कॉलेज कश्मीरी मोहल्ला में करीब 350 छात्राओं के लिए सक्षम कार्यक्रम के अंतर्गत सशक्त बनाने के लिए आत्मरक्षा कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यक्रम का उद्देश्य लड़कियों में निडरता की भावना पैदा करना और मानसिक शक्ति बढ़ाना था। कार्यशाला में मुख्य अतिथि के रूप में संयुक्ता भाटिया ने कहा कि लड़कियाँ आज हर क्षेत्र में अपना, परिवार का और देश का नाम रोशन कर रही हैं। उन्हें ऐसी सेल्फ डिफेंस ट्रेनिंग के माध्यम से हमें उन्हें स्वयं की सुरक्षा के लिए तैयार करना है। बेटियां घर परिवार के मान सम्मान के लिए बहुत से अत्याचार सहन कर जाती हैं। इसके पीछे उनकी शारीरिक व मानसिक कमजोरी छिपी होती है। जिस दिन बेटियां शिक्षित हो आत्मरक्षा के तरीके सीख लेंगी, उस दिन वह हर अत्याचार का मुंहतोड़ जवाब भी दे सकेंगी। विद्यालय प्रभारी ने बताया कि यह एक अच्छा प्रयास है जिसके माध्यम से हर घर की बेटियां अपनी सुरक्षा स्वयं करेंगी और अवसर पड़ने पर अपने परिवार की भी रक्षा के लिए खड़ी होंगी। टीम ने ट्रेनिंग के संग पैदा होने वाली स्थितियों का हवाला देते हुए ब्लॉक, पंचिंग और किकिंग की तकनीक के गुर और बारीकियां भी समझाईं। प्रशिक्षकों का कहना था कि संकट के समय खुद को बचाने के लिए सीखी गई तकनीकें बालिकाओं में आत्मविश्वास पैदा करती हैं और उन्हें सुरक्षित महसूस कराती हैं। इस अवसर पर सीएसआर जैक्सन ग्रुप के वरिष्ठ प्रबंधक श्रीकुमार अविषेक ने कहा कि जैक्सन हमेशा अपने कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व के हिस्से के रूप में महिला सशक्तिकरण पर कार्य करने के लिए उत्सुक रहा है। लेट्स गिव होप फाउंडेशन ने हमें एक अवसर दिया है, कि हम मिशन आगे ले जाएं और बालिकाओं को सशक्त बनाये। लेट्स गिव होप फाउंडेशन के संस्थापक आशीष मौर्या ने बताया कि यह मिशन ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के हर सरकारी और गैर सरकारी विद्यालयों व महाविद्यालयों में चलता रहेगा। कार्यक्रम में अविषेक कुमार, मुदित कुमार सिंह, हितेंद्र कुमार करण, अनीता सरोज, रूबी यादव, शालिनी कनौजिया, शालिनी सिंह, राशिका, अंबुज, वंशिता, कोमल, कुलदीप सिंह, फजल रिजवी, हिमांशु सिंह, अज़मी हुसैन और शिक्षिकाएं आदि मौजूद रहे।

डॉ शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विवि में हुआ विदाई समारोह का आयोजन

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। डॉ शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय में शुक्रवार को एमएससी माइक्रोबायोलॉजी द्वितीय वर्ष के छात्रों हेतु प्रथम वर्ष के छात्रों द्वारा विदाई समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें द्वितीय वर्ष के छात्रों को उनके व्यक्तित्व एवं प्रतिभा को ध्यान में रखते हुए उन्हें टाइटल्स प्रदान किये गए। इस अवसर पर विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम जैसे एकल नृत्य, संगीत व रैंम्प वॉक इत्यादि भी प्रस्तुत किए गए। विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग एवं ज्ञानवर्धक प्रश्नोत्तरी के परिणामों के आधार पर यशस्वी पांडे और शगुन जायसवाल को मिस्टर और मिस फ़ेयरवेल का सम्मान दिया गया। समारोह में उपस्थित विभाग समन्वयक डॉ दीपक चन्द शर्मा एवं अन्य आचार्यगणों ने छात्रों को जीवनपथ पर अग्रसर होने हेतु उनका मार्गदर्शन करते हुए आर्शीवाद प्रदान किया तथा द्वितीय वर्ष के छात्रों ने विश्वविद्यालय एवं संकाय में अपने सुखद अनुभवों को साझा किया।

चेयरमैन एवं प्रधान सम्पादक - राकेश कुमार पाण्डेय कार्यकारी सम्पादक* - अरशद सईद खान सह सम्पादक* - धर्मेन्द्र कुमार गुप्ता
स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश कुमार पाण्डेय द्वारा सरस्वती प्रिंटर्स वाटर वर्क्स रोड ऐशबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं सी-46, कृष टॉवर, विभूति खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ, पिन-226010 से प्रकाशित। * इस अंक में प्रकाशित सभी समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पीआरबी एक्ट के तहत उत्तरदायी।
समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय क्षेत्र के ही अधीन होंगे। फोन नं। 0522-4249333 फैक्स नं.- 4249333 e-mail : info@kanwhizztimes.com RNI NO - UPHIN/2012/42063